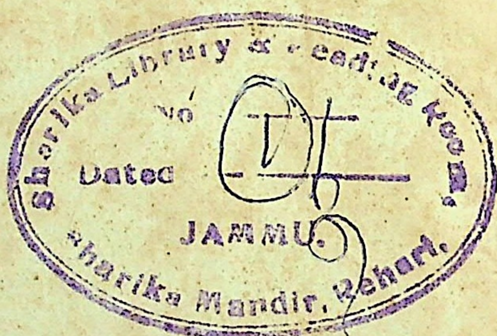

Sharika Library &
No.
Dated
JAMMU.
Sharika Mandir, Behari.

'लाहौरिये'



राजेन्द्र एस० अवतार

प्रिय

‘प्रीति’ और ‘बुलबुल’

और

भारत के युवकों

को भेंट

जिनसे

यह आशा की जा सकती है

कि वे

वे गलतियां

नहीं करेंगे जो हमने गलती से कीं

राजेन्द्र एस० अवतार

लाहौरिये—लाहौर निवासियों की सच्ची कहानी

जिसके सब चरित्र सच्चे हैं

जिसके सब नाम और स्थान झूठे हैं

क्योंकि

लाहौरियों को कानून का पता है

और हमें कानून से भय है

———

लाहौरिये—लाहौर के उन रहने वालों की

उन काले साहब लोगों की

सच्ची कहानी है

जिनकी फिलासफी है

आये जवानी जाये जवानी जाके फिर न आये

चिड़ियों ने चुग लिया खेत जाट खड़ा पछताय।

राजेन्द्र एस० अवतार

श्री अवतार से हिन्दी के पाठक अब अपरिचित नहीं हैं। जिन्होंने उनकी कमला, बलिदान, मूर्ति तथा मनोकामना पढ़ी हैं, वे उनकी गहन अनुभूति, शीलता और बौद्धिक जागरूकता से प्रभावित हुए बिना न रहे होंगे। श्री अवतार हिन्दी के एक उदीयमान लेखक हैं। उनकी लेखनी में जोश है, निडरता है और है सत्य का जाज्वल्यमान प्रकाश। उनका भाषा-सौष्ठव और विचार-गुम्फन मौलिकतापूर्ण है। गहन से गहन घटना को चित्ताकर्षक और सरल बना कर पाठकों के सम्मुख रखने का उनका अपना निराला ढंग है।

मनोकामना और बलिदान का लेखक लाहौरिये में स्पष्टवादी होकर हमारे सम्मुख आता है। लाहौरिये लाहौर निवासियों का सच्चा और अत्यन्त सजीव वर्णन है। इस चित्रण में जो गहराई, घनीभूत पीड़ा और रोचकता है, वह श्री अवतार की अनुभूति एवं सामाजिक जीवन के मनोयोगपूर्ण अध्ययन का फल है।

यह पुस्तक लाहौरियों के लिए ही नहीं, वरन् समस्त भारत के नवयुवकों के लिए जो आर्य संस्कृति को भूल, मृग मरीचिका के फेर में पड़ अपना अस्तित्व खो बैठे हैं, वास्तविक रूप दर्शनार्थ अमूल्य दर्पण है।

मैं श्री अवतार को उनके बहुजनहिताय परिश्रम के लिए नवयुवकों की ओर से धन्यवाद देता हूं।

भगीरथ

प्राक्कथन

'खते लाहौर अर्थात् जन्नते हिन्दूस्तान'—हफीज

लाहौर से मुझे प्रेम है—क्या बच्चा मां की सुखमय गोद में बैठकर भी मां को भूल सकता है। मैंने जीवन के कई वर्ष इस लवपुरी लाहौर में व्यतीत किये हैं। लाहौरियों—लाहौर के निवासियों से मुझे सहानुभूति एवं स्वकीयत्व है।

लाहौर का यही आकर्षण मुझे हजारों मील दूर देश से खींच लाया। मैं अपने लाहौर को न पहचान सका, क्योंकि उसकी—लवपुर की वह शोभनीय आत्मा निराकंकाल छोड़ जो उन्नति की ओर अग्रसर होने के स्थान पर पतनोन्मुख हो रहा था, दूर खड़ी वर्तमान उन्नति का स्वरूप पहचानने का प्रयत्न कर रही थी, जिसमें समाज, उन्नतोन्मुख होने के स्थान पर अधोमुखी हो रहा था।

किसी वस्तु से पूरी जानकारी प्राप्त करने के लिए जिस तरह यह आत्यावश्क है कि प्रारम्भ से उसका विश्लेषण किया जाय क्योंकि कोई वस्तु एक साथ खड़ी नहीं हो जाती। क्रान्ति भी कई वर्ष के अथक परिश्रम और विचारपूर्ण तैयारी के पश्चात् सफल होती है। जब मैंने गौर से देखा तो विदित हुआ कि

जिस परिवर्तन की नींव हमारे समय में रखी गई थी अब उसने धीरे धीरे ऐसा भयंकर रूप धारण कर लिया था कि वह बदशक्लों की तरह अपना भयानक रूप दिखा हमें डरा रहा है।

डरना कायरों का काम है। फिर लाहौरिये...भला वे किस से डरने वाले—बस इसी से हिम्मत होती है कि जो इतनी जल्दी एक तरफ बढ़ सकते हैं वह उसी शीघ्रता से दूसरी तरफ भी चढ़ाई कर सकते हैं। हां, ठीक उस घटना की तरह जो एकबार शिमले की सैर को जाते समय घटित हुई थी, सड़क पर बहुत सी बैलगाड़ियां जा रही थीं गाड़ीवान सो रहे थे। हमने मोटर का हार्न बजाया। पर सुनता कौन? गुस्सा आ गया और मोटर से उतर कर आगे वाली गाड़ी का रुख विपरीत दिशा की ओर बदल दिया। सब गाड़ियां चलती रहीं। अबाध गति से, विपरीत दिशा को। हम हंसे यह सोचकर कि जब गाड़ीवानों की आंखें खुलेंगी वे अपने आप को उसी स्थान के निकट पावेंगे जहां से वे चले थे। पर उन्हें अपने गन्तव्य स्थान पर पहुँचना है। वे थोड़ा बिगड़ेंगे, नाराज होंगे, अपनी लापरवाही को कोसेंगे और फौरन् बिना किसी तरह की हिम्मत छोड़े वास्तविक दिशा की ओर अग्रसर होंगे।

लाहौरिये इसीलिए लिखा गया है कि गलत रास्ते पर जाने वाले सीधे रास्ते पर लग जांय और उल्टा मार्ग दिखाने वालों से सचेत रहें।

लाहौरिये पढ़कर सम्भवतया शुरू में आप लेखक पर बिगड़ने लगें, नाराज हों, परन्तु सत्य प्रारम्भ में कटु ही प्रतीत होता है। मलेरिया ज्वर पीड़ित व्यक्ति कुनैन की मिठास भला चंगा होने पर अनुभव करता है। इस कहानी में कोई भी बात ऐसी नहीं जो लाहौरियों के जीवन में, वास्तविकता में पूर्णरूप से घटित न हुई हो। फिर अकारण क्रोध क्यों—सिर्फ सत्य पढ़, सुन और देखकर—अपना स्वयं का सत्य रूप देखकर, सांच को आंच नहीं।

सुधार का प्रयत्न उसी वस्तु के लिए किया जाता है जिससे प्रेम हो, अपनापन हो, उसी की बुराइयां दूर करके अच्छाइयां बढ़ाई जाती हैं, कभी प्यार से पुचकार कर और कभी डंडे का भय दिखा कर। इसी मिसाल को ध्यान में रखते हुए मैंने लाहौरिये में लाहौरियों को उनका वास्तविक रूप दिखाया है। यदि अपने ही रूप से घृणा हो और घृणा जनित कोध उत्पन्न हो तो पाठक क्षमा करें।

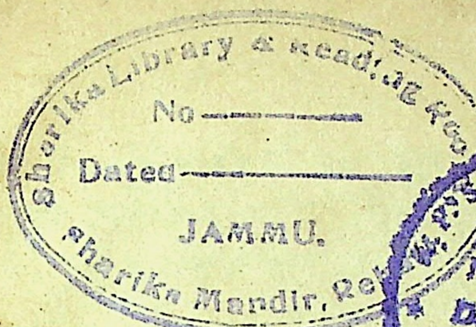
प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि बिगड़ती को बनाए और समाज को वह पथ प्रदर्शित करे जिससे हमारी संस्कृति की उन्नति हो। लाहौरिये तो प्रत्येक जगह अगुआ रहे हैं, फिर यह देर क्यों? उनसे समाज और संस्कृति के सुधार की पूरी आशा की जा सकती है।

अपने मित्रों की अक्षरशः सत्य कथा मैंने अपने मित्रों के लिए लिखा। उन्होंने पढ़ कर सराहना की और उन्हीं के अनुरोध स्वरूप यह आपके सम्मुख प्रस्तुत है।

मैं और मेरे मित्र जिन पर इस पुस्तक की पांडुलिपि तैयार करने का भार था, अपने परिश्रम को सफल समझेंगे, यदि नवयुवक पाठकगण इस सच्चे कथानक को पढ़कर कुछ भी अनुभव प्राप्त करें और अपने सांसारिक जीवन में कुछ भी लाभ उठावें। उसका धन्यवाद ही हमारे परिश्रम का यथेष्ट पुरस्कार होगा।

"मुख्तसिर यह है कि उल्फत है मुझे पंजाब से
खुश हूं मैं पंजाबियों की शोरसो बेताब से।" —हफीज

राजेन्द्र एस० अवतार





चपत

तमाचे की आवज सारे हाल में गूंज उठी । रीटा ने इतने जोर का तमाचा मारा कि उस चटाखे की आवाज हाल के कोने कोने में सुनाई पड़ी और सब नाचने वाले — आदमी और औरतें — सब नाचने वाले बैंड मास्टर और बैंड बजाने वाले — शराब पीने और पिलाने वाले सबके सब हक्के बक्के होकर उधर को देखने लगे, जहां दिन दहाड़े बिना बादलों के सरदार चंचल सिंह के कोमल गाल पर रीटा के गोरे हाथों का वज्र गिरा था । वे बेचारे गाल पर दाहिना हाथ धीरे-धीरे मल कर इस बात की जाँच कर रहे थे — तमाचा पड़ा तो अवश्य पर कितने जोर का ।

अचानक तमाचा खाकर 'पंचकुइयां' के सरदार चंचल सिंह दो घड़ी तो हैरान के हैरान रह गए। उन्हें इस बात का कभी गुमान भी नहीं हो सकता था कि एक दो पैसे की लौंडिया जो हर एक के साथ दो चुल्लू शराब पीकर छाती के साथ छाती लगा कर 'रुम्बा' और 'टेंगों' का नाच करना शुरू कर देती है, वह उनको 'पंचकुइयों' के सरदार साहब को — जिनके पांचों कुएं हर घड़ी

पानी से भरे रहते हैं और जिसके अमृत रस को पीकर रीटा और उसकी सी हजारों तितलियां मस्त होकर उमर भर नाच कर सकती हैं — उन पर — रीटा को हाथ उठाने की हिम्मत होगी ।

भला यह कैसे हो सकता है ।

सरदार जी — शहद की मक्खी को भी डंक होती है, वह जब चाहे डस सकती है । हजारों नजरें उन पर लगी हुई थीं । किसी में घृणा, किसी में खुशी, किसीमें सहानुभूति और बहुतों में मुस्कराहट देख कर चंचल सिंह को दो रास्ते दिखाई दिये । पहले तो अपनी बेइज्जती का बदला । रीटा के गोरे गोरे गुलाबी नर्म गाल पर अपने काले सख्त हाथ पर तमाचा । इससे सब पर उनकी हिम्मत का सिक्का बैठ जायगा । जैसे का तैसा । पर रीटा की डिठाई और उसके साथ कैप्टिन सोमवार की ऊंचाई को देख कर उन्होंने यह भी बेहतर समझा — नारी पर हाथ उठाना पाप है । अगर मनुष्य का कोई नियम ही न हो तो वह मनुष्य कहलाने के योग्य नहीं हो सकता । या यों कह लीजिये कि अंगूर खट्टे हैं ।

चंचल सिंह फौरन ताड़ गये कि वे कितने पानी में हैं और दूसरा ही रास्ता बेहतर समझा । दुम दबा कर भाग जाना । वाह मेरे शेर । पर हमारे शेर ने तो गालिब का वह शेर पढ़ा था । :—

निकलना खुल्द से आदम का सुनते आये हैं लेकिन ।
बहुत बे आबरू होकर तेरे कूचे से हम निकले ।।

किसी समय तो हार मान लेना ही बेहतर होता है। हार मानने में कोई कायरता नहीं पर बिना लड़े हार मान लेना कायरों का ही काम है।

दूसरे साथियों को हाल में छोड़ कर और बिना अपना विहस्की का गिलास खतम किये। वे तेजी के साथ 'हल' की दरवाजे की तरफ बढ़े। उनको भागता देख कर नचने वाले और बालियों ने तालियां बजाई और बैंड के मस्टर ने अपने चाहकों का रूख देखते हुए 'ही वाज ए जाली गुड फैलो' की बेमानी 'टयून' बजा दी।

जैसे ही सरदार चंचल सिंह ने 'ट्यून' के साथ कदम मिलाकर चाल तेज की, कि 'डान्स हाल' के चिकने फर्श पर नये तले के काले चमकीले जूते फिसले और 'पंचकुहयों' के लखपति चारों शाने चित फर्श पर लम् लेट हो गए। अब तो हंसी का रुकना असम्भव था सबने जोर जोर से तालियां बजाई और बहुतों ने अंग्रेजी और थोड़ों ने हिन्दुस्तानी, उर्दू, पंजाबी और बंगाली में आवाजें कसीं। चंचल सिंह जल्दी से उठे और अपना सा मुंह लिए दरवाजे की तरफ कदम संभाल कर बढे। दहलीज में खडे होकर उनको हिम्मत आई। क्यों न आती। उलट कर हाल में नजर डालते हुए उन्होंने जोर से कहा, 'बताऊंगा तुझे एक् दिन, कुतिया'—यह कह कर वे तेजी से कमरे से बाहर हो गए। देखी मेरे शेर की दिलेरी। हार भी गया, फिर भी हार नहीं मानी। अपने कमरे में जाकर अन्दर से चटखनी लगा ली।

आज तक मसूरी के 'ग्रीन होटल' में यहां तक नौबत नहीं पहुंची थी। 'स्कैन्डल्स' तो दिन रात कानों में पड़ते थे। कौनसी रानी आई, किसके साथ नाची। क्यों नाची, कैसी नाची, वह खूसट बुड्ढा राजा फिर नई पतंग कहां से काट कर लाया, वगैरा वगैरा। यह तो मसूरी की रोजाना बातचीत है। पर आज की वारदात को उसकी तारीख में मशहूर निशान बनकर रहेगी। कभी सुनी है ऐसी बात। 'हाल' के अन्दर सैकड़ों महा सज्जनों और शरीफ जादियों के सामने, एक शरीफ औरत ने, एक शरीफ आदमी को सरे मैदान तमाचा मारा। वाह री शराफत।

आपके विचार में यह मशहूर बात नहीं हुई। शायद आप भी प्रेम के बाजार में चपत खा चुके हैं। मुबारिक हो, जनाब अगर गूंगा कभी अपने उस्ताद गामें को भी कुश्ती में हरा देता तो भी वह बात इतनी मशहूर न होती।

सवेरा होते होते-शाम के चार बजे तक तो अवश्य, क्योंकि मसूरी की जनता आज कल (नाइट लाइफ) रात्री जीवन में विश्वास करती है। दो बजे सोना। दुपहर को उठना रात को जागने के लिए-उनकी आंखें खोलते तो यह बात जरूर मशहूर हो जायगी कि 'ग्रीन होटल' में 'राजा साहिब आव तत्ता पानी की धर्मपत्नी श्रीमती रीटा देवी ने पंचकुइयां के सरदार साहिब सरदार चंचल सिंह को थप्पड़ मारा। थप्पड़ मारा, जरा सी बात का इतना बतंगड, पर मसूरी के गप्पी और गप फैलाने वाले तो तुलसीदासजी को नीचा दिखाना चाहते हैं :

एक राम एक रावन्ना,
एक छत्री एक ब्रहमन्ना।
उसने उसकी सिया चुराई,
उसने उससे लड़ी लड़ाई ॥
जरा सी बात का बातन्ना, तुलसीदास ने कर दिया पाथन्ना ॥

अगर कोई महा सज्जन मसूरी के दिलचस्प 'स्कन्डिल्स' की किताब लिखे तो वह अवश्य 'लार्ड बैरन' की अन्य कहानियों को फिका करके रख दे। भावी लेखकों को निवेदन है कि लाहौर के अनारकली बाजार में खाक छानने के बजाय मसूरी के राजा रानियों और उनके रोमांचिक जीवन की कथा लिखें। और किताब का नाम रखें 'पहाड़ों की रानी।'

मसूरी इसी नाम से मशहूर है। पहाड़ों की रानी। नाम तो बिलकुल ठीक रखा है। जैसे थानेदार के लड़के का नाम थाना सिंह और पटाखे बेचने वाले का नाम रुस्मत जी फ्राम जी कड़ाका। नाम हो तो ऐसा ही। नाम तो नत्थु भी होता है। इसके बारे में हिन्दुस्तान के मशहूर उर्दू शायर ने लिखा है :

ना में नहूसत, ना में नत्थू,
पहिले नून, पीछे थू।

पर पहाड़ों की रानी, अहा! कैसा रोमांचक नाम है, क्यों मेरे भावी लेखको है न। रानी, पर एक बात भूल न जाना। एक रानी को बहुत से पहाड़ घेरे हुए हैं—राजे।

राजों को तो हम थोड़ी देर के लिए भूल सकते हैं क्योंकि वे तो हिमालय के पहाड़ों की तरह पुराने हो चुके हैं। या तो वे जीवन का रोमांच खो चुके हैं, या मसूरी में उनकी जो रानी आई हैं उनसे उनका दिल उठ चुका है। अच्छा ही हुआ, वरना मसूरी पहाड़ों की रानी न कहलाती— कहलाती राजों की रानी और हमारे भावी लेखकों को कोई रोमांचक विषय प्राप्त न होता। पर अफसोस तो यह है कि मसूरी के रंगमहल में आने वाली रानियां अपनी टोली बनाकर आती है। ए० डी० सी० और अपने अन्य दोस्तों को लाती हैं और भावी लेखकों की वहां दाल नहीं गल सकती।

पर मैं तो सरदार चंचल सिंह का जिक्र कर रहा था जो चार सौ वीस डिग्री के राजा हैं। ४२० श्री श्री श्री नहीं, बल्कि ताजीरात हिन्द वाले। उनकी बीती सुन कर मसूरी की जनता कुछ दिन तो अवश्य खुशियां मनायेगी, वहां सब खुशियां मनाने ही तो जाते हैं। अगर सिर्फ दिन ही काटने हों तो घर में बीबी बच्चों के साथ रह कर काटे जा सकते हैं। 'ड्रिन्क पार्टी', 'चाय पार्टी' और 'डान्स पार्टियों' की क्या आवश्यकता। पर घर की रानी कब नवी नुकीली तितलियों को बर्दाश्त कर सकती है। जिन्दगी का मजा लेने के लिए मसूरी के तीन चौथाई 'विजिटर्स' अपनी घर-वालियों से झूठा बहाना बनाकर आते हैं। अगर बहाना बनाने की जरूरत हो तो। वरना साफ सफेद झूठ।

उनकी संगत में तो कई दिन इस बात की चर्चा होती रहेगी। वीर पुरुष रीटा की वीरता की तारीफ करेंगे, छः फीट लम्बे तगड़े हट्टे कट्टे आदमी को जब वह कुर्सी पर बैठा हुआ था, चपत मार देना कोई आसन बात नहीं। नहीं मेरी जान तुम कभी ऐसा न करना, कहीं लेने के देने न पड़ जाएं। यह तो सिर्फ दूसरों की बात हो रही थी। वह वीर सज्जन जो अपनी औरतों को घर के जंजाल में छोड़ कर दूसरी औरतों की तारीफ में सच्ची खुशी प्राप्त करते हैं, वे रीटा की वीरता की तारीफ के पुल बांध देंगे, पर 'फैशनेबिल' औरतें कब बर्दाश्त कर सकती हैं कि उनके जोड़ीदार, उनकी पार्टी वाले, उनकी तारीफ, उनके कपड़ों की तारीफ उनकी सुन्दरता की झूठी तारीफ, उनकी हर एक... हर एक चीज की तारीफ करने की वजाय अवारा रीटा की तारीफ किये जायं। यह कैसे हो सकता है। कोई औरत किसी दूसरी औरत की तारीफ नहीं सुन सकती। और फिर जबकी वह औरत दूसरे आदमियों को फंसाने में उनसे ज्यादा कामयाब रही हो। यह फँसा फँसाई की बात खूब रही। औरत विशेष मर्दों के दिलों पर विजय प्राप्त करना चाहती है, और जब विजय प्राप्त कर लेती है, तब उसको ज्ञात होता है कि वह हार गई। बहुत सी हारी हुई मसूरी तितलियां अपनी हार मानने को राजी न होंगी, और वे रीटा को पुकारेंगी 'विल्लो'। कुछ अपने साथ मुकाबला करके शायद उसे

और भी नीचे ढकेल दें। आखिर हर एक मनुष्य दूसरे को अपनी ही नजरों से देखता है। एक पल्ले में अपने चित्र को रखकर दूसरे को तौलता है।

मसूरी की किसी रात की रानी से आप किसी दूसरी स्त्री की तारीफ नहीं सुनेंगे। अगर निकलेगी तो हसद की जलती हुई ज्वाला की एक आह। कितनी सुन्दर साड़ी पहने हुए हैं। शायद वह ब्लाउज लीला राम से बनवाया होगा। शायद कभी वह गलती से उसकी सुन्दरता की तारीफ कर बैठे।

स्त्री अपनी सुन्दरता की तारीफ सुन सकती है, परन्तु आदमी की तरह जो अपने आचरण और अक्ल की बुराई को सहन नहीं कर सकता वह कभी यह सुनना पसन्द नहीं करती कि उसका यौवन किसी दूसरी स्त्री के मुकाबले में कम है। अगर किसी तितली को फंसाना हो तो खूब दिल खोल खोल कर उसकी तारीफ करो। मसूरी के भावी 'विजिटर्स' के लिए तितली पकड़ने का पहला सबक।

'पंचकुइयां' वाले सरदार साहिब तो जानते थे कि कल सवेरा होते होते मसूरी के सारे शहर में उनकी चर्चा फैल जायगी। मसूरी की दुनियां बसती है आर पार के दो बड़े होटलों में और बीचों बीच में है कतारा बाजार। कुछ होटल और कुछ कोठियां 'कैमिल बैक' पर और राम बाग की तरफ भी है पर उनके सब रहने वाले अपना फालतू वक्त, जब कि वे सो न रहे हों, आर पार के दो बड़े होटलों में ही गुजारते हैं।

कभी कभी अगर तब्दीली का दिल किया तो दिल बहलाने के लिए 'रिक्शा' में बैठ कर लंडोर बाजार की तरफ सैर को चल दिये। खरीदने के लिए नहीं सिर्फ देखने के लिए, तमाश बीनी राजे। लंडोर बाजार के एक किनारे पर खड़े होकर इन राजा महाराजाओं को देखिये, जिनके रिक्शा खींचने वाले रंग बिरंगी वर्दियां पहने इस बात का दावा कर रहे हैं, 'देखो – मैं राजा हूं' समझ लीजिये कि वे चंचल सिंह की श्रेणी के राजा हैं। वे काली अचकन झूठे हीरे के बटन; कानों में एक एक मोती यह सब दिखावे के लिए। इन लोगों को झूठा दिखावा देकर जो खुशी प्राप्त होती है वह शायद आपको कभी असलियत में भी प्राप्त न हो।

पकड़े चोर को भी चोरों से डर लगता है। चंचज सिंह अपने सहयोगियों को मुंह दिखाने से डरते थे। अगर इज्जत का ही सवाल होता तो वह अवश्य कडवा घूंट पी ही जाते। प्रेम के बाजार में रूसवा हुआ ही करते हैं। पर इस घटना के बाद उनकी बदनामी हो जावेगी। बद अच्छा बदनाम बुरा। किसी नई तितली को उनके साथ नाचने की इजाजत नहीं मिलेगी। जिस तरह हर बाग में रंग बिरंगी तितलियां होती है उसी तरह मसूरी की 'नाइट लाइफ' की तितलियां कई श्रेणियों में विभक्त की जा सकती है। एक तो वे जो उस बाग में ही रहती है, कई फूलों को सूँघ चुकी हैं, फूल की पहचान और पहिचानने वालों को जानती हैं। दूसरी वे, जो फस चुकी हैं, फंसने के लिए। तीसरी, जो फंसाई

जाती हैं फंसने के लिए। यदि क़िसी और किस्म की तितली का आपको पता हो तो निवेदन है कि उसे लाहौर के दो पत्रा अखबार में छपवा दें। कई होनहार लाहौरियों के काम आयेगा।

चंचल सिंह तीसरी तरह की तितली पकड़ने की फिक्र में थे। ऐसी तितली को वही फंसा सकता है, जो दो को एक साथ, दो अलग अलग किस्म के सब्ज बाग दिखा सके। एक तितली फंसाने के लिए, दूसरा मेरे लाला—उसको फंसाने के लिए जो तितली को लाई है, उसे फंसाने के लिए जिसको वह स्वयं फंसा नहीं सकती। मैंने शुरू में कहा नहीं था कि इस जंजाल नगरी में मत फंसो, यह तो सिर्फ लाहौरियों का ही काम है। यहाँ हम जैसों की दाल नहीं गल सकती। सरदार चंचल सिंह सैकड़ों पापड़ बेल चुके थे। फिर भी उन्हें मुंह की खानी पड़ी। श्रीमान् जी आप कौन से बाग की मूली है।

जब मूली कड़वी लगी तो चंचल सिंह ने उस खेत को छोड़ देना ही उत्तम समझा। जब साथ में नाचने वाली, 'पतली कमर वाली, छोटी मोटी रियासत की कोई खूबसूरत 'प्रिन्सेस' न हो, जिसके सुन्दर शरीर से उड़ती हुई मंद मंद खुशबू मन को मस्ता न दे। जिसकी गुलाबी होठों की मुसकान हृदय की उमंगों में आंदोलन खड़ा न कर दे। जिसकी मीठी मीठी बातें आशाओं को विचार के बादलों में उड़ा न दे। हाय, हाय, तब तक मसूरी की 'नाइट लाइफ'

में कोई 'लाइफ' नहीं हो सकती । अंधेरे में बैठ कर तो मक्खी और मच्छर ही पलंग पर मारे जा सकते हैं।

मसूरी के अंगूर खट्टे देख कर चंचल सिंह ने अपना बोरिया बिस्तर गोल किया और कुलियों के सिर पर सामान उठवा कर रातोरात दुम दबाकर राजपुरे की तरफ भाग दिये । सुना है, होटल के मैनेजर ने और कुछ रिक्शा वालों ने इस पगडंडी पर अपनी चौकी बिठा दी है, क्योंकि बहुत से राजे और कभी कभी महाराजे रात के अंधेरे में बिना पैसे दिये, इसी रास्ते से जान छुड़ा कर भाग जाते थे। यह आखिरी रास्ता भी जाता रहा, जिन्दा रहें मेरे लाहौरिये, कोई न कोई और रास्ता ढूंढ़ निकालेंगे ।

या तो मसूरी के चारो तरफ चौकियां बैठाई जावें, बेहतर तो यह होगा कि राजा रानियों के नाम पर भारी टैक्स लगा दिया और यह रोजाना दोनों होटलों में लंडोर बाजार या जहां कहीं भी ये राजे, रानियां मिलें, जबर्दस्ती इक्ट्ठे किये जावें । देखिये, कितनी जल्दी, मसूरी के राजे मसूरी की सड़कों से गायब होते हैं । कल लाहौर के अखबारों में यह खबर छपी थी कि लाला केदार नाथ सहगल जो लाहौर के रहने वाले नहीं हैं, ऐसा ही एक रेजूलेशन म्यूनीसिपैल्टी में पेश करेंगे । पर अखबार के एडीटर, गोपाल कृष्ण सहगल जो लाहौरिये हैं, वे छाती ठोक कर कहते हैं कि यह रेजूलेशन कभी पाश नहीं होगा, क्योंकि बिना इन राजों के मसूरी पहाड़ की रानी नहीं रह सकती ।

रहे न रहे, पर चंचल सिंह तो उस 'सीजन' के लिये तलाक देकर चले गए। अगले साल आयेंगे, सब 'ग्रीन होटल' की बात भूल जायेंगे और फिर अपना जाल मसूरी के होटलों में फैला देंगे।'

बेहतर ही ही हुआ कि चंचल सिंह रात को होटल छोड़ कर चले गये, वरना सिर का एक बाल भी बाकी न रहता। जैसे ही 'डान्स' खत्म हुआ रीटा अपने जोड़ीदार कैप्टिन सोमवार को अपने कमरे में ले गई और जोर जोर से रोने लगी।

सोमवार ने गालों के आंसुओं को बड़े प्रेम पूर्वक हाथों से पोछते हुए और 'काकटेल' का गिलास रीटा के छोटे छोटे गोरे गोरे हाथों में देते हुए बहुत धीरे धीरे दुख भरे लहजे में कहा— 'डार्लिंग, मुझे बताओ बात क्या है।'

सुन्दरता और चतुरता से पूर्ण रीटा जानती थी कि 'काक-टेल' का अभी पूरा असर नहीं हुआ। सोमवार भी आने वाले तूफान को थोड़ा थोड़ा भाप गये थे और इससे पहले कि, शराब की घटा उसकी चपलता को घेर ले, वह रीटा के सुन्दर शरीर को अपने काबू में कर लेना चाहता था। इतनी सफलता के बाद भी फंसा हुआ शिकार उंगलियों के बीच से निकल जाय तो उनकी फौजी शिक्षा को धिक्कार।

उन्होंने निश्चय कर लिया था कि आज रात को वे खाली हाथ नहीं जावेंगे। उसके पीछे भौंरे की तरह चक्कर लगा लगा कर छुट्टी के दो महीने बिगाड़ दिये और चार महीने

की पेशगी तनख्वाह बनिये से लेकर उड़ा दी। फिर भी अगर रीटा कोरी निकल जाए तो उनको मूंछ मुंडा लेनी चाहिए। जब कैप्टिन सोमबार ने शराब से गिली उंगली ऊपर की के होठ पर फेरी तब उन्हें पता चला कि कभी मूँछ को उगने की इजाजत ही नहीं दी गई थी।

शराब से मस्त आँखें, रीटा को साफ साफ बता रही थीं कि वे किस शिकार की फिकर में हैं। सोमवार के हृदय में वासना की ज्वाला भड़क रही थी। शराब का तेल उस धधकती ज्वाला को और भी भड़का रहा था।

'डार्लिंग तुम मुझे बताओ कि आखिर बात क्या है।' रीटा को दोनों बाहों के घेरे में करीब करीब लेते हुए, सोमवार ने फिर पूछा।

फंदे में से रीटा की सांस लेने के लिए थोड़ी सी जगह रह गई थी। वह भी बंद हुआ ही चाहती थी। रीटा ने थोड़ा सा एक बगल सरकते हुए कहा—'तुम मुझ से प्रेम नहीं करते।'

सोमवार को यह घाव बहुत गहरा लगा। 'तुम बहुत कठोर हो रीटा', उन्होंने गिटपिट जबान में कहा। 'देखो, मैंने तुम्हारे लिए क्या क्या नहीं किया। रीटा, डार्लिंग मैं तुम्हारे लिए सब कुछ करने को तैयार हुँ। मैं तुम्हारे लिए............

'वह तो सब ठीक है। कैप्टिन सोमवार भूलो नहीं मैं भी शादी शुदा हूँ और तुम से प्रेम कर रही हूँ।

'प्रेम और शादी—दो अलग अलग स्थितियां हैं । हम बिना शादी के प्रेम कर सकते हैं और बिना प्रेम के शादी। शादी से पहले हम प्रेम करते हैं शादी करने के लिए और करने के बाद प्रेम करते हैं उसे तोड़ने के लिए । अगर दुनियाँ में प्रेम ही प्रेम हो, तुम हो और तुम्हारा प्रेम हो रीटा, तब सच्चा सुखी जीवन कहला सकता है । बिना प्रेम के जीवन में कोई सुख नहीं । मैं तो हर समय एक ही स्वप्न देखा करता हूं ।

गलमर्ग के पहाड़ों में हम दोनों कमर………रीटा की पतली कमर को अपने हाथों के घेरे में लेना चाहा ।

अजदहे के फंदे से थोड़ा सा बिचकते हुए रीटा ने कहा—'किसी और शिकार को देख कर शायद मुझे जंगल में और जंगली जानवरों के सुपुर्द कर आओ ।'

शर्म नहीं आती मेरी जान । तुम मेरे प्रेम को इतना ओछा और मुझे इतना नीच समझती हो । मैं तुम्हारे लिए सब कुछ कर सकता हूँ डार्लिंग । तुम एक दफा आँख का इशारा तो करो ।'

'बहुत डींग मारते हो सोमवार । कर धर कुछ नहीं सकते । अगर आज मेरा कोई और जोड़ीदार होता तो……'

सोमवार का खून खौलने लगा । 'डार्लिंग, मैंने सचमुच कुछ नहीं सुना था ।'

'अगर सुनते भी तो क्या करते ।' जरा ताना मारते हुए रीटा ने कहा।

'गर्दन मरोड़ कर रख देता। जाट हूं जाट। जाट का खून गर्म होता है।'

उस समय शायद बरफा गया था।

मैं क्या करता। तुम ने तो उस समय इतनी जोर का तमाचा मारा कि सर्दार जी को छटी का दूध याद आ गया होगा।

डार्लिंग बोल क्या हुई थी।'

क्या तुम्हारे कान बन्द थे।"

'नहीं जान, मैं तो तुम्हारे हुस्न की शराब पी रहा था। तुम्हारे यौवन के जादू ने मुझे सकता बना दिया था। और तुम्हारे प्रेम के सिवा दुनियां की और किसी बात की खबर ही न थी।'

'ओहो प्रेम में अन्धे हो रहे थे।'

'तुम्हारा सौन्दर्य देखकर कौन अंधा न होगा......'

झूठी तारीफ सुनकर भी रीटा ने घमंड से जरा गर्दन ऊपर उठाई और प्यार से छोटी सी चपत मारते हुए उसने चपलता से कहा। 'झूठे कहीं के।'

हाय प्यार की चपत।

इस चपत से वह जो दो चार घंटे पहिले चचंल के मुंह पर पड़ी थी, मार खाने वालो के दिलों में तो अवश्य विशेष अंतर रखती थी, परन्तु रीटा तो चपत की भाषा में दोनों हुस्न के पुजारियों को एक ही सबक सिखा रही थी, प्रेम के पागल धिक्कार तुम्हारी बुद्धि पर।

शराब की चमकीली चादर बुद्धि के अधखुले दर्वाजे पर एक मोटा पर्दा डाल देती है और बची बचाई अक्ल को भी बाहर झांकने का मौका नहीं मिलता। उसी चमकीली शराब के नशे की उड़ान में चंचल सिंह की छोटी सी बुद्धि दूर देश विदेश की हवा खाने चली गई थी। नशे में मस्त बैंड की जोशीली तान के साथ वे रीटा के सुडोल शरीर को अपनी छाती के साथ दबा कर 'ग्रीन होटल' के 'बाथ रूम' के दो चार चक्कर लगाना चाहते थे। शराब अक्ल तो रफू कर देती है पर हिम्मत अवश्य बढ़ा देती है। सबसे बड़े वीर, सबसे बड़े बुद्धू होते हैं। उन्होंने रीटा से अगले नाच के लिए पूछा। वह पंचकुइयां के सरदार साहिब को अच्छी तरह अन्दर बाहर तक जानती थी। एक दफा का चोट खाया, चौकन्ना हो जाता है और जल्दी काबू में नहीं आता। रीटा में दर्खास्त नामंजूर कर दी।

वैसे चंचल सिंह बुरा न मानते पर उनकी टेबुल पर सब नये साथी बैठे थे और उन्होंने उन पर रौब डालने के लिए रीटा से यह दर्खास्त की थी। वे झेंप कर बैठ गये। एक दफा जब रीटा पास से गुजर रही थी उसने साथियों को सुनाते हुए—जिसे रीटा ने भी सुना-कहा: 'सौ चूहे खाकर ... ' मुड़ कर रीटा ने वह चपत लगायी कि चंचल सिंह अगली पिछली सब भूल गए।

सोमवार अब जोश से बेताब हो रहा था। 'व्हाइट लेडी' और दस बारह तरह की अन्य काकेटल पेट में एक दूसरे से

मिल कर बड़ा ऊधम मचा रही थी। उधर उस धीमी धीमी गुलाबी रोशनी में रीटा का सौन्दर्य......वह गोरा जिस्म गोल गोल नंगी बाहें। छोटे छोटे गुलाबी हाथ, पतली उंगलियों के आगे लम्बे लम्बे लाल नाखून, सुराहीदार गर्दन, जिस्म से चिपकी हुई डिनर फ्राक जिसके अन्दर से रीटा के सुडौल जिस्म की छुपी हुई गहराई और ऊंचाई अपने असली रूप में प्रगट होने की भरजोर कोशिश कर रही थी, सोमवार के मानसिक समुद्र में कामनाओं का तूफ़ान उठा रही थी। आचरण की खोखली नैया डगमगाने लगी। वे सोफे में थोड़ा सा और रीटा की तरफ खिसके। हाथ फैला रीटा को छाती से लगाने का प्रयत्न करते हुए उन्होंने कहा : 'डार्लिंग'

रीटा ने अपना सिर इस तरह सोमवार के कंधे पर रख दिया जिस तरह एक अबला शरण चाहती हो। पर जब सोमवार ने गर्दन मोड़ कर उन लाल लाल रसभरे होठों का अमृत रस पीना चाहा तो रीटा ने चटक कर उठते हुए कहा। 'तुम्हारी इतनी जुर्रत।'

बेचारा सोमवार सुन्न रह गया। कुछ देर तक तो उसकी जबान पर कोई शब्द नहीं आया और वह शिर लटकाये काक़टेल के खाली गिलास की तरफ देखता रहा। कुछ देर कमरे में खामोशी रही। उस खामोशी में सोमवार ने सब हालत को जांचा। वह ताड़ गया—अभी नहीं तो कभी नहीं। उसने आगे बढ़ कर रीटा को पकड़ना चाहा पर शराब अपना वार कर चुकी थी। टांगें लड़खड़ा रही थीं और रीटा अपने दिल में अपना दाम ठहरा चुकी थी।

'डार्लिंग, मुझे जिन्दा मत मारो, मैं तुमसे सच्चा प्रेम करता हूं, क्या तुम्हें मेरे प्रेम पर इतना भी विश्वास नहीं—मैं ने तुम्हारे प्रेम की खातिर बाल बच्चों, घर और बीवी सबको छोड़ दिया, फिर भी तुम मुझसे प्रेम·········'

'सोमवार, मैंने कायर से प्रेम करना नहीं सीखा।'

'मैं कायर—मुझे कायर कौन कहता है।'

'जो औरत की इज्जत को बचाने के लिए हाथ न उठाए।'

तुम डार्लिंग ... तुम मुझे हुक्म दो......एक दफा कहो··· फिर देखो ... '

'उस पाजी ने मुझे कुतिया कहा था।'

'बस इतनी सी बात। खोदा पाहाड़ और निकाला चूहा।'

'तो मैं कुतिया हूं। तुम्हारा मतलब मैं कुतिया हूं। तुम जानते हो कुतिया किसे कहते हैं—कुतिया को जानते हुए भी, तुम मुझे कुतिया कहते हो ·······'

'मैं और अपनी जान को कुतिया कहूं ? तुम्हारी तो कुतिया ही मेरे लिए रीटा......'

'बातों के डोरे डाल मुझे चकमा देने की कोशिश मत करो सोमवार।'

'उस बदमाश ने तुम्हें कुतिया कहा। देखो मै कल कैसा मजा चखाता हूँ।

'कल की बात कल पर, रात को मुझे कैसे चैन पड़ेगी।'

'मुझे पहिले बताया होता। मैं राजा साहिब का उसी जगह कचूमर निकाल देता।'

'जब तक वह इस होटल में हैं, मैं तुम से प्रेम नहीं कर सकती।' फिर बहाना करते हुए रीटा ने कहा : 'डार्लिंग तुम उसको यहां से निकाल दो।'

रीटा के मुंह से डार्लिंग का लफ्ज़ सुन कर सोमवार का राजस्थानी खून खौला और उसने पूछा 'कहां रहता है वह बदमाश'।

'तीन कमरे छोड़ कर दूसरी लाइन में'। रीटा ने रोते हुए कहा।

'तुम क्यों रोती हो ? रोएं तुम्हारे दुश्मन। मैं उसे अभी होटल से निकाल कर आता हूं। यह कह सोमवार अपने काले कोट के बटन बन्द करने की कोशिश करते, जाती दफा कह गए, 'डार्लिंग मैं अभी आता हूं। दर्वाजा बन्द न करना ? जैसे ही उसने दर्वाजे के बाहर कदम रखा, रीटा ने अंदर से दर्वाजा बन्द कर, थोडा सा मुस्करा, पलंग पर लेटते हुए कहा 'स्टूपिड'।



पंचकुइयां

'पंचकुइयां' के सरदार चंचल सिंह के पिता सरदार बहादुर लछमन सिंह, नहर के महकमें में बड़े साहब थे। नौकरी के दौरान में आठ दस लाख की जायदाद इकट्ठी कर ली थी। कर तो और भी लेते पर रिश्वत लेने के जुर्म में बरखवास्त कर दिये गये। सम्पत्ति, जायदाद और सरदार साहिबो पर कोई धब्बा नहीं लगा। लगता भी कैसे—अगर उनके खिलाफ कार्रवाई की जाती तो सारे नहरी महकमे में बहुत से बड़े साहबों की पोल खुल जाती। दुनियां को अपना काला मुंह दिखाकर हंसाने से क्या फायदा? उसे सफेद चादर के अंदर ही छिपा कर रखना चाहिए। बहुत कम यह जानने की कोशिश करेंगे कि उसके पीछे क्या छिपा हुआ है।

नहर के महकमे में रिश्वत का लेना और देना वाजिब माना जाता है। बड़े साहिब के लिए ५) फी सदी बंधा हुआ है। मुनाफे पर नहीं लागत पर। हिसाब लगा लीजिये कि अगर चार लाख का ठेका हुआ तो बड़े साहिब की जेब में कितना जायगा। अगर ५ फी सदी बड़े साहिब को दिया गया तो बड़े से बड़े साहिब और उस से बड़े साहिब को, यह तो चक्रवृद्धि व्याज हो गया।

छोटों को भी देना पड़ता है। यदि उनको न दो तो वे ठेकेदार की नाक में दम कर दें। इतना चढ़ावा देने के बाद भी ठेकेदार सैकड़ों, हजारों, लाखों कमाते हैं। लक्ष्मी उन्हीं पर कृपादृष्टि करती हैं जो उन पर भेंट चढ़ाए। तो क्या हमारे उच्च अधिकारी अपने आप को रिश्वत की देवी समझते हैं ?

रिश्वत का लेना-देना एक बडा गहरा रहस्य है। सबसे पहले बड़े साहिब, छोटे साहिब से नये काम का 'एस्टीमेट' बनवाते हैं। जब वह 'पास' हो जाता है तो उसे टैंडर के द्वारा या अपनी शिनाख्त के अनुसार ठेकेदार को दिया जाता है। कोई तरीका भी प्रयोग में लाया जावे। हमेशा काम अपने ही नियुक्त किये हुए ठेकेदार को मिलता है, उससे पहिले ही पत्ती बंधी होती है। और यह हिस्सा नक्दी नक्द पेशगी लिया जाता है।

ठेकेदार चढ़ावा देना बुरा नहीं समझते बल्कि बहुत हद तक तो यह भी कहा जा सकता है कि वे रिश्वती अफ़सर पसन्द करते हैं जो पैसा लेकर काम चलने दें। अगर अफ़सर रिश्वती न हो तो वह काम ठीक जांच से लेगा। लोहे के बजाय लकड़ी की कीलें न गाड़ने देगा, ठोकेगा और तुड़वायेगा फिर बनाने में ठेकेदार के दुगने रुपये लग जांयगे। झंझट अलग की। रुपया दिया और उल्लू सीधा किया।

बहुते से रिश्वती अफ़सर ऐसे होते हैं जो पैसा लेकर भी काम नहीं करते। उनके लिए ठेकेदारों को और चाल चलनी

पड़ती है। थोड़ी सी ज्यादा रिश्वत देकर ऊपर के अफसर को फंसाना। ऐसी हालत में बड़े साहब और ठेकेदार में अनबन हो जाती है। दोनों एक दूसरे का गला काटने को तैयार रहते हैं। जिसकी गर्दन पहिले नीचे आई, उसी पर छुरा चला।

एक दफा सरदार बहादुर थोड़ा सा चूक गये नहर बन्दी का ३ लाख का काम उन्होंने अपने ठेकेदार को दिया था पर किसी वजह से वह दस हजार की दूसरी किश्त देने से मुकर गया। काम अक्टूबर में खतम होना था। जब जुलाई में वर्षा हुई तो ठेकेदार की बनो बनाई बांधों पर पानी फिर गया। ऐसा मौका सरदार साहिब कब हाथ से जाने देते थे ? ठेकेदार को बुलाकर खूब दुम मरोड़ी। 'बच्चा जी, अक्टूबर तक काम खतम न हुआ तो दो लाख का जुर्माना होगा। नहीं तो मालूम है, कहां की हवा खानी पड़ेगी ?'

रात को दुगल साहिब – ठेकेदार का नाम—बीस हजार की थैली ले आये। रिश्वत लेने से पहिले पक्के रिश्वती इस बात का पक्का यकीन कर लेते हैं कि उसमें किसी बात का धोखा तो नहीं है। कई तरीके हैं, पर अगर रिश्वत को घर में लेने की हिमाकत की जावे तो सबसे पक्का तरीका यह है– टेलीफोन सामने तैयार रखो, नोटों को जांच जांच कर लो, बदलने के लिए नोट दूसरे कमरे में तैयार रखो, अगर जरा सा भी शक हो, तो फौरन टेलीफोन कर दो और रिश्वत देने वाले को हथकड़ी लगा दो, इसे कहते हैं लाहिरिये :

मियां की जूती, मियां के सर

बीस हजार से अपनी जेब गरम कर सरदार साहिब रातों रात अपने बड़े साहिब के पास गये। दूसरे दिन उन्हें नहर के टूट जाने की कथा सुनाई और एक लाख का नया 'इस्टीमेट' पास करवाकर ले आये उसमें से पांच हजार फिर उनका। चौबीस घंटे के बीच पच्चीस हजार रुपया, इसे कहते हैं रिश्वत लेना। मारो हाथ तो मोटे आसामी पर। छोटे छोटे हिमातड साथियों की हड्डियां निचोड़ने से क्या मिलेगा।

एक जगह सरदार बहादुर भूल कर गये। बेलदार को २० की जगह सिर्फ १० रु० दिये और उसने बयान दे दिया कि रात को पास के नाले का पानी बन्ध बनाकर रोक दिया गया था और जब ठेकेदार के आदमी सो रहे थे उसे तोड़ दिया गया। काम बनाने वालों को काम बिगाड़ने वाला कहा जावे तो बेहतर होगा।

सरकारी महकमों में किसी काम को जिसे एक आदमी कर सकता है, करने के लिए दो आदमी चाहिए और तीसरा यह देखने के लिए कि वे काम करते हैं कि नहीं।

भावी लेखकों को कभी रिश्वत की समस्या पर टिचकर नहीं करना चाहिए। हमारे देश में अब रिश्वत बुरा नहीं समझा जाता। बल्कि वह हमारे जीवन की दूसरी प्रवृत्ति बन गई है। नियम के नीचे शिर झुकाना सरकारी हुक्म है। कानून न मानने वाले के लिए हमेशा हवालात में जगह खाली रहती है। सबसे अच्छा नियम है—आंख, मुंह और कान को बन्द कर रखो। सुनते हुए सुनो नहीं। देखते हुए देखो नहीं और यदि कहने को दिल करे तो जबान पर ताला लगा लो।

रिश्वत से हमारा क्या बिगड़ता है—पैसे जाते हैं ठेकेदारों के जेब से, हमारी एंठ तो कोई नहीं खोसता। ठेकेदार के सिवाय ठेकेदारों से और कौन सहानुभूति कर सकता है, पर अगर हमको सोचने की इजाजत दी जावे तो यह फौरन प्रकट हो जावेगा कि ये रिश्वत के रुपये ठेकेदार की जेब से नहीं, बल्कि हम और हमारे जैसे हजारों बेवकूफों की जेब से जाते हैं, जो अपनी जेब काटती हुई भी देखकर, जेब काटने वाले का हाथ नहीं पकड़ सकते।

सरकारी खजाने में रूपया गरीबों के पसीने की कमाई का जाता है। अगर रिश्वतखोरी न हो तो चार लाख की बजाय वह काम दो लाख में हो सके। पर सज्जनो—इतने निर्दय मत बनो, अगर रिश्वत का रिवाज उठा दिया जावे तो हमारे ठेकेदार लखपति कैसे बनें और हमारे साहिब लोग 'माडल टाउन' और नहर के किनारे अपनी बीवी के नाम कोठियां कैसे बनाएं या पेंशन लेकर 'पार्लियामेंट' में अपनी 'सीट' कैसे खरीदें।

दूसरों की बात छोड़िए, सरदार बहादुर ने मुस्तफी होने के पहले पंचकुइयां के मुकाम पर एक आलीशान बंगला ठेकेदार से सरकारी माल लगवा कर बनवा लिया था। उसमें ही उनके लाड़ले सुपुत्र चंचल सिंह और उनके बाद दूसरे कुपुत्र बचित्र सिंह दस साल के बाद पैदा हुए।

छोटे साहिब बचित्र सिंह अभी एम० ए० में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे कि पिता का देहान्त हो गया और वे

बिना वसीयत लिखे 'हार्ट फेल' हो जाने के कारण नर्क सिधार गए।

ईश्वर उनकी आत्मा को अशान्त रखे।

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः

उस रिश्वत की कमाई हुई दौलत से सरदार बहादुर ने दोनों पुत्रों को अच्छी से अच्छी शिक्षा देने की कभी ठानी थी। कालेज में जाकर चंचल सिंह ने पहले तो बहुत से रोमांटिक नावेल पढ़े, उसके बाद दिलचस्प कर्लाक गेबल और मेरी पिक फोर्ड के दिलचस्प चित्रपटों को देख कर अपनी अभिलाषाओं को जागृत किया।

उनकी सबसे बड़ी अभिलाषा यह थी कि किसी तरह वे बड़े राजा के रूप में एक पारिस्तान जायें और अपने पिता के रुपये और अपने रूप से बहुत सी परियों को आकर्षित कर लें।

तितलियां क्या चाहती हैं, सुन्दर-सुन्दर फूल, जिसका रस वे चूस सकें। अलबेली नारियां क्या चाहती है अमीर पुरुष, जिसका खून वे चूस सकें। कहना तो उन्हें जोंक चाहिए पर लाहौरियों ने हमारी खूबसूरत 'ब्यूटीज' को तितली कहना ही उपयुक्त समझा। तितली ही रहने दीजिये।

जब तक पिता जीवित थे, अभिलाषाओं की उड़ान विचार गगन में ही पूर्ण हो सकती थी। उसका मानुषिक रूप में अनुभव करना असम्भव था। परन्तु यह अभिलाषा पक्का रूप धारण कर चुकी थी और लाड़ले लाल जिनको सरदार

बहादुर ने गलती से इस दुनिया में जन्म दिया था, वे रात दिन यही प्रार्थना करते थे, 'हे ईश्वर इस बुड्ढे को जल्द से जल्द दफा करो। कंजूस रुपये को किस तरह दबा कर बैठा है। हे भगवान! यह दौलत मेरे हाथ लगे तो मैं उसका उपयोग करूं। खूब गुलछर्रे उड़ा कर दिखाऊं।'

पिता ने रुपया बड़ी मुश्किल से कमाया था। रिश्वत का रुपया सब मुश्किल से कमाते हैं, बल्कि यों कहना बेहतर होगा कि रिश्वती मन में अनुभव करते हैं कि रिश्वत का कमाया हुआ रुपया संभाला नहीं जा सकता। सरदार बहादुर इसीलिए अपने रुपये को हवा नहीं लगने देते थे। रुपया जब तक बैंक में रहे तब तक ही रुपया कहला सकता है, इसलिए लड़के की पढ़ाई-लिखाई में रुपया लगाना बेसूद का रुपया लगाना है। जहाँ से मूलधन के वापस आने की भी आशा नहीं होती। बनिया भी आसामी को देख कर रुपया देता है। सरदार चंचल सिंह को देख कर कौन कह सकता था :

हरे हरे बिरवा के चिकने चिकने पात।

चंचल सिंह सिर्फ प्रार्थना ही नहीं करते थे, जब तक उनकी प्रार्थना स्वीकार न हो वे हाथ मारने में कमी न करते थे। आखिर सरदार बहादुर के ही सुपुत्र तो थे।

बाप पर पूत, पिता पर घोड़ा,
बहुत नहीं तो थोड़ा थोड़ा॥

पिता को उल्लू बना कर रुपया लेना टेढ़ी खीर थी। एक सीधे-सादे बाप को चकमा देना आसान वात है। जब कभी हरिपाल को रुपया की जरुरत पड़ती तो फौरन पिता को तार दे देता— 'सौ रुपया फौरन भेजो ब्लाटिंग चाहिए।'

गांव में पूज्य पिता जी बेपढ़े से तार पढ़वाते और सब गांव वालों को घेर कर गौरव से सुनाते – 'देखा मेरे होनहार बेटे को—विलायत से बिल्ली की टांग मंगवा रहा रहा है—डाक्टर बनेगा डाक्टर।'

यह तो सब लड़के अच्छी तरह जानते हैं कि सीधी साधी मां का हृदय बहुत दयालु होता है और उनसे गपशप मार कर रुपया ऐंठ लेना बांयें हाथ का खेल है और सबसे बेहतर चाल तो चंचल सिंह की थी, दोनों पर हाथ फेरो।

कालेज की फीस अब पिता जी सीधे कालेज में भेज देते थे। अब चंचल सिंह के अड्डे नहीं चढ़ती थी। यदि होनहार के हाथ लगती तो यार दोस्तों के खाने खिलाने में या एक दिन में दो दो, तीन तीन सिनेमा देखने में सर्फ हो जाती और रात को जेब कट जाने का बहाना बनाकर उतना ही फिर मां से वसूल कर लेते। दो दफा तो उसने यही किया, जब पिता के कान में पड़ी तो उन्होंने फीस का हाथ में देना तो दूर पांच रुपया माहवार जेबखर्च भी बन्द कर दिया। उन्हें यह खबर नहीं थी कि मां की तरफ से चंचल सिंह के नाम २० रुपया माह लगा हुआ है, घर का भेदी लंका ढ़ाये।

कभी-कभी जब सरकार बहादुर की निगाह अपने होनहार कपूतों पर पड़ती तो उन्हें कुछ दुख होता तुरन्त अपनी बीती याद आती, वे कितने परिश्रम से बड़े साहब बने थे। इधर इन लड़कों को देखो, पैसे को कुछ समझते ही नहीं। पानी की तरह बहाते हैं। इन्हें क्या पता कि पैसा कौड़ी-कौड़ी करके जोड़ा जाता हैं। दाना दाना शोद अम्बार।

अब वे डर रहे थे, उनका मानचरित्र उनको दिखा रहा था, 'देखो तुम्हारी गाढ़े पसीने की कमाई ये दोनों लड़के बड़ी बेरहमी से बर्बाद करेंगे और तुम उसे अपनी आंखों के सामने लुटती देख कर भी बचा न सकोगे। हा-हा-हा कल जिस दौलत का घमंड करते थे, वह दौलत आज तुम्हारे हाथों से निकली जा रही है। तुमने वह रिश्वत का रुपया किस लिए जमा किया। इतनी खाक छानी, हजारों गरीबों का पेट काटा। इन लड़कों के लिए, जो आज तुम्हारे मर जाने की दुवा कर रहे हैं।'

'उन्हें तुम्हारी परवाह नहीं। तुम्हारी दौलत की परवाह है।

'सोचो क्या कभी इस रुपए ने तुम्हें सच्ची खुशी दी। तुम्हारे परिवार को खुश रखा तुम्हारे मन और हृदय को शांति दी — सोचो। उस कमाई का लाभ तुम्हे क्या मिला।'

दम तोड़ने तक भी सरदार साहिब हार मानने को तैयार न थे। वे हर समय यही सोचते रहते कि उनके लड़के

उनकी जायदाद को नष्ट न करें। पर सरदार साहिब...

अब पछताए होत क्या जब चिड़ियां चुग गई खेत ?

अगर हमारे रिश्वत खोर यह जान जायं कि पाप की कमाई आत्मिक, मानसिक और पारिवारिक खुशी नहीं दे सकती तो शायद वे रिश्वत न लें — शायद ....।

जब मनुष्य पाप करता है, वह पाप को पाप नहीं समझता, या यह समझता है कि पाप को समझने वाला उसके पाप को देख नहीं रहा है। जब गवाह नहीं होंगे तो कौन सी कचहरी में उनका जुर्म साबित हो सकता है ?

मनुष्य का सबसे बड़ा न्यायकर्ता उसकी अपनी आत्मा है।

कई अपने चरित्र को इतना नीचे गिरा लेते हैं कि यदि वे पाप को छोड़ना भी चाहें तो छोड़ नहीं सकते। वे अपने चरित्र के गुलाम बन जाते हैं। पाप में गर्व करते हैं। दूसरों को दिखाते हैं— 'देखो, मैंने तीन साल की नौकरी में तीन लाख रुपया कमाया और एक तुम हो बुद्धु ठनठन् गोपाल रह गये।' वे खुद गिरते हैं और दूसरों की कामनाओं को भड़का कर दूसरों को गलत रास्ते पर जाने का उपदेश देते हैं! रिश्वत लेना पाप है :

'वाह जी वाह, यह खूब कही यदि तुम न लोगे तो कोई और ले लेगा। यदि और ले तो तुम क्यों न लो।

'पर। पर, मुझे नौकरी.....'

'रहे तुम उल्लू के उल्लू ही—भला मुझे यह तो बताओ कि आया तुम अपनी तनख्वाह में गुजारा कर सकते हो या नहीं ?' 'चादर देख कर पैर पसारने चाहिए।'

'सुनी तो मैंने भी बहुत सी बातें हैं, यदि लम्बे पैर पसारना चाहो तो चादर को लम्बा कराना आवश्यक है। रिश्वत के सिवा और कोई दूसरा चारा नहीं।'

'हां, हां, अगर सरकार चाहती है कि हम रिश्वत न लें तो हमें पदवी के उपयुक्त तनख्वाह देनी चाहिए।'

अगर यह दलील ठीक हो तो मोटी मोटी तनख्वाह लेने वाले कभी रिश्वत न लें। जब आदमी रिश्वत लेता है तो अपने जमीर को धोखा देता है कि मैं अपनी आवश्यताओं को पूर्ण करने के लिए थोड़ी सी ले रहा हूँ। बाद में रिश्वत ली जाती हैं रिश्वत लेने के लिए।

रिश्वत बन्द करने का एक ही उपाय है जो रिश्वती पकड़ा जाए उसके पैर बांध चौराहे में उल्टा लटका दिया जाय। पर रिश्वतखोर को पकड़नें के लिएं वे आदमी चाहिएं जो स्वयं रिश्वती न हों।

यंह जरा कठिन समस्या मालूम पड़ती है, अगर थोड़ी सी नजर ऊपर दौड़ाई जावे तो लाहौरियों को फौरन मालूम हो सकता है कि रिश्वत का खाका ऊपर से शुरू होता है। ऊंची श्रेणी बाले साफ निकल जाते हैं क्योंकि कोई उन पर हाथ लगाने की हिम्मत नहीं कर 'सकता। छोटे मोटे रिश्वत लेने वाले आसानी से शिकंजे में आ जाते हैं। इसीलिए सरदार बहादुर आठ लाख की जायदाद लेकर साफ बच गये और पंचकुइयां में खुशी से जीवन बिताने की कोशिश करने लगे।

चंडाल चौकड़ी

कालेज में भर्ती होने के कुछ ही दिन बाद, चंचल सिंह ने बहुत से यार दोस्त बना लिए। कुछ खिलाने वाले, बहुत से खाने वाले। मतलबी दोस्त अपने शिकार को फौरन ताड़ लेते हैं और उसे फसा कर उसके पैसे से मजा उड़ाते हैं। चंचल के दोस्त खूब अच्छी तरह जानते थे कि उसके पिता अमीर हैं, वह भी अमीर होगा। अमीरों के सब दोस्त बन जाते हैं। चंचल को भी ऐसे ही दोस्तों की आवश्यकता थी। हिरन अपनी डार को ही ढूंढता है। उसी में मिल कर सुरक्षित नज़र आता है। अपनी टोली के सब यार दोस्त विचारों, कमज़ोरियों और बुराइयों को जानते हैं, दूसरों से वे छिपानी पड़ती हैं। अगर न छिपाई जावें तो वे उनसे लाभ उठाने में संकोच न करें।

हर एक में कमजोरियां होती हैं और सबसे ज्यादा होती है अमीरों के लड़कों में। वे ऐसे दोस्त ढूँढते हैं जो उनकी कमज़ोरियों को अच्छाइयाँ बता कर तारीफ करें। झूठी बड़ाई करके लूटना भी एक चतुरता है। यह लाहौरियों से सीखिए।

दूसरों की कमजोरियों का फायदा वही उठाते हैं, जो अपनी अच्छाइयों का फायदा नहीं उठा सकते हैं। आचरण

के कमजोर होने के कारण ये अच्छाइयां स्पष्ट रूप धारण नहीं कर पातीं । जिसकी चाल चलन रेत पर रखी गई हो उसके किले को तोड़ना कौन सी बड़ी बात है ।

चंचल सिंह की कमजोरी शारीरिक न थी। जिस्म में तो वह छः फुट का हट्टा कट्टा चलता फिरता जवान था सिर्फ आचरण की थोड़ी सी कमजोरी थी। लाहौर में रहने के कारण वह आचरण की कमजोरी को कमजोरी नहीं समझता था। एक खूबसूरत, नौजवान लड़की को देखने की लालसा हर समय लगी रहती। उसे देखकर—हाय—हाय—हाय—उसे पुकार—हाय—हाय--हाय--उसकी इतनी पूजा करूं कि पलकों पर बाल भी बाकी न रहें। वे स्त्री जाति के सच्चे पुजारी थे।

औरत से प्रेम करना मर्द का काम है। इसीलिए तो ईश्वर ने दोनों को बिजली के दो 'टर्मीनल्स' की तरह बनाया है जिनके मिल जाने से प्रेम की बिजली पैदा होकर वह शक्ति पैदा करती है, जिससे दुनिया की रचना चलती है। जरा ख्याल करिये कि अगर बिजली न हो तो, सरदार चंचल सिंह जैसे होनहार दीवाली के दिन अनार कली में दीपमाला देखने कैसे जांय।

सरदार बहादुर नहीं चाहते थे कि चंचल सिंह गलत मार्ग पर पड़े। बिजली को रोकने के लिए उन्होंने बहुत से उपाय किये परन्तु कुत्ते की पूंछ को सीधी करना कोई सहज बात नहीं। और फिर जब कि सीधी करने का काम दूसरों के सुपुर्द कर दिया जावे। सीधा करने का विचार ठीक था परन्तु विचार

को पूर्ण करने के लिए विचारना ही काफी नहीं, उसे कार्य रूप में परिणत करना अत्यावश्यक है। जो कार्य मनुष्य अपने हाथों से कर, खुशी प्राप्त कर सकता है वह दूसरा, कभी अपनी मंशा के अनुसार पूर्ण नहीं कर सकता।

लड़कों को सुधारने का विचार था, रुपयों को बटोरने का प्रयत्न था। इसलिए फालतू काम नौकरों के सुपुर्द कर दिया गया। पन्द्रह वर्ष तक छोटे साहब ने उनकी ही संगत में उच्च शिक्षा प्राप्त की :

कबिरा संगत साची ढूँढिए
जो सुखदायी होय।
सुख को मत तो ढूंढिये,
वह दुखःदायी होय।।

बचपन में अच्छे बुरे का किसी बच्चे को ज्ञान नहीं होता। वह दूसरों की करनी को देख कर सीखता है। नौकरों का पहला नियम होता है मालिक को खुश करना। खुश करने का सबसे उत्तम तरीका है, मालिक की कामनाओं को पूर्ण करना।

रियासतों के वजीर, एक रियासत से निकाले जाते हैं और निकलते ही दूसरी रियासत में बड़े बजीर बन जाते हैं। वे राजाओं के दिल की कुंजी जानते हैं सात स्टोन का नरम नरम, गोरे रंग के जिस्म, जिसकी बनावट दिल के ताले को खोल दे—लाहौरियों के लिए एक और उपयोगी सलाह—रियासत में वजीर बनने से पहले लाहौर की हीरामंडी

में दूकान खोलें और वहां के प्रोफेसरों से उच्च शिक्षा प्राप्त करें। डिग्री मिल जायगी।

चपरासी, बेलदार और बेहरे जो नीली, पीली, रंग बिरंगी वर्दियाँ पहने, घंटों बेमाने, दर्वाजे के सामने बैठे रहते हैं कि जैसे शिव मन्दिर के आगे नन्दी और कोई काम तो था नहीं, होने वाले बड़े साहब की जड़ों में पानी सींचा जा रहा था। गोद में बिठा कर मीठी मीठी कहानियां सुनाई जातीं, उनके साथ खेला जाता......बचपन जब छोड़ कर चला गया, बहुत दूर भी चला गया, तब भी चंचल सिंह उन कहानियों को भूल न सके। हम जो कुछ भी करते हैं उसका अंक हमारे मस्तिष्क में दर्ज हो जाता है। कई याददाश्तों को हम, अपने आचरण के जोर के द्वारा बहुत देर तक दबा रखते हैं। पर वे एक मौके की तलाश में लगी रहती हैं। जैसे ही आचरण कमजोर हुआ वह छूट कर आचरण पर पूरा काबू जमा लेती है। इसीलिए बहुत से आदमी अपनी कमजोरियों और कामनाओं के गुलाम होते हैं। ये सब कमजोरियां एकदम नहीं निकल पातीं। मस्तिष्क में इसका बीज बचपन में बोया जाता है। पर न चंचल सिंह को पता था और न नौकरों को परवाह थी, न पिता को पता था कि उसके मस्तिष्क में कैसे विचार बोए जा रहे हैं और वे बढ़ कर क्या रूप धारण करेंगे।

जब सरदार बहादुर ने देखा कि लड़का घर में नहीं

सुधर सकता तो उन्होंने यही बेहतर समझा कि कालेज के होस्टल में भर्ती करा दिया जाय ।

मुसीबत टली लाखों पाए ।

वहां 'प्रोफेसरस्' देख भाल कर उसे 'डिसिप्लिन' (नियम पालन) सिखा देंगे ।

'डिसिप्लिन,— कुत्ते की पूंछ को यदि बचपन में काट दिया जावे तो वह हमेशा सीधी रहती है । यदि बड़ी होने पर काटी जाय तो बड़ा दर्द होता है । बिगड़े हुए को सुधारना कठिन है, सुधरे हुए को बिगाड़ना आसान ।

कालेज में लड़के शिक्षा प्राप्त करने जाते हैं । बिगड़ने सुधरने नहीं । शिक्षा और 'डिसिप्लिन' दो विभाग हैं । हमारे 'प्रोफेसर' को शिक्षा देने की तनख्वाह मिलती है, 'डिसिप्लिन' सिखाने के लिए थोड़ा सा अलाउंस (भत्ता) लगा दिया जाय तो शायद वे लड़कों के सुधार और बिगाड़ में दिलचस्पी लें । यदि 'होस्टल' के 'सुपरिटेंडेंट' को सरदार बहादुर की तारीफ से अलाउंस भी मिलता तो भी वे शायद न सिखा सकते, क्योंकि सिखाया उसी को जाता है कि जो सीखना चाहे ।

चंचल सिंह कालेज में पढ़ने लिखने के विचार से भर्ती नहीं हुए थे । नथमल ने पढ़ाया था :

पढ़ोगे लिखोगे तो होंगे खराब,
खेलोगे कूदोगे बनोगे नवाब ।।

आप कहेंगे कि मैंने यह शेर उलटा लिखा, पर लाहौरियों

के लिए उल्टी चीज ही सीधी कहलाती है । यदि सिनेमा जाने का खयाल हो, तो कहो सिनेमा नहीं जावेंगे । देखिए कितनी जल्दी बिगड़ कर जवाब देते हैं, 'जरूर चलना पड़ेगा ।' अगर यह साबित करना हो, कि जमीन गोल है तो कहो, कि वह चिपटी है । अपने पल्ले को हलका जानते हुए भी कभी हार मानने को तैयार नहीं होगे । देखिये कितनी जल्दी 'न्यूटन' और 'इन्सटाइन' के सिद्धांतों को उलट पुलट कर आप को विश्वास दिलाने का प्रयत्न करेंगे कि जमीन अवश्य गोल है । हुज्जत बाजी में मजा आता है और बाजी तभी लग सकती है, जब दो जोड़ियां मुकाबले पर खड़ी हों ।

किसी हुज्जत का झगड़ा तभी खतम हो सकता है कि हम एक दूसरे के विचरों को खुले दिल से सुन कर दलीलों से मुकाबिला करें, पर जब दूसरा दलील मानने को राजी ही नहीं हो, तो हुज्जत बाजी कैसे बन्द हो सकती है ? अगर भावी लेखक, लाहौर के अस्पतालों का चक्कर लगायें तो उनको ज्ञान होगा कि तीन चौथाई जख्मी जो सिर काट या कटवा कर आते हैं उनके जख्मों का कारण यही हुज्जत बाजी है । यह तांगा दौड़, सिनेमा खतम हो जाने के बाद शुरु होती है। या तो सावारियों जल्दी पहुँचने के लिए, तांगे वालों को उसकाती है, या तांगे वाले दूसरी सवारियों को चढ़ाने के लिए, घोड़ों को मारते हैं । जो रथ दौड़ कई साल पहले, 'ग्रीस' में हुआ करती थी, वह आजकल लाहौर के तंग बाजारों में देखी जा सकती है । अगली पिछली सीटों पर

चार सवारियां हृदय को संभाले, तांगे के लड़खड़ाते अंजर पंजर को पकड़े, कुछ खुशी और कुछ डर से चारों ओर देखते हुए, पायदान से तांगे वाला, हाथ में घोड़ों की रासों को लिए, दूसरे हाथ से चाबुक चलाता और साथ में घोड़े को जोर जोर से मां बहिनों को गालियां निकालता रेस दौड़ जीतने का प्रयत्न करता है। जब तांगा दूसरे तांगे के पास से होकर गुजरता है तो सब सवारियां सीटों से उठ कर कहती हैं 'ओ। बोए। बोए'

अक्ल बड़ी कि भैंस???

आज डर से दूर—पिता की नजरों से बाहर, अपने आप को आजाद पाकर चंचल ने सोचा भैंस ही बड़ी है। यह भी तांगा दौड़, रथ दोड़······को अक्ल का काम समझने लगा। कोई भी काम अक्ल के बिना नहीं हो सकता है किसी भी अभिलाषा की पूर्ति के लिए अक्ल की आवश्यकता है। आज उन्होंने अपनी अभिलाषाओं को पूर्ण करने के लिए अक्ल की फटी पतंग को लम्बी ढील दे दी :

लूटो जवानी के मजे!

कालेज में उनकी टोली 'चंडाल चौकड़ी' के नाम से मशहूर थी। चौकड़ी वालों को इस नाम पर गर्व था और परिश्रमियों को उससे घृणा। जब इम्तिहान के दिन निकट आते ही लड़के को पढ़ता हुआ देख, असमल खां पिराचा बिजली का 'फ्यूज' उड़ा देते और जोर जोर से चिल्लाते : 'सालों को चैन नही आती, इम्तिहान नजदीक है और पढ़ने नहीं देते।'

पिराचा साहब ही असल में, चंडाल चौकड़ी के कर्ता धर्ता थे। पर क्योंकि पैसे लगते थे सरदार साहिब के, इसलिए दिखावे के लिए उनको ही 'लाइफ प्रेसीडेंट' (आजीवन सभापति) बना दिया गया था। भल्ला साहब थे खजानची। सिवाय भल्लों के लाहौर के बैंक और कौन चला सकता है—अगर मैनेजर या खजानची न हों तो भल्ला एंड कंपनी कम से कम बैंक की 'आडीटर' अवश्य होगी। क्या कभी हमारे भावी लेखकों ने सोचा कि उपर्युक्त नाम भल्ला कैसे पड़ा—

भल्ला और पकौड़ी खाने वालों को नर्म फोले और दिलचस्प दिखाई पड़ते हैं, अन्दर से होते हैं खोखले। उनकी खासियत है जिस रस में डाले जावें उसे स्वयं ही चूस कर मोटे हो जायं। तभी तो लाहौर के बैंक चौथे दिन दिवाला निकाल देते हैं।

चंचल सिंह को पूरा विश्वास था कि वे ही चंडाल चौकड़ी के सदर हैं और ऐसा ही उनको, जताया जाता था। इसे कहते हैं आँखों में धूल झोंकना।

'अगर कोई नया बैंक खोलना हो, कोई नई 'ब्यूटी सोसाइटी' या मेलजोल तोड़ कान्फ्रेंस, या सिर फोड़ जत्था तैयार करना हो तो सबसे पहले, अपनी सोसाइटी का नाम लाहौर के पेटेंट दफ्तर से खरीदो, फिर अगर रुपए की आवश्यकता प्रतीत हो, किस महान कार्य को करने में रुपए की आवश्यकता नहीं पड़ती, तो किसी राजा या बेसरके

'सर' को प्रेसिडेंट नियुक्त करो । छोटे राजा की खोज करना बेहतर होगा । क्योंकि बड़े बड़े राजे ऐसी बहुत सी संस्थाओं के प्रेसीडेंट बन कर बहुत से खिताब हासिल कर चुके होंगे । छोटे राजाओं को जताइए कि इस संस्था के सभापति बनने से उनका नाम कितना प्रसिद्ध होगा और कितनी जल्दी उनको खिताब मिल जायगा, तो वे जल्दी प्रेसिडेंट बन आवश्यक पूंजी, बेसूद में लगा देंगे । पर यह बात उनको हमेशा जताइए कि इसमें उनका ही फायदा है, तुम्हारा कुछ नहीं ।

चंचल सिंह को तो यह जानने की आवश्यकता न थी क्योंकि उन्हें अपने सेक्रेटरी असमल पर पूरा विश्वास था । दो चार दफा एफ० ए० में फेल हो चुके थे । कालेज के क्रिकेट टीम के कैप्टिन और लाहौर के सब गली कूचों से वाकिफ । इससे योग्य 'आनरेरी सिक्रेटरी' और कौन मिल सकता था ।

पिराचा साहब बहुत होशियार थे । कई गुल खिला चुके थे । कई खिलाने को तैयार थे । डील डौल में तगड़े, खूबसूरत, दमकता हुआ गुलाबी चेहरा । आखिर पठान ही तो ठहरे ।

असलम ने जता रखा था कि उसके पिता होती मर्दान के एक छोटे से कबीले के सरदार हैं । कई सदियों से आपस में फौजदारी हो रही थी । तीसरे चौथे दिन किसी न किसी का डिब्बा अवश्य गुल हो जाता था । इसलिए खान साहिब ने अपने इकलौते लड़के को लाहौर में शिक्षा पाने भेज दिया ।

पर कुछ दोस्तों को लाहौर आने का कोई और ही कारण बताया । 'सरदार जी, तुम कभी 'फ्रंटियर नहीं गए, अरे भाई, तुम फ्रंटियर में जाओ तो तुम्हें क्या दिखाई देगा, पहाड़ ही पहाड़ और कुछ खजूर के दरख्त । कभी साली औरत पर नजर नहीं पड़ती । जब मैं स्कूल में दसवीं का इम्तिहान देने पेशावर गया तो बहुत सी खूबसूरत खूबसूरत लड़कियां माल रोड पर फिरा करती हैं । हम जब साला इधर आता है तो माल रोड पर सब काला मेम लोग नज़र आता है और अच्छा चीज......"

"तो फंसाने आये थे तुम,"

"फंसाना तो दूर रहा, कभी कभी नजर ही आ जाया करे तो गनीमत है ।"

"पर भाई असलम, मेरा तो देखते ही दिल नहीं भरता।" चंचल ने कहा ।

"हां, कोई ऐसा तरीका सोचना चाहिए जिससे एक न एक शिकार काबू में आए ।" भल्ला साहब ने राय दी।

"आओ, जरा 'चेज' कर आवें," असमल ने कहा ।

"चेज करते हुए तो इतने दिन हो गए, आज तक तो कोई न फ़ंसी । मुझे तांगे के पीछे साइकिल पर बेमाने चेज करते शर्म आती है " मनमोहन सहगल ने जो उस टोली में कोई पदवी नहीं रखते थे, अपनी बेसुरी जोड़ दी ।

"साहब जी, प्रेम में बहुत सी गलियों की खाक छाननी

पड़ती है। घर बैठे भी कभी शिकार हाथ में आ सकता है।"

"पर मैं तो प्रेम की खतो कितावत में विश्वास करता हूं, असलम, तुम नहीं जानते की कलम में कितनी जोर है। अगर कोई मेरी दिलरुबा हो तो सच कहता हूँ कि ऐसे ऐसे खत लिखूं उसमें गालिब और जिगर के शेर भरुं जिसको पढ़ कर उसका दिल पानी पानी हो जाय।"

"और तुम उसमें बह जाओ,"

"साहिब जी, तुमने कभी यह भी सोचा कि अगर दुलहिन न हो दुलहा शादी कैसे कर सकता है?'

',साहिब जी, पहिले किसी को फंसाओ फ़िर उसे खत लिखो, वरना डाकखाने में बेपते का बैरंग खत किसे मिलेगा, चलो जरा चक्कर लगा आवें। शायद कोई चूजा फ़ंस जाय।"

सब ने कालेज के ब्लेजर पहिन लिए। मूंह में लम्बे लम्बे सिगरेट होलडरे, टेढ़ी मरोड़ी हुई फेल्ट कैप जिनके एक तरफ शुतुर्मुर्ग की दुम का पर लगा हुआ था, पहिन, साइकिलों पर 'यूनिवर्सिटी ग्राउंड की तरफ का रूख़ किया।



चेक

लाहौर की आबादी चारो कोनों में बैमानी बढ़ रही है अगर न बढ़ती हो तो बढ़ाने के लिए 'माडल टाउन' या 'गार्डन टाउन' बनाना शुरु कर दीजिए । कोई न कोई, जिनके शहर में पहले दो चार मकान होंगे, वहां पर भी नई कोठी बनाने के लिए अवश्य जगह खरीदेंगे । या कुछ नये रिश्वती, जिन्हें कहीं जगह न मिलती हो, वे तो सबसे पहले खरीद कर वे रूप रंग का ढांचा कर देंगे और उसे देख कई भेड़ चाल की तरह वहां टूट पड़ेंगे ।

अगर कोठियां न बनें, तो ठेकेदारों की जेब कैसे भरे, भट्टे वालों की ईटें कैसे बिकें, लोहारों का लोहा, दूकान में पड़ा पड़ा जंग खा जावे और सब से ज्यादा नुकसान हो, बीमा कंपनियों को । वे खाली कोठियों का बीमा कैसे करें ।

सब कोठियां वास्तव में अपने रहने के लिए नहीं बनाई जातीं । आदमी एक समय एक ही जगह रह सकता है, तो फिर चार मकान बनाने की क्या आवश्यकता । वे बनाए जाते हैं, दूसरों के रहने के लिए । अगर किरायेदार न मिलें तो कोठियाँ खाली रहेंगी और कोई व्याज न मिलने से बेहतर यही होगा कि उनका बीमा करा दिया जाय । वह तो एक दिन वसूल हो ही जायगा ।

आज कल जिन्दगी से ज्यादा जरूरी है, अपने मकान, दूकान या कोठी का बीमा कराना, क्योंकि अगर जान जायगी तो अपनी और फायदा होगा दूसरों को। अगर कोठी या दूकान को आग लगेगी, तो जान जायगी दूसरे की और फायदा होगा अपना। हादसे में अगर जान जाने का खतरा हो तो बेहतर यह है कि हादसे होने के पहले, उस जगह को खाली करा दिया जाय, या उनकी जान की पालिसी अपने नाम पर लिखवालो। पहिले किरायेदारों को शायद थोड़ा शक हो, इसलिए उस समय आग लगानी अच्छी होगी जब घर के सब लोग राम लीला, मोहर्रम, या गुरुपर्व देखने गए हों। दूसरे तरीके में शायद बीमा कंपनी शक करे और मुकदमें में अगर पता चल गया कि दामोदर लाल आपके बेवारिस चचाजात भाई न थे तो लाहौर की एक न एक जेल में आपके लिए अवश्य जगह खाली होगी।

लाहौर के सिनेमा, इसलिए उस वक्त जलाए जाते हैं, जब वहां न पिक्चर चल रही हो और न कोई देखने वाला हो। आप समझते हैं कि शायद लाहौर की बीमा कंपनी को, इन चालाकियों का पता नहीं। देखिए—अगर एक सिनेमा को आग लगे, तो मान लिया जाय कि बीमा कंपनी को उसका पाँच लाख रुपया देना पड़ा, उस रुपये को देने में लगभग नौ महीने लगेंगे। नौ महीने में तो लड़की बच्चे की मां बन जाती है, अगर उस दौरान में दस और सिनेमा वाले आग लगने के डर से या लगाने के विचार से

बीमा करवा लें तो, कम से कम पचास लाख का बीमा हो गया । अब आप बताइए कि किसको लाभ हुआ ।

बीमा कंपनियाँ, सिर्फ साधारण व्याज में ही विश्वास नहीं करतीं, उन्हें तो चक्रवृद्धि व्याज चाहिए । अगर मकान कोठी या सिनेमा जलेगा तो जलाने वाला, फिर जलाने को लालच से, या उसमें रहने की गरज से फिर बनवाएगा । अगर बनवाने वाली बीमा कंपनी हो, उसके ही ठेकेदार हों, उसी के भट्ठे से ईटें ली जावें, उनका ही लोहा लगे, तो एक हाथ से दिया तो दूसरे से दुगना लिया । सूद पर सूद लगा कर थोड़े दिनों में बीमा कंपनियां, हमारी खाल भी उधेड़ लेगी । उधेड़ने से पहले यही बेहतर होगा कि उसका भी बीमा करा लिया जाय ।

बीमा कराने के लिए, आप को दूर जाने की जरूरत नहीं । उसके बहुत से एजेंट खुद बखुद आप के पास आ जावेंगे फिर आप जहां चाहें कोठी बनवा, बीमा करवा लें

लाहौर की गली, बाजारों में रोज ही ढिंढोरा पिटाता है—प्रेम नगर—बिल्कुल पवित्र हिन्दू बस्ती, इस्लामाबाद, हुसैनपुरा मुसलमानों के लिए एक आला आबादी, खालसा नगर, सरदार नगर सिक्खों के लिए गुरुद्वारा के पास जगह, जहाँ कहीं भी दिल भरे, टुकड़े खरीद लीजिये । एजेंट होंगे, भल्ला एंड सन्स, या भल्ला एंड ब्रादर्स । बिकवाने वाली होगी—दी ग्रेट........इन्शोरेन्स कंपनी—प्रेसिडेंट राय बहादुर एल० डी० भल्ला ।

मुलतान रोड की तरफ ऐसी बहुत सी आबादियां बन रही हैं। यहां के रहने वाले लाहौर की तंग गलियों से तंग आकर, खुली हवा में, छोटा सा निजका मकान बना कर रहना चाहते हैं। दो चार साल के बाद, खुली जगह बंद हो जाती है और वे दूसरी खुली जगह की तलाश में चक्कर लगाने लगते हैं। इसमें बीमा कंपनी वालों का हाथ मुझे अभी तक नजर नहीं आया। बल्कि जिस वक्त छज्जूमल के चौबारे से उनका लड़का गोगडमल, परमेश्वरी दयाल के दालान में झांक कर उनकी सुपुत्री लाडोरानी को नहाते धोते देखा जाता है तो परमेश्वरी दयाल छज्जूमल के दालान में झांकने के लिए अपना चौबारा और भी ऊंचा कराते हैं। जब चौबारों में हुज्जतबाजी शुरू हो गई तो फिर क्या कहने।

जिस कोठी का एक मंजिला नक्शा पास कराया गया था वह रातों रात चार मंजिला मकान बन जाती है। अगर म्यूनिसिपैल्टी को पता लगे, तो ज्यादा से ज्यादा वह यही दंड दे सकती है कि आमने सामने के दोनों मकानों की तीन तीन छतों कोगिरवा कर फिर एकमंजिला मकान बना दे म्यूनिसिपैल्टी की इस हिमाकत को देखकर सब हंसेंगे। हंसने के अलावा, गिराने के लिए पैसे की आवश्यकता होगी इसलिए १० रुपये जुर्माना कर, गिराने की बजाय उन्हें खड़ा ही रहने दिया जावेगा। एक बात अकल की की…।

नई आबादी के साथ साथ उनकी नागरिक उन्नति नहीं हो सकती। उसका ख्याल बाद में किया जावेगा। जब नई

आबादी में इतनी आबादी हो जाय कि वहां से म्यूनिसिपैल्टी के नये मेम्बर चुने जावें और वे हाथ पैर जोड़ कर हैल्थ अफसर को अपने साथ गली कूचों की हवाखोरी के लिए बाध्य कर सकें, तब।

सड़कें जल्दी बनवानी हों, बिजली लगवानी हो और सवेरे उठते समय खुशबू सूंघने को दिल न करे, तो किसी नई आबादी में जमीन खरीदने से पहले इस बात का पता लगा लेना जरूरी है कि उस आबादी में म्यूनिसिपैल्टी के कितने कर्ता धर्ताओं को मुफ्त जमीन दी जा रही है। फिर तो कूड़ा गाड़ी आते देर न लगेगी। और इस्लामाबाद का कूड़ा संतनगर की गली के सामने रात के वक्त जब कोई देखता न हो सजा दिया जायगा। अगर सतनगर वालों ने बेशर्म होकर अखबारों में पैसा देकर गालियां निकालीं तो दो चार दिन के बाद वह उठवा कर फिर इस्लामाबाद के दर्वाजे पर जमा कर दिया जावेगा। वे नया कूड़ा समझ कर चुप रहेंगे। अगर कूड़ा शहर से बाहर दूर फिकवाया जाय तो फिकवाने में कितने रुपये लगेंगे और दरिया में पड़ने से रावी का पानी खराब हो जायगा, उस पानी को पीने से इस्लामाबाद और संतनगर के रहने वालों को हैजा की बीमारी होने का डर है, हैजे से बेहतर तो यही है कि कूड़ा वहीं का वहीं पड़ा रहे। यह है 'लाजिक'...

नई आबादी के सब लड़के लड़कियां, लाहौर के पुराने स्कूल और कालेजों में ही पढ़ने जाते हैं। इसलिए चंडाल-

चौकड़ी के चारों मेम्बरों ने 'यूनीवर्सीटी ग्राउंड' की तरफ अपनी 'साइकलों' के 'हैन्डिल' मोड़ दिये। मुलतान रोड पर गड्ढे बहुत ज्यादा हैं। तांगा सरपट नहीं चल सकता और चेज करने वालों को पीछा करने में आसानी होती है।

'कभी अकेले चेज करना'....मनमोहन के बड़े भाई केदार सहगल ने छोटे भाई को कालेज में भर्ती होने से पहिले, अपनी कथा सुनाते हुए सलाह दी। मैं कालेज में था। मेरी एक लड़की से आंख लग गई। छुट्टी होते ही साइकिल उठा कर उसके पीछे लग जाता और घर तक पहुँचा कर आता। बड़ी ख़ूबसूरत थी। मुझे विश्वास था कि वह मुझ से प्रेम करती है। एक दिन उसने मुझसे 'लारेंस गार्डन' में मिलने का वादा किया। मैं बहुत खुश था। एक घंटा पहिले, नया सूट पहन कर पहाड़ी के चक्कर लगाने लगा। वह तांगे में आई और मुझे अपनी तरफ इशारा किया। अंधेरी जगह में जाकर तांगा खड़ा हो गया। मैंने अपनी माशूका को तांगे से उतारते हुए प्रेम से कहा: 'आज तो बुर्का उतार मुझे दिल भर के देख लेने दीजिये।...... ... मै सिर पर पैर रख कर भागा। इतनी जोर से भागा कि अगर मैं 'ओलम-पिक्स' में भाग लेता तो सौ गज की दौड़ का तो अवश्य 'रिकार्ड' तोड़ देता। पर उस नंग धड़ंग मुसटंडे ने थोड़ी दूर के वाद ही पकड़ कर मेरी खूब मरम्मत की।

'बुरके में लड़के को लड़की समझ कर कभी धोखा न खाना।' यह दूसरी शिक्षा थी।

मनमोहन को इसीलिए चेज करने में डर लगता था पर आज चंडाल चौकड़ी का हुक्म था और उसे भी लाइन बना कर चलना पड़ा। तांगे की जनाना सवारियां हमेशा पीछे बैठती हैं क्योंकि टांगे वाले सारे मर्द होते हैं और औरतों को टांगा चलाने का 'वोमन्स टांगा ट्रेनिंग कालेज' अभी लाहौर में नहीं खुला, जब खुल जायगा तब मर्दों को पीछे बैठना पड़ेगा ......उलटी गंगा।

पिछली सीट की सवारियां पीछे देखती हैं। चेज करने के लिए पीछे से आना ही उत्तम होता है। यदि सवारियां मुंह मोड़ कर उल्टी तरफ को देखने लगें तो सड़क पर साइकिलों की 'लाइन' बनालो। पीछे का सब 'ट्रैफिक' रुक जायगा और रुकावट का कारण देखकर सब टांगे वाले को जोर जोर से गालियां निकालेंगे सवारियां खामखा झेंप कर पीछे देखेंगे।

चंडाल चौकड़ी इन बातों में पूर्णतया दक्ष थी। टांगे को एक बगल से आता हुआ देख असलम ने चंचल से कहा 'चलो उसका पीछा करें।

टांगे की पिछली सीट पर दो काला बुर्का पहिने अगल बगल में, और उन दोनों के बीच में तीसरी सफेद कमीज और सफेद चुनी हुई चुन्नी गर्दन के गिर्द फांसी की रस्सी के तरह लपेटे फंस कर बढ़ी मुश्किल से बैठी हुई थी। अगली सीट खाली थी, तांगे वाला तांगे को उलार देख कर तीनों सवारियों का वजन बराबर करने के लिए 'बंब' पर इस तरह बैठा हुआ था जैसे बंदर पेड़ की डाल पर।

चंडाल चौकड़ी को आता देख नंगे मुंह वाली ने, दाहिनी बन्द मुंह वाली से कुछ कहा, उसने दूसरे बुर्के वाली से कहा, फिर तीनों ने आपस में कानाफूसी की। नंगे मुंह वाली ने थोड़ा सा खिलखिला कर हंस दिया।

'हंसी और फंसी··चल बेटा चंचल।'

चारों साइकिलों के पैडिल और जोर से मारते हुए, तांगे के दाएं, बांएं से दो टोलियां बना कर गुजरे।

एक टोली ने कहा :

'हुजूर यह डाली है नकाब किस लिए।
क्यों छिपाया हमसे चांद सा मुखड़ा ॥'

दूसरी ने कहा :

'हुजूर हम से यह नाराजगी किस लिए।
सुनिये हम से हमारे दिल का दुखड़ा ॥

फिर चारों ने एक साथ गाया :

'तांगे ते बैठके चलेन् दे ने भाई वाले,
छुप छुप के दिखेन् देने साही वाले ॥'

तांगे में जाने वाली तीनों लड़कियों ने भी देखा और सुना। मुशायरे का मजा उठाते हुए उन्होंने भावी शाइरों का दिल बढ़ाने के लिए नकाब उठा, मुंह नंगा करते हुए जोर से दाद दी ·· हरामजादे।

'भाग बे भाग असलम'...तीनों साथियों ने चौथे साइकिल वाले से कहा। तीनों लड़कियों ने भागता देख जोर से हंस दिया। दो ने नकाब गिराली। तीसरी ने चुन्नी को सिर पर

रखने की कोशिश की पर तांगे वाले ने जैसे ही गाली निकालते हुए घोड़ी को चाबुक मारी, चुन्नी फिर से खिसक कर गर्दन के के गिर्द लटक गई—कैसी शर्म की बात है क्वारी लड़की का नंगा सिर......

तांगा तो वहीं अड़ कर खड़ा हो गया पर चंडाल चौकड़ी ने दाहिनी गली में मुड़, बहुत दूर जाकर सांस ली।

वाह भाई असलम...कोई इन से पूछे कि खुदा ने इतना हुस्न दिया है, इतना खूबसूरत चेहरा अता फरमाया है, तो साले को छिपाने की क्या जरूरत।'

'चांद को अच्छा लगता है गहना।'

'गहना तो नहीं दूसरी को तो पूर्ण ग्रहण लगा हुआ था।'

'क्या कहने—काली चुड़ैल थी।'

सब हंस दिये। पर चंचल सिंह खामोश थे। उन्हें खामोश देख कर असलम ने पूछा 'राजा साहिब हाल तो ठीक हैं' :

'दास्ताने इश्क मेरे दिल से पूछो,'
बस हो गए घायल...

'ओह—यारेब निगाहे नाज पर लाइसेंस क्यों नहीं।
वह भी तो कत्ल करती है तलवार की तरह॥'

'एक नजर ने ही घायल कर दिया।'

'प्रेम के लिए एक नजर ही काफी होती है असलम।'

'इतने खस्ता हाल हो।'

'तुम्हें तो मजाक सूझ रहा है।'

'क्या कमाल की आंखें थीं।'

'और वह मुस्कान।'

'गजब की।'

चंचल सिंह, दिल फेंक सिंह थे। जिस लड़की को देखते उसी पर लट्टू हो जाते। जिस पर नजर डालते, यही ठान लेते कि बस वे उसे ही प्रेम करते हैं। आज कोई अनोखी बात न थी।

इतने दिन तांगे के पीछे चेज करते हो गए, पर इतनी खूबसूरत भोली भाली शक्ल पहले कभी नहीं देखी थी। उसे याद कर, वे प्रेम की ठंडी आहें भरने लगे। बहुतों को प्रेम करने में मजा आता है। कुछ को उसकी भावना में। चंचल सिंह दूसरे किस्म के, प्रेमी ख्याल किये जाते थे। कई दफा उनके दिल में भी चोट लग जाती थी। कई दिन लगातार, उसी जगह, उसी समय, उसी मोड़ पर अपनी प्रेमिका को देखने के लिए जाते रहे पर हमेशा निराश होकर आना पड़ा।

अकेले जाना चंडाल चौकड़ी के नियमों के विरुद्ध था पर प्रेमी जब तक हो सके अपने भेद को अपने प्रतिद्वंदियों से छुपा रखना चाहता है। दूसरे 'मेम्बरस' को शक नहीं था कि प्रेम ने वज्रपात की तरह गिर कर सभापति महोदय के दिल के सूखे खलिहान में आग लगा दी है।

एक दिन शाम को उदास देख, असलम ने कहा, 'क्यों पिक्चर न चला जाय।'

'हां पिक्चर चला जाय', भल्ला ने जोड़ी।

'खयाल तो नेक है कौन.......

'मैक्लोड रोड पर दर्जनों सिनेमा हैं, जहां जरा मसाला देखेंगे।'

'आज पंचोली का नया खेल चल रहा है, खूब भीड़ होगी।'

'फिर तो क्या कहने ऐसा ही मौका चाहिए।'

'पर मैं तो नहीं जाऊंगा', जरा चुपके से चंचल ने कहा।

'देखो चंचल फिर न की तो हमारी तुम्हारी न बनेगी।'

'पर प्रेम ..'

'प्रेम का गम गलत करने के लिए सिनेमा के नज्जारे देख कर दिल वहलाया जायगा आज तो खूब बन-ठन के आई होंगी। शायद, तुम्हारी वे भी......'

'देखो साहब जी, आज पहिला नम्बर राजा साहिब का, अगल बगल या पीछे, जहां भी सीट खाली हो, दूसरा नंबर मेरा।'

'मंजूर है, चलो।'

दिल के बहलाने को गालिब यह खयाल अच्छा है।



नमकीन

सिनेमा में बड़ी भीड़ थी। पिक्चर का पहला दिन था और लाहौर के सब बेवकूफ एक वक्त, एक समय, पहले दिन, पहली रात को नई दुलहिन देखने को टूट पड़े थे, जैसे घर छोड़ कर भागी जा रही हो। हमारे दर्शक जानते हुए भी, यह भूल जाते हैं कि लाहौर की फिल्में स्त्री धर्म की प्रतीक हैं। वे आती हैं रहने के लिए न कि जाने के लिए। आप का दिल उनसे ऊब भी क्यों न जाय। क्या मजाल कि वे, एक दिन अकेला छोड़ कर मैके जावें। सती साध्वी स्त्री इसी आशा में बैठी रहती है कि एक न एक दिन आप अवश्य आ जावेंगे.........बेवकूफ वापिस आ ही जाते हैं।

नई पिक्चर को पहिले दिन देखने का बड़ा मजा आता है। कोई नई दुलहिन के रंग रूप और यौवन को देखे नहीं होता। सब को देखने की लालसा होती है......गोरा रंग होगा। तीखे नयन, सुन्दर रूप, मोटी आंखें, जिसमें से यौवन की मादकता टपक रही होगी। वे भेद सिर्फ दुलहा साहिब ही देखने को उतवले नहीं होते, बल्कि बहुत से दर्शक उसके हुस्न को देख कर एक छोटी सी ठंढी आह भरना चाहते हैं।

पहली रात को दुलहिन कितनी सुन्दर प्रतीत होती है। चन्द घड़ियों के अन्दर उसके जीवन में जो बड़ा परिवर्तन होने वाला है, उसकी आशाएं, उसकी आकांक्षाएं और

निराशाएं । उसकी आंखों में मस्ती, उसके यौवन में चपलता और उसके शरीर में घमंड, पैदा कर उसके सौन्दर्य को और भी शोख बना देती है ।

शादी की पहली रात को क्या करना चाहिए वह कविराज गुरुदास बी० ए० ने अपनी दो रचनाओं में बड़ी होशियारी के साथ लिखा है । अपनी किताब 'दुलहा को सलाह' में जो सिर्फ मर्दों के लिए है, आप लिखते हैं : पहली रात को दुलहा को चाहिए कि अपनी शारीरिक शक्ति का रोब जमाये उसके साथ हाथा पाई न करे·····अगर न रहा जाय, तो ज्यादा से ज्यादा दुलहिन का दुपट्टा उठा कर उसके मुख मंडल के दर्शन करले । और अफीम की गोली खाले । अपनी दूसरी पुस्तक 'दुलहिन को शिक्षा' में जो सिर्फ स्त्रियों के लिए है, आप लिखते हैं—दुलहिन को चाहिए कि वह पहली रात को शर्माए और गैर आदमी को हाथ न लगाने दे······अगर वह न माने और उस दुपट्टे को जिसके बादलों ने मुखमंडल के चन्द्रमा को छिपा रखा है उठा कर चन्द्र ग्रहण के दर्शन करना चाहे तो आंखें बन्द कर यह जताओ कि तुम नहीं देख रही हो कि वह क्या देख रहा है ।

जो दुलहा, दुलहिन को पहली रात इकट्ठा करना है कविराज से पूछा जाय कि उन्होंने दो अलग अलग पुस्तकें एक ही विषय पर क्यों लिखीं—यदि दो के स्थान में चार भी लिखी जावें, तब भी हमारे भावी दुलहा और दुलहिन, पहली रात को वही करेंगे, जो सब करते हैं । इसलिए लाहौर

के सब तमाशबीन पहली रात को अवश्य नई पिक्चर देखने जायंगे ।

दूसरे दिन पिक्चर पुरानी तो नहीं हो जाती । वह तो सिर्फ दुलहा के लिए रस खो बैठती है । दूसरे तो अब भी उसे नई दुलहिन या कुवांरी ही समझ कर... जब धर्म पत्नी जी उधर को देख नहीं रहीं हों—बांई आंख से आंख मार ही देंगे । और अगर पास की बूढ़ी की गोद का बच्चा कुवांरी की गोद में बैठ कर पुकारे, 'झाई'—झेंप कर दूसरी तरफ कुंवारी को ढूंढने को नजर दौड़ाओ ।

एक दुलहिन की शादी होती है, एक दुलहा के साथ । पर शादी का मजा बहुत से लूटना चाहते हैं । फिल्म के बाराती भी, थियेटर में हर शाम को एकत्र होते हैं । दिल बहलाने का यही तो एक मात्र तरीका रह गया है ।

लाहौर में सिर्फ दो जगह हैं । चिड़ियाघर, जहां फंसी हुई चिड़ियां रहती है और सिनेमा घर जहां आजाद चिड़ियां फुदकती फिरती है, जहां पर लाहौर की सब नई नुकीली बुड्ढी, जवान, काली खूबसूरत, चिड़ियों को देखा जा सकता है । अगर चिड़ियांघर जाना है, तो जाओ इतवार के सवेरे । सब हाथ में एक या दो डंडे लेकर आई होंगी । डरिये नहीं । डंडे मारने के लिए नहीं, धूप में बैठ कर चूसने के लिए गन्ने । बाकी दिन आप को शाम के छः से बारह बजे तक सिनेमा घरों की चहल कदमी करनी पड़ेगी । अगर बदकिस्मती से कालेज में 'बायलोजी' का विषय ले रखा

है और स्त्री जाति की बहुत सी किस्में जांचने को दिल करे तो पहली रात को जाइये—बड़े बड़े अमीर आते हैं और उनके साथ आती हैं, कुछ कह लीजिए, लाहौर के सिनेमा वालों के लिए, 'नमकीन' आधी से ज्यादा पब्लिक उन्हें देखने जाती है।

पहले हमारी बारात के साथ औरतें न जाती थीं। और शादी का आधा मजा जाता रहता था। बाराती सिर्फ मंडप में जनमासे की लड़कियों को देख आंखें भर सकते थे, थोड़ी देर के लिए ही। क्योंकि वे तो दुलहा को ऐसे घेरे रहती हैं, जैसे उनकी ही शादी उनके साथ हो रही हो। औरतों को न मालूम दूसरों के होने वाले पतियों से दिलग्गी करके क्या मजा आता है—अपने दिन याद आते हैं।

बारात, शादी का पूरा मज़ा लूटना हो तो किसी बहाने दुलहा के 'सरवाला' या 'अंग रक्षक' बन जाओ। फिर देखो दुलहा के साथ तुम्हारी भी कितने तेज नाखूनों से चुटकियां ली जातीं हैं। यदि किसी कोमल कली का हाथ, हाथ में आ जावे, तो पकड़ कर उसे थोड़ा सा नर्मी से दबाओ, 'बाडीगार्ड' को कभी दुलहा को अकेला नहीं छोड़ना चाहिये। एक औरत अकेली ही काफी है। जब दस घेर लें तब अकलमंद को भी उल्लू बना कर छोड़ें। दुलहा को शादी का पहला इम्तिहान जनमासे में पहली रात को देना पड़ता है। कौन मर्द, जवां मर्द—जिसकी शादी हो रही हो, अपनी होने वाली दुलहिन के सामने हार मान सकता है।

"छंद सुनाओ"

दुलहा साहिब खामोश रहे।

'जरा पहले उनसे' दुलहिन की तरफ संकेत करके 'गाना गवा दीजिये' 'बाडी गार्ड साहब' बोले।

दुलहिन खामोश थी।

"चल हट—बड़ा आया है हिमायती" बड़ी साली ने कहा।

"हम तो छंद सुन ही कर रहेंगो", पास के मकान वाले की लड़की बोली।

"हीरा लाला खबरदार, कभी छंद मत सुनाना, जब तक वह गाना न सुनायें।"

दुलहा खामोश।

"ओए, ओए, लड़के को छंद नही आते।" सालियों ने कहा।

"तेरे खसम नूं छन्द नहीं आन्दे।" दूसरी लड़की ने ताना दिया।

दुलहिन खामोश।

'हमारा लड़का बी० ए० पास है।'

'हमारी लड़की कौन सी कम है।'

'कौन से कालेज में बी० ए० में छन्द सिखाये जाते हैं।'

सब लड़कियां खिलखिला कर हंस पड़ीं और हर हर गोपाल—दुलहा साहेब के बाडीगार्ड, झेंप कर चुप रह गये।

"छन्द सुनाओ"

दुलहा खामोश ।

"हमारे कहने, थोड़े दो सुनाएगा, तू कह करमो ।"

करमो खामोश रही ।

"ओए, ओए लड़के को बोलना नहीं आता ।"

"अच्छा सुनादे, हीरा लाल, ये भी क्या कहेंगी कि फिरोजपुरियों को छन्द नहीं आते ।"

दुलहा साहिब सेहरों के पीछे से गुनगुनाते हुए बोले :

"छन्द गाके आइए जाइए
छन्द गाके कहिए डिब्बा,
लड़के का चंद्र मुखड़ा देखो
लड़की का मूँह ठिब्बा ।"

कुछ लड़कियां हंसी, सबसे जोर से हंसे हरहर गोपाल। कुछ लड़कियों ने, सालियों ने गुस्से से कहा, "बाजी वाह हमारी लड़की का मुंह ठिब्बा कौन कहता है ।

सब लड़की ने जो दुलहिन की कालेज की सहेली थी झटपट जोड़ कर कहा :

"छन्द गाके आइए जाइए, छन्द गाके कहिए कोल्हू ।
लड़की समझदार है लोगों, लड़का बिल्कुल उल्लू ।।"

सब लड़कियां जोर जोर से हंस पड़ीं । हरहर गोपाल चुप के चुप रह गये । दुल्हा ने सेहरों के पीछे मुंह छिपा लिया । बाहर आतिशबाजी चलने लगी और सब कहना सुनना भूलकर, बाहर की तरफ़ चले । बाडीगार्ड की तरफ देखकर सब ने जोर जोर से हंस कर कहा "लड़की नहीं

मिली तो लकड़ी ही लिए जाते हो ?" बेचारे ने झेंप कर अपनी राजस्थानी पगड़ी के पल्ले से बंधी लकड़ी को खोला ।

रोज तो किसी जान पहचान की शादी नही होती, और न तो कोई दुलहा के साथ जनवासे में जा सकता है । बाकी बारातियों का दिल खुश रखने के लिए अब औरतों को बारात में ले जाने का रिवाज शुरू हो गया है । उनको देख कर उन बारातियों का दिल तो अवश्य खुश होगा, जो उन्हें रोज नहीं देखते । गाड़ी का रास्ता तो अच्छी तरह कट जावेगा ।

सुन्दर मुखड़ा देख सौन्दर्य परखना उसकी प्रशंसा करना सभ्यता है । फूल को देख कर कौन खुश नहीं होता । लाहौर के सिनेमा दर्शक इन फूल को देखने आते हैं, तोड़ने नहीं । कंधे से कंधा लगता है, कभी कभी अचानक किसी का हाथ भीड़ में टिकट पकड़ने के बजाय और पकड़ लेता है । किसी का क्या कसूर ।

बाग को सुन्दर बनाना भी एक कला है । यदि उसे देखने, भीड़ न आए, तो लाहौर के सिनेमा एक दिन भी न चलें । पहली रात को भीड़ अवश्य आवेगी । यदि दुलहिन खूबसूरत है, तो बहुत से देखने आते रहेंगे । जब दुलहिन बदसूरत हो और मुंह दिखाई के पैसे इकट्ठे करने हों तब सवाल पैदा होता है ।

कुछ लोग तो आवेंगे सिर्फ देखने के लिए—चाहे अच्छी हो या बुरी । कुछ कभी नहीं आयेंगे—चाहे अच्छी हो या बुरी । और बहुत सा बुलावे पर आवेंगे । पहले फटेहालों

की तो कोई परवाह ही नहीं करता, वे तो······

हम तो हम, हम तुम्हारे मेहमान । ऐसे दूसरे बहुत कम हैं। दुनिया में समझदार कितने हैं जो अपनी समझ से काम लें। अगर उनको बुलाकर दूसरों को आकर्षित करने की आवश्यकता हो तो या तो उन्हें "फिल्म सेंसर" का मेम्बर बनवा दो, या 'रिजर्व क्लास' के 'फ्री पास' भेज दो और ऐसी जगह बैठाओ, जहां सब कोई गर्दन मोड़ कर देख सके।

तीसरी श्रेणी के लोग सिनेमा के मैनेजरों की जेब भरते हैं। उनको आकर्षित करना जरूरी है। हर एक की पसंद अलग अलग होती है। कोई गाना सुनने, कोई मारपीट, कोई कहानी देखने जाता है। पर तीन चौथाई से अधिक देखने वाले जाते हैं एक खूबसूरत दिलरुबा, चटकीली, मटकीली, सुन्दर एक्ट्रेस, जिसे और कहीं नहीं देख सकते। जब अपनी खलिहान खाली हो जावे तो दूसरे पर नजर पड़ती है।

सिनेमा, थियेटर वालों ने, मनुष्य की इस कामना को टकसाल पर लगाना शुरू कर दिया है। हुस्न फरोशी।

किसी चीज को बेचने के लिए उसे खूबसूरत लिबास में सजा कर इस तरह छिपा दो कि ज्यादा से ज्यादा देखने वाले दिखावे के लिबास को देख कर ही आकर्षित हो जावें। जब भेद जानने की कोशिश करें तब जताओ·····

आगे क्या होता है ?

आकर देखिये पर्दे स्क्रीन पर, अगर अब भी हाल पूरा न

करे तो एक तरीका और है । बीच में जिन्दा नाच गाना डाल दो । एक दाम दो धाम । साथ में पिक्चर देखो और देखो पटाका जान, बटाने वाली का नाच और गाना । देखिए लाहौर की पब्लिक किस तरह टूट पड़ती है ।

कौन जानता है, पटाका जान कौन है । कई तो बटाला भी नहीं जानते कहां है । और लाहौर में कौन बटाले वाला लाहौर वालों को बताएगा कि बटाले वाली, बटाले वाली नहीं है । न भी हो—पटाखा जान तो है, क्या दिल लुभाने वाला नाम—हृदय की सब कामनाओं को आकर्षित करने वाला ।

जब थोड़े दिन बाद भेद खुल जाय और लाहौरियों को पता चल जाय कि मिस पटाखा जान हीरा मंडी की तोप जान हैं, जिनकी मुटाई और भारी गले की तारीफ सुन कोई नाच और गाना देखने नहीं जाता तब एक चालाकी और करो ।

नसीम के चित्र को थोड़ा सा बदल कर उसके नीचे बड़े बड़े अक्षरों में लिखो, जिन्दा नाच गाना, जो देखेगा समझेगा कि बंबई वाली मिस नसीम मालाबार हिल के सुन्दर महल को छोड़ कर, लाहौर के, लाहौरी दर्वाजे के एक ना मशहूर थियेटर में जिन्दा नाच और गाना सुना कर लाहौरियों की रूह को तरो ताजा करेंगी । साथ में ढिंढोरा पिटवाइये—सिर्फ एक हफ्ते के लिए । टिकट खरीद कर सीट रिजर्व कराइये । वर्ना नाउम्मीद उठानी पड़ेगी ।

एक हफ्ते के बाद देखा जायगा । हफ्ता भरतो खूब

भीड़ लगी रहेगी। भीड़ देखनी हो तो चलो अधेली वाली खिड़की पर, ऐसा मालूम पड़ेगा, जैसे छते पर शहद की मक्खियां। टिकट पाने के लिए अगर दो चार घन्टे पहले न पहुँचो तो टिकट पाने के दो ही तरीके हैं या तो दूगने तिगने दाम देकर टिकट वालों से टिकट खरीदो या 'तोपखाना' बनाओ।

जिस समय चंडाल चौकड़ी 'चित्रा टाकीज' पर पहुची, थियेटर के सामने का खुला मैदान, आदमी और औरतों से खचाखच भरा हुआ था। कई सूट बूट डाटे, टाई लगाए, देशी साहब लोग, कई चूड़ीदार पाजामा या धोती पहने, अचकन सजाए, सरदार साहब, या राय साहब, बहुत से धारियों को कमोजें डाले, सिर पर बड़ी बड़ी पगड़ियां लपेटे मांझे गाय, और कई सिर्फ बनियाइन और तहमत अटकाए जट.........

कुछ शरीफ आदमी, रिजर्व क्लास कीं खिड़की को घेरे खड़े थे। बरामदे में बहुत सी 'नमकीन' रंग बिरंगी साड़ियां, हरी शाल की तंग बाहों की कमीजें, तंग मोहरी की सलवारें, रंग बिरगे दुपट्टे, कुछ काले, सफेद, बुर्कों में मुंह छिपाए बहुत सी मुंह पर पाउडर, लाली और लिपस्टिक लगाए, इस बात की बाट देख रही थीं कि आया उनके लाहौरियों के लिए—यार, टिकिट खरीदने में सफल हुए कि नहीं।

असग़म की आँखें, एक चूजे पर पड़ीं। उसे पसंद आ गई। काला डिब्बीदार रेशमी कमीज पहिने हुए थी। और

उसके साथ, सफेद क्रेप की सल्वार, जरीदार काली पंजाबी तिल्ले की जूती। तारे मीरे की, चांद तारे वाली निनान की चुन्नी चांद जैसे मुखड़े को इस तरह झलका रही थी, जैसे दूर से हलका बादल पूर्णिमा के चन्द्रमा पर अपना थोड़ा सा प्रतिबिम्ब डाल रहा हो।

वो नैन, वो नक्श, वह गोरा रंग, पिंडलियों तक लटकते हुए नाग रूपी बाल, जो माथे पर चिड़िया और तोते बना रहे थे, कानों में दो दो इंच के कांटे इस तरह लटक रहे थे जैसे बेल पर दो अंगूर के गुच्छे। एक नजर में ही असलम ताड़ गया और पास जाकर उसने जान बूझ कर कन्धे से कन्धा मारा।

नमकीन ने त्यौरियां चढ़ा कर जरा होठों को ऊपर कर छिपे हुए गुस्से से कहा—अंधे को नजर नहीं आता।

असलम ने सुन तो अवश्य लिया होगा, भीड़ में मिल गया। इतने में उसने नमकीन के यार को कहते हुए सुना—'सुरैया—तीसरी लाइन में सीट मिली है।'

हरे रंग की टिकटें देख कर असलम ने फौरन चंडाल चौकड़ी को दो रुपये वाली खिड़की के सामने तोपखाना बनाने का इशारा किया।

दो मोटे मोटे लाले, काली अचकनें, पतली धोतियां, किश्तीनुमा टोपियां पहने, गोगड़ों का जोर लगा कर अन्दर बढ़ने की कोशिश कर रहे थे। जितना ही वे अन्दर जोर लगाते, 'उतना ही उनको उनकी गोगड़े पीछे धकेल देती।

दोनों के बीचो बीच में असलम ने अपना सिर लगाया और सब तोपचियों ने मिल कर जोर का धक्का मारा, तो असलम तीन चार कतारें तो अवश्य एक ही हमले में पार कर गया। गालियों की बौछार पड़ने लगी। पर तोपचियों ने गालियों की कुछ परवाह न करते हुए एक और जोर का धक्का लगाया। इस दफे तोपखाना मोर्चे के बिल्कुल समीप पहुँच गया।

बहुत सी लाल लाल आंखें देख असलम ने जोर जोर से कहा, "सालों को जरा सा भी सब्र नहीं आता। सिनेमा ही देखना है। आज देखें या कल। न मालूम धक्के बाजी में क्या मजा आता है। ओ लालाजी धक्के मत मारो और गोगड संभालो।" भीड़ अब लालाजी की तरफ देखने लगी। और असलम ने खिड़की पर पहुँच कर दो-दो रुपये के चार टिकिट खरीद लिए।

'मिस्टर मेरे लिए भी दो खरीद लेना।' किसी ने लंबा हाथ कर एक दस रुपये का नोट, असलम को पकड़ाया।

किसो ने गुस्से से कहा, 'ओ मिस्टर हटते हो या तुम्हारी मिस्टरी निकालं।'

असलम टिकिट खरीद तो चुका था पर अब सवाल यह था कि बाहर निकला किधर से जाय। चारों तरफ से, हर एक, खिड़की की तरफ धक्का लगा रहा था। इतनी भीड़ को चीर कर वह कैसे बाहर जा सकता था। और, जब तक वह हटे नहीं दूसरा कोई टिकिट नहीं खरीद सकता था।

दूसरी घंटी बज रही थी।

असलम ने सोचा, ऐसा न हो नमकीन के नजदीक की सीट रुक जाय और पिक्चर का मजा किरकिरा हो जाय। असलम ने दोनों हाथ ऊपर किये—एक में टिकिटें और दूसरे में नोट, सिर नीचा कर मस्ताए बकरे की तरह भीड़ पर टूट पड़ा।

दस मिनट के बाद जब वह हांफता हुआ निकला, तो टिकिट तो 'माशहअल्ला' ठीक थे, परन्तु सेठजी की बाकी रेजगारी ला पता थी। उन्हें टिकिट देते हुए, असलम ने कहा, 'आप मुझे अपना पता दे दीजिये, देखिये न भीड़ का क्या किया जाय। अगर ये 'क्यू' बना लें तो सब काम कितनी आसानी से हो जाय।'

'कोई बात नहीं—थैंक्यू।'

यह कह लाला जी तो सीढ़ियों पर चढ़ गये और असलम ने कोट की आस्तीन से नोट निकाल जेब में डालते हुए चौकड़ी को इशारा किया।

पिक्चर शुरू होने में अभी देर थी, क्योंकि अभी सिनेमा पूरा भरा नहीं था। हाल भरना लाजिमी है। सिनेमा के मैनेजर का प्रयत्न होता है कि वह सिनेमा के हाल को भरे और देखने वालों की कोशिश होती है कि वे नीचे से नीचे वाली सीट खरीद सकें। दूसरी घंटी तक छोटी सीटों की खिड़की पर नोटिस लगा रखो 'सोल्ड आउट' छोटे दर्जे वाले, ऊपर के दर्जे की टिकिटें खरीदेंगे और फर्स्ट क्लास वालों को रिजर्व क्लास की टिकिटें खरीदनी पड़ेंगी। जब ऊपर की क्लास नीचे वालों से भर गई, ऊपर वाले नीचे जाने से रहे।

वे अगले शो में जाने के लिए ठहर जाते हैं, या दूसरे दिन के लिए सीट रिजर्व कराने को ताकि उन्हें फिर निराश होकर न जाना पड़े।

तीसरी घंटी बजने और पिक्चर के शुरू होने में बहुत समय था। 'बाल्कनी' के दर्वाजे में खड़े होकर असलम ने चारों तरफ नजर दौड़ाई। चांद तारे वाली, तीसरी कतार में बैठी हुई थी। दाहिनी बगल में उसका यार था और बांई तरफ ए॰ मोटी जोबर कट्टी लाहरी गाढ़े रंग की बड़े बड़े सुनहरे फूलों की बनारसी साड़ी पहिने, विराजमान थी। दायें बायें के मोर्चे भरे हुए थे पर पीछे की सीट खाली थी। चौकड़ी को टूटना पड़ा। राजा साहब और असलम चांद तारे के पीछे, भल्ला और सहगल, कुछ सीट छोड़ कर दूसरी 'रो' में।

तीसरी घंटी बज रही थी। छोटे दामों की खिड़कियों के ऊपर से 'सोल्ड आउट' के फटेट उतार दिये गये और सब मांझे गामें, नट और जटनियां टिकिट खरीदने को टूट पड़े। बड़ी भीड़ थी। किसी माझे ने दूसरे गामे की जेब काटी। उसने तीसरे को मारा और खिड़की के सामने अमावस का दंगल लगा। लड़ाई झगड़ा देख, बहुत सी लालियां घबड़ाईं। उनके छोटे बड़े बच्चों ने, जोर जोर से रोना चिल्लाना शुरू कर दिया। पुलिस आ गई। सिपाही ने दोनों जाटों को जिसकी जेब कटी थी और जिसका सिर फटा था हिरासत में ले लिया।

टिकिटें फिर बिकने लगीं। खेल शुरू हो गया। छोटे दर्जे के दर्वाजे खुले हुए थे, जिनसे भीड़ इस तरह अन्दर आ रही

थीः जैसे बांध का दर्वाजा खोल दिया गया हो। कोई गालियां निकाल रहा था, कोई सीटियां बजा रहा था, कोई दर्वाजा बन्द करने को कह रहा था। स्क्रीन पर खेल जारी था।

सिनेमा में बहुत से लोग तमाशबीनी और इश्कबाजी का मज़ा लूटने जाते हैं। जो अभिलाषा वे स्वयं अनुभव नहीं कर सकते, वह सिनेमा की सफेद चादर पर दो खूबसूरत एक्टर और एक्ट्रेस को देख कर खुश होते हैं। अपने को समझते हैं 'हीरो' और 'हीरोइन' उनकी प्रेम गली वाली माशूका।

सिनेमा में हुल्लड़ सुनकर, मैनेजर ने पांच मिनट के लिए पिक्चर बन्द करवा दी। बत्तियां जल गईं और असलम जैसे खस्ता हालों को फिर नमकीन के खूबसूरत चेहरे को देखने का मौका मिला।

दाहिनी, बांई बगल में बैठकर देखने में बड़ी आसानी होती है। ज्यादा से ज्यादा बीच में यार बैठ पर्दा डालने की असफल कोशिश करता है। पीछे बैठकर तो सिर्फ गर्दन और सिर के बाल ही नजर आते हैं। नमकीन का मुख मंडल दिखाई नहीं पड़ता।

सुन्दर मुखड़े को देखने के लिए यह कोशिश की जाती है कि किसी तरह नमकीन को अपनी तरफ आकर्षित किया जाय।

असलम ने सहगल और भल्ले से जोर जोर से बातें की। कुछ अंट संट बका सामने से चक्कर लगाकर फिर अपनी सीट पर बैठ गया। एक आध दफा तो नमकीन ने उनकी हिमाकत को देखने के लिए गर्दन मोड़ उधर को देखा पर अपने यार की आंखों में नाराजगी देखकर उधर देखना बन्द कर दिया।

सिनेमा की बत्तियां फिर बन्द हो गईं और आध-कटा चित्र-पट बीच से ही शुरू कर दिया गया। सब लोग खेल देखने में लगे थे और असलम सोच रहा था कि किस तरह नमकीन को छू सकें। जिस चीज़ को पाने की आशा न हो, जिस सुन्दर वस्तु का अपहरण न किया जा सके वह, निराश आंखों में और भी ज्यादा कीमती, और सुन्दर प्रतीत होती है। उसको छू लेने से, निराश दिल को थोड़ी सी खुशी तो अवश्य होती होगी।

लाहौर के सिनेमा थियेटर का एक उसूल है—थोड़ी से थोड़ी जगह में ज्यादा से ज्यादा सीटों को घुसेड़ना और सीटों को इतना सख्त बनाना कि आधे से ज्यादा ख्याल उनको कोसने में लगा रहे और चित्र पट को देखने के लिए फिर आना पड़े। किसी भी चित्र पट को आप दिलभर कर नहीं देख सकते। तीन चौथाई तो देखने की बात नहीं होती। जब देखने सुनने की बात होती है तब या तो धनदेवी का लड़का रोना शुरू कर देता है या मशीन खराब हो जाती है या अगली क्लास में फिर लड़ाई शुरू हो जाती है।

पैसा पहले, आराम पीछे, पर पिछली सीटों में भी आराम मिलने की आशा नहीं होती। दो रुपये की रो में भी इतना फासला नहीं होता कि आराम से टांगे फैला सके। जब गोगड वाले लाले खास कर लाली जी बीच से होकर गुजरना चाहें, या तो टांगें उठा सिर पर रखो या टांगों पर रोलर फिरवाओ।

असलम पिक्चर देखते देखते थक गया। उसने अपनी टांगें पसारी और उसका पैर चांद तारे की रेशमी सलवार से रगड़ा। उस रगड़ से इतनी बिजली पैदा हुई जो शायद दिल से लगने से भी न होती।

नमकीन ने कुछ नहीं कहा। उसका यार, उसके सिर के पीछे से उसकी गर्दन के गिर्द हाथ डाल कर प्रेम से बैठा हुआ था। असलम को यह रोमांचक घटना देखकर जोश और जलन हुई। उसने टांगें पसार अपने पैर से, चांद तारे की टांग को रगड़ना शुरू किया।

किसी ने कुछ नहीं कहा।

एक जगह 'शूटिंग' खराब होने के कारण, कुछ रोशनी खराब थी, यार ने न मालूम क्यों चांद तारे की गर्दन के गिर्द से बांह उठाकर उसकी गोद में रख दी।

तमाम हाल में शोर हो गया। नमकीन ने समझा कि किसीने उसके गले का लाकेट उतारने की कोशिश की। उसने चीख मारते हुए कहा—'हाय मेरा लाकेट'।

हाल की बत्तियां फिर जल गईं। अगली सीट के सब जाट बेंचों पर खड़े होकर 'रिजर्व क्लास' की तरफ देखने लगे। चित्र पट जारी रहा।

गर्दन में लाकेट देख नमकीन शर्मा कर फिर कुर्सी पर बैठ गई। यार भी झेंप कर बैठ गया।

'हाथ क्यों नहीं पकड़ लिया।' असलम ने ताना दिया।

यार ने असलम की तरफ देखा, बत्तियां फिर बुझ गईं

और फिर सब चित्र पट देखने लगे।

आध घंटे के 'इंटरवल' में दोनों ने दिल भर भर कर चांद तारे को देखा।

गंडेरी वालों से गंडेरी लेकर चूसीं। मूंगफली और फर्शपर छील छील कर फेंके, कइयों ने लामलेट पी। चित्रपट फिर शुरू हो गया।

खतम होने के बाद जब चंडाल चौकड़ी इकट्ठी हुई, तो सहगल साहब ने कहा, 'बहुत बचे'।

'बाल बाल बच गया, पर वो मजा आया कि क्या कहने।'

'अकेले ही अकेले मजा ले लिया।'

'सफा झूठ बोल गई—लाकेट।'

'तो तुम्हारा मतलब है कि सबके सामने·········'

'चुप चाप बैठी रहती'

'फर्क क्या था मेरा हाथ या उसका। हाथ चाहिए।'

'खूब,'

'दबाने से मतलब'

'साले, सिनेमा देखने आते हैं या सिनेमा करने।'

'बहुत जोर से दबाया होगा'

'जो समझो।'



मुंह दिखाई

सिनेमा का पहला शो कोई दस बजे के करीव खतम हुआ। कालेज के होस्टल में इस समय खाना मिलना तो असम्भव था इसलिए साहब जी ने राय दी कि अनारकली चल कर कबाव और सीखें उडाई जायं। तांगे वाले गला फाड़ फाड़ कर पुकार रहे थे, 'हीरामंड़ी-स्टेशन', 'हीरामंडी'

भल्ले ने तांगे वाले को आवाज लगाकर पुकारा। उसने वहीं से पायदान पर खड़े होकर पूछा, 'लाला जी कहां चलोगे'

'जहां ले चलो'

तांगे वाला अन्दर ही अन्दर थोड़ा सा मुस्कराया।

'कोई शिकार विकार है'

'जितने कहें।'

चारो तांगे की तरफ बढ़े, भल्ला ने असलम से कहा 'ठहरा लो।'

'घन्टे के हिसाब से दे देंगे, वरना तो बहुत मांगेगा।'

चारो जने तांगे में बैठने लगे।

'कहां चलिएगा।'

चारो ने एक दूसरे की तरफ देखा।

'तुम्हारा रेट क्या है'

'रेट वेट में नहीं ले जाऊंगा'

'अच्छा सैर कराओ।'

'चार रुपया लूंगा।'

राजा साहब और भल्ला पिछली सीट पर, साहब और असलम अगली सीट पर। असलम एन तांगे वाले से लग कर—

'तुम्हारा क्या नाम है'

'मेरा नाम फकीरा।'

'फकीरा तेरा तांगा तो बहुत अच्छा है।'

'फष्ट क्लास है साहब पिछली मंडी च घोड़ी ढ़ाई सौ नु खरीदी सी। मैं खुद चलांद हां नौकर दो दिन च मिभ कढ़ के रख देंदे हन।'

घोड़ी अपनी तारीफ सुन कर थोड़ी सी हिनहिनाई और असलम ने सीदी साधी बात को समझ कर थोड़ा सा सिर हिलाया।

'किधर चलना है लाला जी।'

'देख भई फकीरा। कोई फस्ट क्लास चीज है तो ले चल। वरना सारा वक्त खराब न कर।'

'असलम, संतराम की दूकान तो बन्द हो जाएगी। पहले पेट का इंतजाम तो कर लो।'

'ठीक है, खाली पेट तो कुछ नहीं हो सकता'

'फकीरा संतू दे ले चल।

'अनारकली'

'हां खा पीकर फिर चलेंगे।'

फकीरे ने तांगा मैकलोड रोड से निसबत रोड की ओर मोड़ा तो, चारों ने ऊंची फटी आवाज में गाना शुरू किया।

'टाली दे थल्ले बहके, हां बहके
ओ माइया वे ओ माइया'

सिनेमा से लौटने वालों ने, सड़क पर चलने वालों ने उनकी तरफ देख कर कहा, 'वाह - वाह' भल्ला और राजा साहब जो पीछे बैठे हुए थे, उन्होंने मुंह बना, हाथों के इशारे कर यह ज़ाहिर करने की कोशिश की – हम उल्लू के पट्ठे हैं ।

चंद मिनटों में तांगा अनारकली पहुँच गया । दस साढ़े दस बज चुके थे पर अनारकली रंग रूप के यौवन में इठला रही थी । कोई आ रहा था कोई जा रहा था और किसी को पता नहीं था कि क्या हो रहा है । तांगे, मोटरें, आदमी औरतें सब इकठ्ठे, एक साथ यौवन का मजा लूटना चाहते थे पर हाथ किसी के कुछ न आता था ।

संतराम की दूकान पर बड़ी भीड़ लगी हुई थी । उसकी सीखें और कवाब, उसकी टिक्कियां और चापें, सारे पंजाब में मशहूर हैं ।

'क्या क्या मगांऊं……

'अन्दर चल कर आराम से खायेंगे'

'ख्याल तो नेक है ।'

चारो उतर कर चूल्हे की आग को सेकते हुए, कुर्सियां, मेजों, के बींच से गुजरते हुए अन्दर दालान में जाकर एक मेज के गिर्द वैठ गए । मेज पर कुछ घी, प्याज, और कुछ गोश्त के टुकड़े और हड्डियां पड़ी यह बता रही थीं कि बाजार गर्म है ।

'कोई है ?'

'मुंडू मेज साफ कर।'

एक पूर्विया गंदी टोपी, गंदी धोती और गंदी बनियायन डाले बालों में चमेली का तेल लगाये, गंदा तौलिया कन्धा पर लटकाये, बड़ी लापरवाही से उधर आया।

'सरदार जी क्या लाऊं'—पूछने के साथ साथ उसने तौलिये के साथ मेज को भी साफ कर दिया और मेज की सजावट ने फर्श को सुशोभित किया। नीचे कौन देखता है। ऊपर मेज साफ होनी चाहिए।

'दो प्लेट सीख'

'एक कबाब'

'एक टिकिया'

'महा प्रसाद लाऊं।'

'मुर्गे की एक प्लेट'

'टांगें लाना'

'सरदार जी सब टांग मांगते हैं और मुर्गी की होती हैं सिर्फ दो टांगें।'

'टांग नहीं तो सीना ले आना।'

'कुछ पीने को है'

'क्या चाहिए'

'बीयर'

'न भाई असलम बीयर नहीं पीयेंगे। यह शराब वगैरा पीना अच्छा नहीं लगता' सहगल ने कहा।

'बीयर भी कोई शराब है'

'बीयर तो मोटा करती है'

'हां, हां बिना बीयर का खाने का क्या मजा ।'

'पैसे दे दीजिए, मैं सब ले आता हूँ ।' बहुत धीरे से पूर्विये ने कान में कहा, 'आठ आना ज्यादा लगेंगे ।

सबने एक दूसरे की तरफ देखा। सबने जेब में हाथ डाले । राजा साहब अपनी पदवी की किस तरह हतक करवा सकते थे । उन्होंने ही सबसे पहले जेब से हाथ निकाला और दस रू० का नोट पूर्विये को देते हुए कहा । 'आलासोव या टेनेंट लाना ।

'देशी मिलेगी ।'

'देशी'

'देशी ?'

'अच्छा देशी ही ले आओ ।'

'मरी लाना, अगर मरी न मिले तो सोलन ले आना ।'

'सरदार जी जो मिलेगा वही ले आऊंगा ।'

'हां, यही तो मैं भी कह रहा था ।'

पूर्विया दालान में कुर्सी मेजों से गुजरता हुआ चूल्हे के पास एक ही आवाज में कहता हुआ गया 'दो सीख, एक कबाब, एक टिकिया, एक मुर्गा नम्बर चार ।'

मेज के गिर्द बैठे हुए चारो दोस्त सोचने लगे कि जब तक बीयर और खाना आता है तब तक क्या किया जाय । सबने दालान के चारों तरफ नजर दौड़ाई । दाहिने कोने में एक

टेबिल पर एक सरदार साहब लहरियेदार गुलछरें वाली पगड़ी बांधे हुए सीखें छक रहे थे । दूसरे कोने में सिनेमा वाले लाला जी, बड़े थाल में भोजन कर रहे थे, एक दो जोड़े थे, पर वे मुर्गियों की तरह छोटे छोटे कठघरों में बन्द, गंदे नीले पर्दों के पीछे छिप छिप कर न मालूम क्या कर रहे थे । सब कहते थे कि वे खाना खा रहें हैं । पर असलम मानने को तैयार न था ।

'हम भी तो खाना खाने आये हैं······छिप छिप कर खाने का क्या मतलब'

'तुम्हारी नजर न लग जाय ।'

'यह खूब कही ।'

'और कुछ नहीं तो ताड़ ताड़ कर ही देखोगे ।'

'मेरी समझ में नहीं आता कि ताड़ कर देखने में क्या गुनाह है ।

'कल छः मासी की परीक्षा है ।' सहगल ने जिसका दिमाग किसी और दुनिया में चक्कर खा रहा था, कहा :

'तुम्हें तो इम्तिहान की ही पड़ी रहती है'

'फर्स्ट ईयर में कौन फेल रहता है ।'

'ज्यादा से ज्यादा कंडीशन लग जायगी, वह तो अगर हम पास भी कर लें, तो भी लिस्ट में नाम सबसे ऊपर होगा ।'

'फिर परवाह क्या'

'परवाह करोगे मरोगे'

'परवाह न करोगे मरोगे'

'तो परवाह क्यों न करो ।'

'तुम्हारा मतलब :

'पठतव्यं तो भी मरतव्यं,
न पठतव्यं सो भी मरतव्यं,
तब दंत कटाकट
किं कर्तव्यं ।'

'हां, हां हां' सरदार जी ने कहा, जिनकी समझ में कुछ न आया था ।'

पूर्विया बीयर को चार बोतलें हाथों में और दो बगल में दवाए आ पहुँचा । और राजा जी की तरफ़ ढाई आने के बचे हुए पैसे, बढ़ाते हुए कहा 'सरदार जी, बड़ी मुश्किल से लाया हूं ।'

सरदार जी ने ढाई आने के पैसे वापिस लेना हतक समझा और बड़ी दिलेरी से कहा, 'तुम ले जाओ ।' पूर्विया दौड़ता हुआ सीखें और कवाब लेने के लिए चला गया और चंडाल चौकड़ी के चारो चंडालों ने बीयर की देशी बोतलें खोल कर पीनी शुरू की ।

'मैं तो थर्ड शो के लिए जाना नहीं चाहता'

'वह क्यों साहब जी'

'मुझे तो कुछ मजा नहीं आता ।'

'वह कब से'

'जब से पंडित जी की लड़की पर आंख लगी है' भल्ला ने कहा ।

'नहीं, मुझे तो वैसे ही नफरत है । जिससे मुहब्बत न हो........'

'महात्मा जी कब से बन गए'

'सौ चूहे खाके बिल्ली हज को चली ।'

'चलना हो पड़ेगा, वरना पार्टी का मजा किरकिरा हो जायगा ।'

'साहब जी तो मजाक करते हैं ।'

पूर्विया प्लेटों में सीखें और कबाब लेकर आ गया । चंडाल चौकड़ी ने दिल भर कर खाया पिया और छका ।

संतराम की मसालेदार सीखें और कबाब, किसे स्वादिष्ट नहीं लगते । लाल चटनी और प्याज खाकर स्वाद नहीं आता । अगर मिर्चें लगें तो बीयर का घूंट पी लो ।
खूब झूमते झामते चारों बाहर निकले । भल्ले ने तांगे वाले को आवाज लगाई, उसने फिर से सवाल पूछा

'किधर'

उन्होंने वही जवाब दिया 'जिधर......

'कोई यूरोपियन है'

'है तो राय साहिब, कमाल की चीज है। पर बड़ी कोशिश से मिलती है पहले ही लग जाती है । एम्प्रेस रोड पर एक करंटा आई है कहिए तो वहां ले चलूं ।'

'नहीं करंटी नहीं ।'

'मेम तो है ?'

तांगे एम्प्रेस रोड की तरफ चला दिया ।

तांगे वाले ने तांगा दयालसिंह होस्टल के सामने खड़ा किया और उतर कर सामने के एक उजाड़ से बंगले में गया।

'बंगले में रहती है, अच्छी चीज होगी।'

'क्वार्टर भी तो होते हैं,' सहगल ने जोर दिया।

तांगे वाला हाथ लटकाये हुए आ गया। 'कमाल की चीज है, पर रुकी हुई है। मैं दो चार सवारी रोज लाता हूं। कल मैं आप जैसी दो चार कालेज की सवारियां लाया था।'

'अब'

'एक और चीज है, बहुत खूबसूरत, बहुत...'

सबके मुंह से लारें आ गई।

'बहुत अच्छी सी चीज दिखाओ...फिर...'

'चलिये इधर ले चलता हूं। वहां एक कमाल की चीज आई है।'

'देखो मुफ्त में चक्कर मत लगवाना। अगर अच्छी चीज है तो ले चलो वरना......'

'इधर में, वो गली में, बिजली के खंभे के सामने वाले मकान में...'

'नहीं, नहीं, वह भी कोई चीज है, खां साहब, उसको देखेंगे तो आंखें खुल जायंगी।'

'कोई सत्रह अठारह वर्ष की होनी चाहिए।'

'सोलह वर्ष की लीजिये।'

जेठ लाए बुढ़िया,
देवर लाए जवनिया,

मजा करे रे
साढ़े सोलह वर्ष की ।

सबने कालेज के ब्लेजर उतार, मोड़ कर नीचे रख लिए और इछरे की तरफ चल दिये। सब चुप थे। सबके दिल आशा, विलास, और कुछ भय से धड़क रहे थे, जैसे कच्चे चोर का दिल चोरी करने से पहले।

इछरा लाहौर की एक छोटी सी आबादी है। अब तो 'लाहौर कारपोरेशन' के शिकंजे में आ जाने के कारण उधर भी दया दृष्टि हो जाने की आशा की जा सकती है, पर आठ दस साल पहले, बेहतर होता यदि हम उस आबादी का नाम इछरा की बजाय कचरा रख देते—लाहौर की सब गंदी वहां जमा होती थी और पास से गुजरता था गंदा नाला।

इस आबादी में मध्य श्रेणी के लोग रहते थे, जिनके पास लाहौर या उसके पास की नई आबादियों में मकान बनाने के लिए पूंजी न थी। और थोड़ी सी पूंजी में निज का मकान इछरे में ही गंदे नाले के करीब बनाया जा सकता था।

'इछरा लाहौर से माडल टाउन जाने की सड़क की दाहिनी तरफ बसा हुआ है। तांगा सीधा हाल से गुजरता हुआ शहर का आधा चक्कर लगा इछरे के चौराहे पर हलका हो गया। ११-११॥ बज रहे थे। सड़क पर आमद-रफ्त कम थी। चौराहे पर पुलिस वाला न था। चुंगी का दरवाजा बंद था। यहां तक कि बी० ओ० सी० के पेट्रोल का पंप वाला जिसकी कोठरी के ऊपर मोटे अंग्रेजी अक्षरों

में लिखा था—यह चोबोसो घन्टा खुला रहता है—कोठरी का दरवाजा बंद कर बत्ता बुझा, सो गया था ।

तांगा नाम के अंधेरे में जाकर खड़ा हो गया । फकीरे ने घाड़े को रास पायदान में डालते हुए कहा, 'मैं अभो आया ।'

'यह तो वही बिजली के खंभे वाला मकान है ।'

'नहीं खां साहब नहीं, मैं तो दाहिनी गली में जा रहा हूँ ।'

'तुम पहले कभा इधर आए हो असलम ।'

'अगर वही चीज निकली तो घटे का किराया नहीं देंगे ।'

'शायद कोई नई चीज आई हो ।'

'यहां तो वे ही आती हैं, जो हीरा ..'

'नहीं, यहां तो शरीफ घराने की आती हैं ।'

'शरीफ घराने वालियों को भला क्या जरूरत'

'तुम्हारा मतलब कि हम शरीफ घराने के नहीं हैं'

'यह कौन कहता है'

'शराफत आर रंडाबाजी, ये दो अलग अलग बातें हैं । अगर इन्हें पैसे ही कमाने हों तो हीरामंडी में नहीं जा सकतीं, शराफत और शर्म '

'आखिर ये वेश्या वृत्ति करती क्यों हैं'

'पैसे कमाने के लिए ।'

'तो, यहां का, या वहां की, वेश्या को हम वेश्या ही कहेंगे ।'

'सहगल तुम अंट संट मत बका करो ।'

फकीरा दो माझे गामों को साथ लेकर सामने से आता नजर आया ।

'असलम तुम देख कर आना'

'भल्ला साथ चले।'

दोनों माझे गामे गंदे कपड़े पहने, मुंह पर दो दिन की दाढ़ी उगी हुई, आंखो में पर बदमाशी –तांगे के पास आकर खड़े हो गये। तांगे वाले ने परिचय के तौर पर कहा, 'लो बात कर लो।'

'चलिये, अन्दर चलकर देख लीजिये।'

'कोई अच्छी चीज हो तो चलें'

'अपनी पसन्द की बात है।'

'चौदह वर्ष की, रंग गौरा……'

'फिगर'

'फिकर विकर आप कुछ न करें, लालाजी प्राइवेट है प्राइवेट, कोई डर नहीं।'

'देखो आओ,'

'पसंद आयेगी, ठहरेंगे, वरना ..'

'तुम जाओ,

'तुम भी साथ चलो,'

आखिर असलम और भल्ला, इस बात के लिए तैयार हो गये कि अंदर जाकर देख आवें कि कौनसी प्राइवेट हूर उनका इंतजार कर रही है।

जैसे ही वे चलने लगे, माझे ने कहा :

'मुंह दिखाई,'

'कह तो दिया, पसन्द आएगी तो ठहरेंगे वरना…'

'हम जियेंगे कैसे'

'कितने'

'सिर्फ दो रुपये।'

अब असलम ने लालाजी के खिसकाए हुए रुपयों में से २ रु० निकाल कर माझे को दे दिऐ।

सहगल साहब राजा साहब के साथ तांगे में रह गए। 'चंचल, मुझे तो यह अच्छा नहीं लगता। जिससे मुहब्बत न हो, जिसे जानते न हों।'

'पर मुश्किल तो यह है, जवानी चैन नहीं लेने देती।'

'तो क्या हम इतने कमजोर हैं कि अपनी जवानी को काबू में नहीं रख सकते।'

'नहीं नहीं, इसमें कमजोरी कैसी, चार दिन की जवानी होती है, उसके भी मजे न लूटेंगे तो कब लूटेंगे।'

'पर मजा कभी कडुवा न कर दे।'

'बस चुप रहो,'

'मजा और कडुवा, बड़ी देर लगा दी'

असलम और भल्ला ने कमीज की कालर के कान ऊपर उठा, गर्दन को छिपाया और टोपियों की कार्निश को नीचे कर अपने चेहरे को छिपाने की कोशिश की।

छिपाने की जरूरत क्या थी !!!

बुरा काम करने जा रहे हो, तब बुराई से डरना क्या। चोर यह जानते हुए भी कि चोरी करना पाप है, चोरी करता है। असलम और भल्ला शायद जानते हुए भी नहीं जानते थे

कि, वे बुरा काम करने जा रहे हैं। बुराई को जानना ही आचरण नहीं कहला सकता। आचरण की कमजोरी या मज़बूती कर्म से प्रकट होती है। दोनों कामनाओं के गुलाम बने हुए हुस्न फरोशी के दलालों के पीछे बेदलील होकर चल दिये।

गली में बहुत अंधेरा था। किसी किसी मकान से घासलेट की एक दो बत्तियों की रोशनी पड़ रही थी, गली कच्ची थी और बीचों बीच छः इंच गहरी नाली गुजरती थी, जो काले गलीज से मुंह तक भरी हुई थी। मकानों की बुनियाद ३ फुट ऊंची होगी और चढ़ने के लिए सीढ़ी, गली के बीचों बीच फालतू जमीन पर बनाई गई थी, ताकि रात में अंधेरे में आने ज़ाने वाले, सीढ़ी से टकरा कर नाली में गिरें और बनाने वाले और उनके मां, बाप को जिन्होंने बनाने वाले को बनाया दिल भर कर गालियां दें।

गली में मकान इक मंजिले थे—कइयों के सिर्फ ढांचे ही बने हुए थे और छत डालने की कोई तारीख मुकर्रर नहीं हुई थी। दर्वाजों पर फटी बोरियों के टाट पड़े हुए, अन्दर की गरीबी को छिपाने का व्यर्थ प्रयत्न कर रहे थे।

एक मकान के बन्द दरवाजे के सामने माझा रुक गया। माझे ने दरवाज़ा खटखटाते हुए कहा, 'खोलो' किसी ने थोड़ा सा दर्वाजा खोलकर अन्दर से बाहर को झांका।

चारो अन्दर चले गये। पीछे से माझे ने दर्वाजा बन्द कर दिया। कमरे के एक कोने में घासलेट की एक बत्ती जल

रही थी। उसकी टूटी हुई चिमनी से काला धुआं निकल रहा था। कमरे में सिर्फ इतनी ही रोशनी थी, जिसमें देखा जा सके। दूसरे कोने में एक चारपाई थी जिसकी मूंज की बिनावट कई जगहों से टूट कर खोले बना रही थी। सामने वाले दर्वाजे पर बोरी का पर्दा पड़ा हुआ था।

सब खामोश थे।

गामा अन्दर गया और गायब हो गया। एक औरत और आदमी के धीरे धीरे बातें करने की आवाज सुनाई पड़ी। फिर अन्दर से किसी ने जोर से कहा : 'जा अपने ही आदमी हैं,'

सामने की बोरी थोड़ी सी हिली।

भल्ला ने सोचा······बस !

असलम ने सोचा············वाह !

अंधेरे में बोरी को उठाते हुए, एक अधेड़ उमर औरत ने, जिसने अपने माता के दागों को पाउडर और लाली के पलस्तर के नीचे छुपाने की बहुत कोशिश की थी कमरे में प्रवेश किया। उसने कुछ शर्मिंदगी और कुछ लालच से दोनों ग्राहकों की तरफ देखा। और एक ही दफा जलवा दिखाकर फिर बो.ी के पीछे गायब हो गई।

'कहिये,' गामे ने कहा

'ठहरिये'। माझे ने पूछा।

असलम ने भल्ले की तरफ देखा।

'बाहर चलो,' भल्ले ने कहा।

भल्ला जी तो पहले ही दर्वाजे की ओर चल पड़े, पर जब

असलम ने मुंह मोड़ा, माझे ने रोकते हुए कहा, 'दिखाई के पैसे'।

'दो रुपये तो पहले दे दिये।'

'वे तो हमारे थे, इसके ?'

'तुम्हारी मुंह दिखाई'

'न ठहरे। मुफ्त तैयार कराया, तेरी रन लगदी है', एक मोटी सी औरत ने अन्दर आकर कहा।

'चलो तांगे पर चलकर देंगे,' भल्ले ने गली में से पुकारा।

सब तांगे की तरफ बढ़े। राजा साहब और सहगल बड़ी परेशानी से इंतजार कर रहे थे। इतनी देर लग गई, जरूर पसंद आ गई होगी। कहीं असलम अकेला ही हाथ न फेर जाय। यह कैसे हो सकता है।

उन दोनों को देखते हुए, असलम ने लम्बा सा बेसुरा मुंह बनाया......

'क्यों.........'

बिना कुछ जवाब दिये दोनों तांगे की अगली सीट पर बैठ गए। अब ये चार थे। कुछ हिम्मत आई। सिर्फ १ रु० गामे को देते हुए असलम ने फकीरे को कहा :

'होस्टल चलो'

रास्ते में राजा जी ने पूछा, 'मामला क्या बना'

'आधे दर्जन बच्चों की मां होगी।'



दो इम्तिहान

छः माही का इम्तिहान नजदीक था और चंडाल चौकड़ी के किसी मेम्बर को पढ़ने की परवाह न थी। दोपहर को क्रिकेट देखी जाती, शाम को अनारकली और रात को थर्ड शो शरीफ लोगों के लिए, शरीफजादों ने एक अलग बाजार खोल दिया है। जहां शरीफजादे अपने आप को उल्लू बनवाते हैं।

जिस किसी वेश्या का काम हीरामंडी में नहीं चलता, उसे उसके संरक्षक 'प्राइवेट' बना देते हैं। प्राइवेट वेश्या वृत्ति के अड्डे लाहौर के कोने कोने में हैं और उनके एजन्ची हैं— लाहौर के तांगे वाले। मर्दाना सवारी को देखकर और खास कर जब आपने कालेज का 'ब्लेजर' पहना हो, उनका पहला सवाल होगा, 'कहां ले चलूं' अगर आप ने वैसे ही कोई उल्टा सीधा जवाब दिया तो दो घंटे इधर उधर घुमा कर ऐसे ही एक अड्डे में आप को पहुँचा देंगे।

लाहौर के शरीफजादे प्राइवेट रंडीबाजी करना सभ्यता समझते हैं परन्तु हीरामंडी में जाना असभ्यता। क्योंकि यदि चोर को चोरी करता हुआ देख लिया जाय तो उसे हम चोर ही कहेंगे। परन्तु प्राइवेट वेश्यावृत्ति के अडे पर शरीफ जादों को चोरी करता कौन देखे। अगर किसी दिन पुलिस ने गलती से अड्डे पर छापा मारा, तो शायद गलती से आप लाहौर के पैसा अखबारों में एक खां साहिब, सरदार साहिब

दो चार मोटे लाला जी और आधे दर्जन कालेज के लड़कों का नाम देख लेंगे ।

पुलिस छापा कभी कभी मारती है, वह भी अगर नाके के थानेदार को बंधा हुआ रोज़ाना न दें । अकसर तौर पर तो उनका एक आदमी 'सफेद पोश' अड्डे के दरवाज़ों पर बैठा रहता है और अड्डे में आने वालों की गिनती करता रहता है। जिस दिन 'चार्ज ने २ रु० प्रति मनुष्य के हिसाब से न दिये, दूसरे दिन ही हथकड़ी लगवा दी । आम तौर पर तो उसकी इतनी हिम्मत ही नहीं, छापे तो 'पब्लिक' की आंखों में धूल झोंकने के लिए मारे जाते हैं।

जिस दिन सफेद पोश थानेदार साहब को जाकर खबर देता है कि कोई मोटा आसामी आ फंसा है, किसी बड़ी संस्था के सभापति, किसी बड़े जत्थे के जत्थेदार, किसी लीग के वाइस प्रसिडेंट, लाला जी जिन्हें अपनी लाली का डर है, देखिए, पुलिस कितनी जल्दी छापा मारती है । एम्प्रेस रोड का अड्डा उठ कर निकलसन रोड पर चला जायगा और तबादले की खबर बेतार के तार से आसानी से सारे तांगे वाले को दे दी जायगी । सरदार साहब, लाला जी और खां साहिब जिनकी जेब भरी होगी वे तो रात अपने घर में और जिनकी जेब खाली होगी वे थाने की हिरासत में, हवाखोरी करेंगे । अगर और भी ज्यादा रुपया इकट्ठा करना हो तो सब ग्राहकों की, अड्डे के सामने फोटो ले लो, उस फोटो को दिखाकर भी बहुत से पैसे इकट्ठे किये जा सकते हैं ।

अक्टूबर के दिन थे। पूर्णिमा की चांदनी थी। बहुत अच्छा मौसम था। असलम ने राय दी कि 'मून-लिट नाइट' की 'बोटिंग' के लिए रावी चला जाय।

'पर छीमा साहिब कब इजाजत देंगे।'

'खूब मजा तो तभी है, जब बिना इजाजत के चला जाय।' असलम ने कहा

'पर मैं तो नहीं जाऊंगा' सहगल बोले।

'क्यों, यह भी कोई पाप है। बेटा सहगल, हिन्दुस्तान के मशहूर शायर भी कालेज होस्टल से रात को खिसक कर बोटिंग तो छोड़ो, नाच गाना सुनने हीरामंडी जाया करते थे।'

'मुझे तो ठंढ लगती है। जब तक कोई गरम मसाला नहीं होगा, मैं तो नहीं जाऊंगा, राजा जी बोले।

'यह काम असलम का, हां भाई असलम, जब तक कोई गरम मसाला न हो तो रावी में डूबने की क्या जरूरत'

'काम तो मुश्किल है, पर कोशिश करूंगा।'

'पैसे की कोई परवाह न करो—राजा जी।'

'हां, हां, अच्छी चीज होनी चाहिए।'

दूसरे दिन मूनलिट नाइट पिकनिक का फैसला हो गया। भल्ला ने राजा साहब के 'बजट' से ५० रु० असलम को 'एडवान्स' दे दिये। शाम को असलम तो पहले चला गया क्योंकि उसे सब बन्दोबस्त करना था और जब होस्टल के प्रबन्धक सो गये तो तीनो ने, राजा जी की नई पगड़ी और बिस्तरे की चादरों की रस्सी बनाई और होस्टल की तीसरी

मंजिल की खिड़की से होस्टल की चार दिवारी से आजाद हो गए। निचले सिरे से पतली रस्सी बंधी हुई थी, उसके खींचने से रस्सी ऊपर चली गई। किसी को शक भी नहीं हो सकता था कि 'ब्रांस्टल' जेल के भावी मेहमान आने की तैयारियां कर रहें हैं।

तांगे में बैंठ, तीनों लाहौर की एक बाहर की आबादी में गये जहां असलम उनका इन्तजार कर रहा था। अंधेरे में असलम को एक लड़की के साथ खड़ा देख कर राजा जी ने भल्ले की चुटकी लेते हुए कहा, 'आज तो काम बन गया।'

मनमोहन सहगल खुद बखुद, पिछली सीट से उठ कर अगली सीट पर बैठ गए और असलम ने थोड़ा सा मुस्कराते हुए 'मूनलिट नाइट' की बोटिंग को मजेदार बनाने वाली मजेदार चीज को राजा जी के साथ पिछली सीट पर बैठा दिया।

रावी के किनारे बहुत से बोट क्लबों की बहुत सी किश्तियां पड़ी हुई थीं। रखवाली करने वाला कोई नहीं था। एक किश्ती में पांचों बैठ कर बोटिंग का मजा लेने लगे।

'बादशाहो गाना सुनाओ'

लड़की ने कोई जवाब नहीं दिया।

राजा साहिब सीट से उठ कर, बादशाहों के पास बैठ गये। किश्ती थोड़ा सा हिली। असलम ने राजा जी से कहा 'पहली दफा आई है, हाथ मत लगाना।'

पर राजा साहब, राजा कैसे जो अपने सेक्रेटरी का कहना मानते, उन्होंने अपना हाथ बढ़ा दिया। बादशाहों ने हाथ झटका कर हटाते हुए कहा 'मुझे घर वापस ले चलो। जब राजा जी ने यह डरावा सुना, उन्होंने अपना हाथ काबू में ही रखना अच्छा समझा। और कुछ नहीं तो दिल खुश करने के लिए ही काफी है। छोटी उमर, गोरा रंग, नाजुक बदन......

रात को बारह बजे से लेकर, सुबह तक बोटिंग होती रही। सहगल तो १२॥ बजे ही सो गये। भल्ला और असलम, किश्ती चला रहे थे और राजा जी की गोद में बादशाह सलामत, मक्कारी से झूठ मूठ आंखें बन्द किये लेटे हुए थे।

किनारे पर तांगे वाला, इस डर से कि वह सो न जाय और तांगे का घोड़ा खोल, कोई ले न जाय, ऊंची आवाज में बारिश शाह की हीर गा रहा था:

डोली चढ़दियां मारियां हीर चीकां,
मैनं ले चल्ले वावला, ले चल्ले।

गाने को सुन कर, भल्ला साहब की राग रागिनी भी जाग उठी और उन्होंने सहगल (चंडाल चौकड़ी वाले नहीं की नकल करते हुए गाया:

बाबुल मोरा नैहर छूटी जायरे,
चार कहार मिल, मोरी डोरिया सजावे री,
बाबुल मोरा ......छूटी जाय रे।

तांगे वाले ने भी सुना. वह कैसे पीछे रह सकता था। हीर की कुछ और 'लाइनें' याद आ गईं और उसने और भी गला फाड़ कर गाया :

चिट्ठी लिखी भाभियां रंझेटडे नूं,
मुड़ आ, तू लटकन्दड़ा करहीं पा फेरे,
जेहडे फुल्ल दा नित तूं रहें राखा,
आस फुल्ल नूं तोड़ ले गये खेडे,
की हुन्दा ए बसा क्यारियां दा,
अंवें लोक निकम्मडे पये करन झेडे।

असलम को उसका जवाब याद आ गया, उसने अपनी पठानी आवाज़ में गाया :

भाभी खिज़ांदी रुत जां आन पुन्नी,
भौहरे आसरे ते पये, जाल देनी,
सेवन बुलबुलां, बूटियां, सुथिकयां नूं
फेर फूल लगन नाल डास देनी,
असीं जदों, कदों उना पास जाना,
जेहडे महरम, असाडे हाल दे नी।

इस वेताल की झंकार को सुन कर सहगल साहब जाग उठे, उन्होंने पूछा 'क्या वक्त है—पहली घंटी बज गई।

किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। सिर्फ भल्ला साहब ने जोर की उबासी ली। असलम ने किश्ती किनारे लगा दी और बादशाह सलामत राजा जी की गोद से उठ कर बैठ गए।

जब तांगा आबादी के पास पहुँचा तब असलम ने कहा, 'चलो तुम्हें घर पहुँचा आवें।'

लड़की ने जरा नाराजगी से कहा 'मैं इस वक्त घर कैसे जा सकती हूं।'

'चलो होस्टल ले चलें. राजाजी ने सलाह दी।'

'सरदार जी। मैं तां शहर दे विच पांच सवारियां बिठा के नहीं ले जावांगा।'

'इस वक्त कौन सा पुलिस वाला पकड़ेगा, धेली ज्यादा ले लईं।'

तांगे वाला फिर चल पड़ा।

चंडाल चौकड़ी के चारो बन्दरों के लिए रस्सी पकड़ तीसरी मंजिल पर चढ़ जाना मामूली बात थी। पर मुश्किल यह थी कि बादशाहां को कैसे चढ़ाया जाय। सब चढ़ने को कहते थे, वह मानती न थी। बड़ी मुश्किल से मनाया गया। असलम और भल्ला पहले ऊपर चढ़ गये। उसकी कमर के गिर्द रस्सी बांधी गई और नीचे से राजा साहब और थोड़ी सी सहगल ने मदद की।

छीमा साहब की कान में शायद कुछ आहट पड़ी, बत्ती जला, खिड़की से झांका, किसी को न देख, बत्ती बुझा फिर सो गए।

असलम ने सहगल को मंगतू को बुलाने को भेजा। वह बेचारा आंख मलता हुआ आया। भल्ला ने हुक्म दिया दो दर्जन अंडे, कुछ रसगुल्ले और पेस्ट्री ले आ। कपड़ों के बक्स

में से बिजली का 'स्टोव' निकाल कर जलाया गया और चाय बनने लगी।

कालेज की दूसरी घंटी बज रही थी। होस्टल के सब लड़के कालेज जा रहे थे। असलम ने खिड़की से झांक कर जोर से कहा : 'ओ, प्रीतम, मेरी छीमे की क्लास में हाजिरी बोल दो।' नीचे सड़क से जाते हुए प्रीतम ने सिर हिला दिया।

दूसरे कब पीछे रह सकते थे, उन्होंने भी खिड़की में से झांक कर कहा, '८०-१३ और २१० की भी 'प्रोक्सी' बोल देना।'

मंगतू अंडे और मिठाई लेकर आया।

कमरे का दरवाजा किसी ने खटखटाया, उसके पहले कि कोई अन्दर आने को कहे या रोके, छीमा साहब अन्दर आ धमके। सहगल साहब तो फौरन पलंग के नीचे, भल्ले ने चायदानी की परवाह न करते हुए अपना 'स्टोव' दूसरे पलंग के नीचे खिसकाया। असलम दूसरी तरफ देखने लगा। राजा साहब से ही छीमा साहब ने सवाल किया, 'यह कौन है।'

चंचल के दिल में पहले तो आया कि कह दे, असलम की बहन है पर पठान का डर था और मुंह में जबान न थी।

'तुम्हें मालूम है, होस्टल में लड़की लाने का हुक्म नहीं। मैं तुम चारों का 'रस्टिकेट' करा दूंगा।'

सहगल साहब अपने ई० ए० सा० की नौकरी की सोच रहे थे। भल्ला साहब प्रार्थना कर रहे थे, 'काश कि लड़की लड़का होती'। लड़की अन्दर ही अन्दर मुस्करा रही थी।

फिर छीमा साहब ने चंचल से पूछा, 'इसे यहां कौन लाया।'

अब राजाजी को हिम्मत आई क्योंकि असलम लाया था, असलम का ही नाम ले लिया। उसमें झूठ की बात ही क्या थी। प्राक्टर को बिगड़ता देख, असलम ने, बड़ी दृढ़ता से कहा 'प्रोफेसर साहब, आप तो यों ही बिगड़ रहे हैं यह तो दीवान सिंह है।'

'दीवान सिंह, यह क्या हो रहा है।'

'कालेज के 'ड्रामे' का रिहर्सल'

दीवान सिंह ने कमीज़ के नीचे से टेनिस के गेंद निकाल कर बाहर फेंक दिये। चंडाल चौकड़ी के चारों चोर खिलखिला कर हंस पड़े और छीमा साहब जिधर से आये थे उधर झेंप कर वापस चले गए।

एक इम्तिहान से तो तोबा करके पास हुए और दूसरे में पास होने का भी 'प्लान' पहले से ही बना लिया गया। क्लास में सबसे होशियार थे देवीदयाल शर्मा जो आई० सी० एस० की तैयारी कर रहे थे। दसवीं में वजीफा लिया था और आजकल दिन को रात और रात को दिन कर किताबों के घंटे पर घोटे लग रहे थे। उनकी बदकिस्मती यह थी कि होस्टल में उनको कमरा चडाल चौकड़ी के पास मिला। और कई बार दर्खास्त देने पर भी बदली नहीं हो सकी।

शर्मा जी की उमर लगभग सत्रह वर्ष की होगी। आंखें अन्दर घुसी हुईं, मुंह पर ऐसी जर्दी कि जैसे तपेदिक के बीमार

हो, 'माइनस पांच' की डबल ग्लास वाली ऐनक पतली नाक पर ऐसी मालूम होती थी जैसे कोल्हू के बैल के सिर पर कनटोप पहना दिया गया हो। उनके पिता हिसार में तहसीलदार थे। जब शर्माजी घर से कालेज आते तब तहसील के बहुत से गांव वाले उनके लिए गाय के घी का पोपा और निशास्ते का पंजीरी के दो पीपे लाते।

मंगतू से कह कर चूहेदान भी मंगवाया और कई दफा चूहों को पकड़ने की कोशिश भी की गई परन्तु न तो शर्माजी की निशास्ते की पंजीरी बची और न गाय का घी ही मूंग की दाल में डाल कर खाने को नसीब हुआ। चंडाल चौकड़ी के चूहों को तार के पिंजरे में थोड़ा ही पकड़ा जा सकता था।

बेचारे शर्माजी को तरावट की जरूरत थी। इतना काम करते थे, चौबीसों घंटे पढ़ना चाहते थे। अगर गाय का घी न खायें तो कमजोरी कैसे दूर हो। कमजोरी से नींद आ जाती है। नींद को दूर करने का तो उन्होंने एक अजीब तरीका ढूंढा था। छः फुट लम्बी रस्सी से अपनी छः इंच लम्बी चोटी को लैम्प के तार से बांध दें। और जैसे ही झपका लगता तो आंख खुद बखुद खुल जाती। यह तरीका उन्होंने ज्ञान सिंह से सीखा था जो कि आई० सी० एस० की तैयारियां कर रहे थे।

चंडाल चौकड़ी को शर्माजी का इतना लिखना पढ़ना अच्छा नहीं लगता था। जलन इस बात की थी कि वे खुद पढ़ना नहीं चाहते थे और न दूसरों को ही पढ़ते देख सकते थे। शर्माजी अकेले थे और उधर थे चार चंडाल। उनके हार मान

लेने पर सुलह हो गई। शर्माजो को शर्त माननी पड़ी कि नकल बाजी में वे उनका साथ देंगे। जान बची लाखों पाये। वे करते भी तो क्या।

पहला पर्चा हिसाब का था। पहले घंटे के बाद असलम अपनी कुर्सी से उठ कर खड़ा हो गया। छीमा साहब ने पूछा, 'क्या बात है?'

'पेशाब कर आऊं'

यह मौका देख भल्ला ने देवीदयाल शर्मा की हिसाब की कापी सरका ली और नकल बाजी शुरू हो गई। शर्माजी बाकी सवाल दूसरी कापी पर करने लगे। थोड़ी देर बाद चंचल सिंह ने वह कापी भल्ला से लेनी चाही, नकलबाजी के खेल में वे आज पहली दफा ही शामिल हुए थे। दिल घबड़ा रहा था। हाथ भल्ले की सीट की तरफ और निगाह छीमा साहब पर जमी हुई थी। इस घबड़ाहट में हाथ से कापो छूट गई और उसके गिरने की आवाज छीमा साहब के कान में पड़ी, उन्होंने चंचल सिंह को पकड़ लिया,

'नकल हो रही है?'



दो तितलियां

सरदार चंचल सिंह को दिन भर कोई काम न था और अगर होता भी तो क्या फर्क पड़ता। काम करने वालों को काम और आराम करने वालों को आराम का बहाना मिल ही जाता है। अब तो खुली छुट्टी थी। लड़कियों के कालेज के सुबह और शाम दो चार चक्कर तो अवश्य लगाए जाते। बाकी समय कालेज के टैंक में तैर कर या क्रिकेट खेल कर बिताया जाता। हफ्ते में दो चार दफा ब्रिज या 'भाभी' शाम के ५ बजे से जम जाती और सुबह ५ बजे को खतम होती। राजा साहब को ही कौंडा होता। दस बीस रुपए पर पानी फिर जाता।

सरदार चंचल सिंह को अब कालेज की पढ़ाई से कोई सम्बन्ध नहीं था वह तो पढ़ पुख्ता हो चुके थे और पढ़ कर अगर डिग्री भी हासिल की, बी० ए०, एल० एल० बी० तो लाभ, दो सिगरेट लेकर पेशी भुगता आते हैं।

डिग्री शुदा तो अब सुना है लाहौर में 'चूड़ा ब्रिगेड' बनाने वाले हैं।

लाहौर की तंग गलियां तो अवश्य धन्यवाद देंगी कि इतने दिनों का कूड़ा कर्कट और गंदगी लाहौर के कालेजों के डिग्री धारी ग्रेजुएट झाड़ू लेकर साफ करेंगे।

खाक झाड़ने की अपेक्षा राजा साहिब लड़कियों का पीछा

करना अच्छा समझते थे। शायद एक दिन सुनहरी चिड़िया फंस जाय तो पांचों उंगलिया घी में।

इसी उम्मीद से उन्होंने 'गांधी चौक' के ऐन सामने अपना मोर्चा चुना। क्योंकि उस इलाके में रहने वाली सब लड़कियां वहां से होकर ही कालेज जातीं थीं और सी० आई० डी० के मशहूर जासूस की तरह यहीं से पहचानने में आसानी होती थी।

अक्सर दो लड़कियाँ तांगे में एक साथ जाया करती थीं। उन पर चंचल सिंह की नजर लगी। दोनों ही खूबसूरत थीं। बिल्कुल पटाखा थीं—पटाखा।

आए दिन वे रंगरूप तथा वेश बदल कर जातीं। कभी पंजाबी सल्वार, कमीज और कभी नंगी बाहों की ब्लाउज के साथ रेशमी साड़ी, कोई पूछे पढ़ने जा रही है या मीना बाजार में हुस्न का व्यापार करने।

मीठा शहद बनाने वाली मक्खी को तितली के रंग बिरंगे पंखों की आवश्यकता नहीं होती। रस हीन ही रूपवान होते हैं।

बाग की तितलियों की तरह लाहौर की लड़कियां भी अनेक प्रकार की होती हैं। कुछ अपने सौन्दर्य का दिखावा देकर दूसरों को आसक्त कर अपनी सफलता से गर्वित हो, खुशी से फूली नहीं समातीं। कुछ चतुर शिकारी की तरह, जान बूझ कर अपने चितवन के जाल फेंकती हैं, कुछ शिकारी के बिछाए हुए जाल से निकल कर घमंड और गर्व करती है।

फूल को तब ही खूबसूरत कहा ज़ा सकता है जब उस पर बहुत से भौंरे मंडरायें ।

जब दो चार लड़कियां इक्ट्ठी हो जाती हैं, तब वे एक दूसरे को अपने चेज करने वालों की कहानियां सुनाती हैं । इन रोमांकित दिलचस्प बातों से उन्हें वह खुशी प्राप्त होती है, जिससे उन्हें घरों और बुरकों की चहार दीवारी में बन्द रख वंचित रखने का असफल प्रयत्न किया जाता है । वे ख्याल की उड़ान में, सुन्दर फूल का रस और गन्ध प्राप्त करने के लिए लालायित हो, खोई रहती हैं । फिर अगर शिकारी जाल फैलावे तो कसूर किसका ?

चालाक और अनुभव प्राप्त की हुई तितलियों को फंसाने में कठिनाई होती है । वे तो सिर्फ चमकीला, दमकीला रंग रूप दिखा, दर्शकों का दिल तड़पा, दूसरे फूल की ओर उड़ जाती हैं ।

राजा साहब तो निश्चय कर चुके थे कि एक न एक दिन, एक सुन्दर तितली को फ़ंसा कर, अवश्य अपने दिल की किताब में 'पेपर मार्क' बनायेंगे, बना कर शायद वह बेजान तितली को निकाल कर बाहर फेंक दें ।

जो आनन्द किसी वस्तु के प्राप्त करने की अभिलाषा एवं प्रयत्न में मिलता है, उसके प्राप्त करने पर उसका शतांश भी नहीं मिलता । परन्तु मनुष्य की सबसे बड़ी कामना है हर एक दिलचस्प चीज को अपनी बनाना ।



" दो पटाख़े "

राजा साहब के विचार आसमान पर, दिमाग जमीन के नीचे और दिल का दर्वाजा हर खूबसूरत लड़की के लिए हमेशा खुला रहता। जैसे ही तांगा फाटक से बाहर निकलता वह अपनी घंटियां, बाजों और फूलों से सजी बी० एस० ए० बाईसिकल उसके पीछे लगा देते। फीरोजपुर रोड तक पहुँचते पहुँचते, और भी कई तमाशबीन तांगे के पीछे लग जाते। दोनों के कालेज का रास्ता एक ही तो था।

प्रेम में आ॰र्षण होता है। अगर लड़के लड़कियों के पीछे मंडराते हैं तो वे उनकी चर्चा करती हैं। 'बिल्कुल मोती लाल लगता था। वैसा ही रंग। मोटी नाक, शोख आंखें, और मुस्कराहट में मक्कारी कूट कूट कर भरी है।'

'और वह लाल कोट वाला'
पहने हुए था लाल कोट
जैसे थाने में रपट'

सब सहेलियां खिलखिला कर हंस पड़ीं। 'वह जो शेरवानी पहने था वही तो था जिसने पिछले इतवार वाइ० एम० सी० ए० में लेक्चर दिया था।'

'हां महमूद था: बहुत अच्छा बोलता है।'

'उसकी दोस्ती मिस सिंह से...'

'चुप कोई सुन लेगा। दीवारों के भी कान होते हैं।'

'दुनियां जानती है।'

'कभी इश्क और मुश्क भी छिपा रहा है।'

'सिख मुसलिम फसाद हो जायगा।'

'फसाद की कौन परवाह करता है। कुछ शहीद गंज को तोड़ने में मर गए, कुछ इस शादी के तोड़नें की कोशिश में शहीद हो जायंगे।'

'कोई मरे और तुम्हारी खुशी।'

'क्यों नहीं ?'

कालेज की घंटी बज गई और सब इस वाद विवाद की गर्मी को भूल कर अपनी अपनी क्लास की तरफ चली गईं।

राजा साहब को लड़कियों का नाम पता मालूम नहीं था और न लड़कियां ही अपने चेज़ करने वालों से अधिक परिचित थीं। सिर्फ सड़क की जान पहिचान थी।

दिल का आकर्षण जिसे प्रेम कहते हैं दो दिलों के बीच में खिंचाव रखता है। कुछ तो इस खींचातानी में इतनी उलझ जाती हैं कि पढ़ाई के नाम पर प्रेम महाविद्यालय की 'नाइट क्लास' में प्रविष्ट हो जाती हैं और जो नहीं फंसतीं वे अपनी मनहूस शक्ल और भोंडी अक्ल को कोसती हुई डिग्री हासिल कर लेती हैं।

चंचल को तो न डिग्री लेने को अभिलाषा थी और न वह बी० ए० पास बीवी चाहता था। मुफ्त का रोब डालेगी। उन्हें औरत से शादी करनी है नाकि वकील से जिरह........

'न मालूम इन लड़कियों को इतना पढ़ने का शौक क्यों होता है।'

'शौक वौक तो क्या खाक होता है। दिल बहलाने का बहाना है।' परीछा साहब बोले :

'न पढ़ो तब भी शादी
पढ़ो तब भी शादी।'

फिर पढ़ाई की क्या आवश्यकता। यह 'वेस्टर्न एज्यूकेशन' (पाश्चात्य शिक्षा) तो हमारी लड़कियों को बिलकुल बिगाड़ कर रख देगी। वैसे ही खैर नहीं। जब मेम बन गई तब क्या कहने।'

'धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का।'

'मैं एक कारण बताऊं।'

'बताओ'

'जब तक लड़की की शादी नहीं होती तब तक मां बाप को कुंवारी लड़की की देखभाल करनी पड़ती है, कालेज भेजा—मुसीबत टली.....'

'मुसीबत, वह क्यों ?'

'बिलकुल सिख ही रहे। अगर कुंवारी लड़की घर में हो तो मां स्यापे–मातम मनाने-शोक प्रकट करने नहीं जा सकती। और अगर वहां न जाय तो लड़की हमेशा के लिए कुंवारी रह जाय।'

'तुमने कभी स्यापा देखा है।'

'हां एक दफा, सब औरतें नंगी छाती जोर जोर से ठोकती हैं।'

'नंगी छाती,'

'ठोकती हैं'

'मुहर्रम की तरह'

स्यापा लाहौर की पर्दानशीन और लालियों के लिए कसरत करने का एक मात्र अखाड़ा रह गया है। अगर इतनी भी कसरत न हो तो मुटाई की खैर नहीं।

जब बिरादरी का कोई आदमी, औरत, बुड्ढा या जवान मर जाता है, तब बिरादरी की सब औरतें तेरहवीं तक मातम वाले घर पर दुपहर के बाद रोज धावा बोलती हैं। काले लहंगे पहने, मकान के निचले दालान में या गली के बीचों बीच घेरा बना कर बैठ जाती हैं। बीच में उस अभागिनी को बैठा लेती हैं जिसका पति, पिता, या पुत्र मरा हो। सोगी नाइन 'ड्रिल मास्टर' की तरह ऊंची आवाज में कवायद कराती है। 'त्यून' (तरज़) ।:।::२:२

नाइन : धन्नों : हाय : हाय :

(ताल रखने के लिए नंगी छाती जांघों और मुंह पर बारी बारी जोर जोर से थप्पड़ मारना)

नाइन : फूटी तेरी किस्मत

सब : धन्नों : हाय : हाय :

नाइन : गली दा नम्बरदार मरिया

सब : हाय : हाय : हाय : हाय :

नाइन : जोर दा मार धन्नो :

(ससुर मर गया, छाती मे दाग भी नहीं पड़ा।)

नाइन : मर गया तेरा सोरा

धन्नो के हाथ नहीं उठे। वह बेहोश होकर गिर पड़ी। छः महीने की गर्भ थी, गर्मी और स्यापे का दंड सहन न कर सकी। मरे के लिए रोना—

उधर चाहे जीता ही मर जाय। शाम को स्यापा खतम हो जाता है। और लड़कियों के कालेज से वापिस आने के पहले मां घर वापस आ जाती है।

राजा साहब को पूरा यकीन था कि गांधी चौक वाली वे दोनों लड़कियां कुंवारी हैं। पर अभी पक्का फैसला नहीं कर सके थे कि उन दोनों में से वह किसको ज्यादा प्रेम करते हैं।

जो कुछ पतली थी उसके शरीर की बनावट गजब की थी। जिस समय सल्वार कमीज पहिन कर बाहर निकलती उसके मनमोहन एवं मुग्ध करने वाले अनुपम सौन्दर्य को देख कर उनके मुंह से राल टपक पड़ती। उनका दिल कह उठता :

'हाय पतली कमर वाली'

उनके तो यारब कमर ही नहीं है
न जाने वो नाड़ा कहां बांधते हैं।

एक मिनट बाद जब उनकी नजर दूसरी के गोरे रंग मोटी नशीली आंखों और नागिन सी काली सुन्दर लटों पर पड़ती तो दिल बदल जाता।

दो काजियों में मुर्गी हराम।

जब तक राजा साहब उनमें से एक को न चुन लें, तब तक किसी को भी पाने की आशा नहीं की जा सकती थी। वह कई दिन पलंग पर करवटें बदल बदल कर इस बात का फैसला करने की कोशिश करते रहे—जब मैं उस पतली कमर वाली, नाजुक बदन वाली की बाहों में बाहें डाल कर माल रोड पर चलूंगा तब सब उसे देख कर 'एक्ट्रेस' समझेंगे। ठंढी आहें

लेंगे—जैसे माल पर चलने वालों को और कोई काम ही नहीं। रंग सांवला है। यही कमी है। पाउडर काफी लगती है, पर उस गोरे नयन वाली सुन्दर नयनों वाली की रंगत नहीं पाती—कश्मीरी सेब है। कश्मीरी। पर वह तो गैर विरादरी में शादी नहीं करते। और थोड़ी सी मोटी भी है।

मोटापे की तो बात भली, पतला होने की गोलियों का 'एडवर्टाइजमेंट' (विज्ञापन) लाहौर के हर अख़बार और रिसाले में निकलता है।

पहले भी राजा साहब इन विज्ञापनों के द्वारा अन्य प्रकार की गोलियां दवाइयां और तसवीरें मंगवा चुके थे और इन्हीं विज्ञापनों के देखने के लिए वे उर्दू, हिन्दी और पंजाबी के रिसाले मंगाते थे। अगर किसी गुप्त, बुरी बीमारी को २४ घंटे में दूर करवाना हो तो किसी रिसाले के किसी सर्फ को खोल कर हकीम साहब या वैद्य जी की दूकान का पता नोट कर लीजिए।

गोली अन्दर, दम बाहर।

इन रिसालों और अखबारों की आमदनी की बुनियाद नग्न चित्र गंदे और झूठे, बनावटी विज्ञापन पर ही निर्भर है। शेष जो भी लेख इत्यादि होते हैं वे भी मनुष्य की काम वासना उत्तेजित करने वाले। हर जगह ये रिसाले पत्र, पत्रिकाएं खुल्लम खुल्ला बिकती हैं और प्रथम पत्र पर ही नग्न, कामोत्तेजिक चित्रों को देख कर सब खस्ता हाल नौजवान उन्हें खरीदते हैं। अगर लाहौर के किसी लेखक को रुपया बनाने

की इच्छा हो तो ऐसी पुस्तकें छपवाए……चांदी है चांदी। 'सलिम्यिंगपिल्स' और 'वाई० एम० सी० ए०' में प्रतिदिन 'बेड मिन्टन' दो हफ्ते में १० पौंड वजन घटा देगी और भी जरूरत हो तो शाम सुबह नमक डाल कर निम्बू पानी पी लो।

शिकार अभी फंसा नहीं, पकाने की तजवीज पहले ही होने लगी।

फैसला कर, दूसरा कदम उठाने से पहले, चंचल सिंह एक अकेली पकड़ना चाहते थे। इस अभिलाषा को लेकर वे अपने मोर्चे पर रोज जम जाते।

दुनियां अज़ उम्मीद कायम अस्त।



जल सुन्दरी

कई दिन से चंडाल चौकड़ी को सहगल साहब पर शक पड़ रहा था। वह हर रोज कई घंटे के लिए कमरे से गायब रहते। जब कोई पूछता तो झूठा बहाना बना देते। सब जानते थे कि इसमें कोई भेद अवश्य है।

उनके गायब रहने का एक मात्र कारण थी मिस नलिनी गुप्ता, जो हाल ही में कालेज में दाखिल हुई थीं, प्रोफेसर रजनी कुमार गुप्ता की सुपुत्री, लड़कियों के कई कालेज को छोड़ कर लड़कों के कालेज में उच्च शिक्षा प्राप्त करने आई थीं।

प्रोफेसर साहब के पिता सर रास बिहारी गुप्त सन् १६१४ के लगभग लाहौर के जज बन कर आये और लाहौर में रहने लगे। रजनी कुमार ने वहां ही प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की और उसके पश्चात वे विलायत पढ़ने चले गये। वापिस आने पर पिता ने बहुत दौड़ धूप की, आई० सी० एस० में आ जावे, पर संस्कृत की पुरानी कहावत को चरितार्थ करते हुए 'भाग्यं फलति सर्वत्र, न च विद्या न च पौरुषम्।' आपको मिली सिर्फ़ कालेज में प्रोफेसरी······भागते चोर को लंगोटी ही काफी है।

नलिनी प्रोफेसर साहब की इकलौती संतान थी। इकलौती संतान को प्यार कौन नहीं करता। और फिर नलिनी जैसी

सुघड़ और होनहार बालिका को। प्रत्येक कक्षा में वह अपनी सहपाठियों से बहुत अच्छे नंबर प्राप्त करती और प्रथम स्थान तो अपनी नलिनी के लिए 'रिजर्व' हो चुका था। इसलिए योग्य पिता ने अपनी होनहार पुत्री को अपने ही कालेज में रखना उचित समझा।

नलिनी सुन्दरता में महाकवि कालिदास की शकुंतला नहीं थी, परन्तु जिस तरह सूखे बियाबान में कोई हरा भरा सघन वृक्ष दृष्टिगोचर हो जाए, या मरुस्थल' में शीतल मधुर जल का स्रोत अनायास मिल जाय तो निराशा निशा आशा के स्वर्णिम प्रभात में बदल जाती है।

दो चार साल से ही लाहौर के लड़कों के कालेज में सहशिक्षा (को-एज्यूकेशन) प्रारम्भ हुई है। कई लड़कियां विशेष कारण से वहां आती हैं पर नादान लड़के बेचारे पूछते हैं—लड़कियों के इतने कालेज होते हुए इसका क्या मतलब ? सचमुच सवाल तो बड़ा बेढ़ब है। लड़कियां बहाना बनाती हैं कि लड़कों के कालेज के प्रोफेसर अच्छे हैं। तभी तो लड़कों की दाल नहीं गलती। हजारों तरह की तकरीबें सोचते हैं बेचारे।

शिकारी को जब हरिनों की डार में काला सांढ़ दिखाई देता तो उसकी नजर खुद बखुद उधर ही जमी रहती है। वह दूसरी हरिनियों को भूल जाता है। अगर हमारे प्रोफेसर साहब भी रास्ता भूल कर उधर ही भटक जावें तो हम यही कह के संतोष करते हैं कि आखिर वे तो मनुष्य हैं। पर

लड़कों को इस बात की सख्त शिकायत है। उन्हें भी लड़कियों के कालेज में भरती होने का अधिकार होना चाहिए। असली रूप में न सही वेश बदल कर ही। कुछ दिन और ठहरिए...

अभी कालेज में कोई आधी दर्जन लड़कियां थीं और उन सब में सुन्दर थी नलिनी। अन्धों में काना राजा। क्यों न? पर नहीं, यह कहना अन्याय होगा, क्योंकि नलिनी के सौन्दर्य में अवश्य कोई गुप्त शक्ति थी जो मनुष्य को आकर्षित किए बिना नहीं मानती थी। नलिनी में दो प्रान्तों का खून बहता था। पिता बंगाली थे और मां पंजाबी। मंझला कद, कोई पांच फुट ऊंचाई। जिस्म की बनाबट आज कल के 'रेगुलेशन' फैशन के मुताबिक, कमर पतली कि दो मुट्ठियों में आ जाए। बड़ी बड़ी आंखें, पतली और लम्बी नाक। फिर नलिनी को सजने और कपड़ा पहनने की कला खूब आती थी। वह हर रोज नया ही रंग रूप बना कर आती। मानो पुरानेपन से उसे चिढ़ थी। हर रोज उसके नये रंगरूप को देख कर लड़कों के दिल में घुरियां जल जातीं, पैरों नीचे की जमीन हवा हो जाती। हमारे साहब जी तो किस खेत की मूली थे। एक झपेटे में आ गिरे, चारो खाने चित, सूखे पत्ते की तरह जिधर नलिनी की नजर का झोंका लगा, उधर ही उड़ गए।

नलिनी को तैरने का बहुत शौक था। इसलिए साहब जी कुछ दिनों से ला पता थे। जब कभी मौका मिलता वे कालेज के टैंक में तैरने के लिए चले जाते। तैरना सीख कर 'डाइव

करना' शुरू किया । जब 'डाइविंग बोर्ड' के तख्ते पर चढ़े तो हवास फ़ाख्ता । पर सामने से नलिनी को आता देख कर छलांग लगा ही दी। १० फुट से पेट के बल पड़े। बड़े जोर का थपाका पड़ा और छींटे चारों ओर दर्शकों पर पड़े। नलिनी थोड़ा सा मुस्करायी। सहगल साहब ने बड़ी हिम्मत से काम लिया। हिम्मते मर्दां मददे खुदा। दो महीने में ही तरने में काफी होशियार हो गए।

चंडाल चौकड़ी की 'प्रोपेगेंडा मिनिस्ट्री' के जोर शोर से कालेज में एक 'स्विम्मिंग यूनियन' तैराक संघ) बनाया गया सेक्रेटरी (मंत्री) बने सहगल और मिस नलिनी गुप्ता ने प्रेसिडेंट (प्रधान) पद की शोभा बढ़ाई।

साहब जी को नलिनी से मिलने का सबसे अच्छा मौका स्विम्मिंग यूनियन की मीटिंगस (बैठक में मिलता था। कालेज में प्रोफेसर आंख लगाए रहते थे छुट्टी में लड़के पीछा नहीं छोड़ते थे। पर स्विम्मिंग यूनियन की मीटिंगस में उन्हें ही बुलाया जाता था जिनका बुलाना सहगल साहब उपयुक्त समझते थे। तब साहब जी दिल भर कर नलिनी की तरफ देखते। मीठी मीठी बातें करते और राजा साहब के पैसों के जोर से 'टी पार्टी' का भी इंतजाम हो जाता। जान पहचान हो ही गई। दिन प्रतिदिन सहगल साहब का बोलबाला बढ़ने लगा।

एक मीटिंग में यह पास हुआ कि लड़कियों को तैरने में अधिक भाग लेना चाहिए—जब तक हिन्दुस्तान की लड़कियां

तरना नहीं सीखेंगी तब तक डूबते भारत की नया कौन बचा सकता है। भारत की प्रतिष्ठा के लिए उसके नवयुवकों के स्वास्थ्य के लिए, देश का स्वतंत्रता के लिए यह आवश्यक है कि भारत की लड़कियां तैरना सीखें, बंगाल में लड़कियां तैरने में कमाल कर रही हैं। हमारा प्रांत ही क्यों पीछे रहे। पंजाब प्रत्येक खेल का सिर मौर है। तैरने में भी अवश्य आगे रहना चाहिये। 'मैं यह प्रस्ताव पेश करता हूँ कि कालेज के टैंक पर एक स्विम्मिंग गाला (तमाशा) किया जाय और वहां सब कालेज की लड़कियों को जो तैरना जानती हैं, दावत दी जाय। इस 'गाला' का सभापतित्व (थोड़ा ठहर कर) हमारी मिस नलिनी गुप्ता करेंगी' सहगल ने कहा।

कमेटी के मेम्बरों ने जोर जोर से टेबल पर थपकियां मारीं और 'येस - येस' कह कर रैज्यूलेशन (प्रस्ताव) पास किया।

सब कालेजों को निमंत्रण भेजे गये। निवेदन पत्र मिस गुप्ता के नाम से था। इसलिए सब कालेजों न मंजूर कर लिया। सात दिन लगातार 'गाला' होता रहा। कई इवेंटस (कार्रवाइयां) में लड़के लड़कियां अलग अलग थे। कइयों में मिले जुले। कालेज का तालाब और उसके इर्द गिर्द का मदान लड़कों से खचाखच भरा हुआ था। जो 'स्विम्मिंग टैंक' के कभी करीब भी नहीं आते थे, उन्हें आज एक ताकत इधर खींच लाई। सब लड़कियां 'स्विम्मिंग कस्टूम' तैरने के वस्त्र पहन कर तैर रही थीं किसी ने दुहरा (डव्बल) और किसी ने इकहरा (सिंगल) कस्टूम पहन रखा था। नलिनी दो

'स्लिप्स' पहने हुई थी ऊपर नीचे का भेद छुपाने के लिए स्विम्मिंग कस्टूम में मनुष्य का रूप बनावट और शरीर का गठन व सुन्दरता असली रूप में प्रकट होती है । जो भेद वस्त्रों में छिपे रहते हैं वे इस नंगी हालत में छिप नहीं सकते। कहां तो बदन १० गज लम्बी साड़ी या तंग सल्वार के अंदर छिपा रहता है । पैर का रंग भी नजर नहीं आता और कहां स्विम्मिंग कस्टूम में हर एक अंग अंग की बनावट, पिंडलियों की गोलाई, जांघों की मोटाई, कमर की लचक, छाती की ऊंचाई, गर्दन की लम्बाई, प्रकृति का सुन्दरतम चित्र, जीता जागता दिखाई देता है । बहुत से कालेजों के लड़के इसी आकर्षण के कारण उधर पधारे थे और ग़जब का शोर कर रहे थे।

'वह तो बहुत मोटी है'

'नीली कस्टूम वाली'

'पहलवान है, पहलवान । मिस गामा'

'हा । हा ॥

'और वह लाल नीली वाली'

'तुम्हारा मतलब तिली पहलवान'

'वाह क्या खूब कहा। तिली पहलवान, मुझे तो वह चेक कस्टूम वाली पसन्द है एंग्लो इंडियन लगती है। कमाल का जिस्म है ।'

'पर नजाकत नलिनी गुप्ता की।'

'हाय नजाकत ।'

'चलो जरा पास चल देखें। मुझे तो इस मिस गुप्ता ने मार डाला।'

'मार डाला, मार डाला, मार डाला रे।
हाय तेरी चितवन ने मुझे मार डाला रे॥'

'चुप रह कोई सुन लेगा।'

सब धक्के मारते उधर गए जिधर लड़कियों का झुंड तालाब में पांव लटकाए बैठा था। वे ऐसी लग रही थीं, मानों नील तालाब के किनारे दुग्ध से श्वेत, अत्यन्त सुन्दर हंस और रंग बिरंगे पंखों वाली बतखें बैठी हों और सब हंसिनियों में राजहंसिनि थी मिस नलिनी गुप्ता।

नलिनी स्विम्मिंग कस्टूम में बहुत ही सुन्दर लगती थी। उसके शरीर की बनावट बड़ी ही मन मोहक थी, लंबी टांगें, गोल पिंडलियां, मांसल हाथी की सूंड़ सी जाघें। शेरनी सी पतली कमर, जो उभरी हुई छाती के बोझ से लचक रही थी। जब वह डाइव लगाती तो उसकी नागिन सी काली लटें खुल जातीं वह कमर के गिर्द तौलिया लपेट कर तालाब के किनारे बड़ी नजाकत से बैठ जाती और तिरछी नजर से दूसरों की तरफ देखती। सब लड़के उस पर लट्टू हो रहे थे। मन मोहन सहगल तो उसकी इस मन मोहक छवि पर लुट चुके थे। जब कभी कोई सुन्दर लड़की डाइव लगाती तो लड़के जोर से तालियां और सीटियां बजाते। डाइव की सुन्दरता पर नहीं, डाइव लगाने वाली की सुन्दरता पर।

जब गाला खतम हो गया तब साहबजी ने पारितोषक वितरण से पहले छोटा सा व्याख्यान दिया।......

लेडीस एंड जेंटलमेन,

आज बड़ी प्रसन्नता है कि लाहौर के प्रसिद्ध शहर में सर्व प्रथम स्विम्मिंग गाला सानंद संपूर्ण हुआ। इसकी सफलता का सेहरा मिस नलिनी गुप्ता (··तालियां···सीटियां···तालियां···) यह उनकी दूर र्शिता थी कि हम इस गाला का आयोजन कर सके और लाहौर के कालेजों के सब छात्र छात्राओं को उसमें भाग लेने का सुअवसर प्राप्त होसका। उस गाला की सफलता का प्रमाण आप लोगों की उपस्थिति ही दे सकती है। मुझे आशा है कि यहां आपका काफी मनोरंजन हुआ होगा (बहुत ...बहुत ..बहुत...शाबास सहगल बाजी मार ली) हमारी सोसाइटी का यह विचार है कि ऐसा गाला प्रतिवर्ष आयोजित किया जाय (बहुत से लोग-नहीं-नहीं—हर महीने होना चाहिए) आप लोगों को अब विदित हो गया होगा कि तैरना सिर्फ दिल बहलाव मनोरंजन की ही चीज नहीं है। इससे शरीर की सुन्दरता बढ़ती है। गर्मी के मौसम में सबसे अच्छी कसरत है। मैं आप लोगों के सम्मुख तैरने की प्रशंसा में पुल बांधने खड़ा नहीं हुआ हूं क्योंकि आप सब सज्जन जो यहां उपस्थित हुए हैं वे इसलिए आये हैं कि वे स्विम्मिंग को (...हां...हां)

मैं मिस गुप्ता से निवेदन करता हूँ कि वे विजेताओं को पारितोषिक वितरण करें (तालियां···तालियां···जैसे ही मिस गुप्ता उठीं -जोर जोर से तालियां और सीटियां···)

'मिस माधुरी खन्ना –१०० यार्डस—फर्स्ट प्राइज (पहला इनाम)'

मिस खन्ना ने हाथ बढ़ाया, कप लिया···तालियां

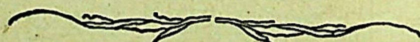
'मिस्टर जहूर अहमद १०० यार्ड्स—सेकेंड प्राइज़—थोड़ी तालियां ज्यादा सीटियां।

....

जब सब छोटे कप खतम हो गये और मेज पर सिर्फ एक बड़ा कप रह गया तब सेक्रेटरी महोदय ने रुक कर कहा···मिस नलिनी गुप्ता···स्विम्मिंग क्वीन—गजब की तालियां बजीं··· सीटियां बजीं···शोर—किसी ने जोर से कहा : स्विम्मिंग किंग ···दूसरे ने कहा—मनमोहन सहगल।

मिस गुप्ता ने सहगल के हाथों शर्माते हुए बड़ा कप ले लिया। फिर साहबजी ने चमेली के फूलों का हार अपनी प्रेमिका के गले में डाल दिया।

किसी दिन···काश के वह दिन जल्द आये जब नलिनी भी उनके गले में अपनी मदमाती भुजाओं का हार डाले।



कुछ चालें

मिसेज गुप्ता को 'को-एज्युकेशन' (सहशिक्षा) पसंद नहीं था पर नलिनी के आग्रह और पिता के बेसमझे सिर हिला देने से फैसला नलिनी के पक्ष में हो गया। मां को अपनी लड़की के आचरण की बड़ी चिन्ता थी इसलिए वह हमेशा इस बात पर जोर देती कि कालेज से सीधे घर आना चाहिए। कुछ दिन तो नलिनि घर का सीधा रास्ता लेती रही, पर जैसे जैसे कालेज में जान पहचान बढ़ती गई वापिस लौटने में थोड़ा विलम्ब होता गया।

'आज बड़ी देर लगाई', मां ने जरा त्योरियां चढ़ाते हुए पूछा।

'ममी। देखो कितना अच्छा प्रेजेन्ट मिला है।' स्विम्मिंग का कप दिखाते हुए नलिनी ने बड़े अंदाज से कहा। मां कप की तरफ देखने लगी और गुस्सा काफूर हो गया।

पहले कुछ दिन तक तो नलिनी लड़कों से कुछ डरती और शर्माती रही, जैसे लड़ाई में जाने से पहले सिपाही तोप आर गोलों की आवाज से घबराता है। एक दफा मैदान में आने के बाद उसकी कंपकपी दूर हो जाती है और वह नोडर बहादुर बन जाता है। लड़कों की चालों को देख और समझ कर नलिनी की झिझक बिलकुल जाती रही और उसका स्थान घमंड और चपलता ने ग्रहण किया। अब लड़के उससे डरते थे और वह उन पर रोब जमा कर खुश होती थी। उलटा चोर कोतवाल को डांटे ..

वह अपने आप को आजाद समझती और भारत की गुलामी का कारण बताती थी औरतों की जहालत, कसूरवार ठहराती थी मर्दों को, उन मर्दों को जो अपने आप को बड़ा और सभ्य कहते और कहलवाते हैं। हमारे पैरों में गुलामी की जंजीर डाल रखी है। हमें पैसे का गुलाम बना रखा है। २४ घंटों का नौकर। रात को अपना तन अर्पण कर उनकी पिपासा को शांत कर उनका दिल खुश करो। दिन को उनका पेट भरने के लिए खाना पकाओ और जब पतिदेव दफ्तर या सिनेमा चले जावें, उनके आधे दर्जन बच्चों की देखभाल करो। यह है स्त्री धर्म। धर्म विरुद्ध आचरण करने वाली स्त्री को कोई हक हासिल नहीं। यदि पति महोदय चाहें तो उसे सड़कों पर ठुकरा कर दो या तीन व्याह कर सकते हैं। यह है न्याय का नंगा रूप। यह है सभ्यता। जब तक औरतों को उनका हक नहीं दिया जाता उनको इस गुलामी से आजाद नहीं किया जाता—तब तक हम आज़ाद नहीं हो सकते।

नलिनी के विचार बहुत उच्च और नेक थे। वह प्रत्येक डिबेट (वाक प्रतिद्वंदिता वाद विवाद) में भाग लेती और हमेशा मैदान मार ले जाती। तेज जबान थी। और जोशीले गर्मागर्म शब्द उसके मुंह से मशीनगन की तरह निकलते थे और सुनने वालों को अपना निशाना बना लेते।

वह औरतों को पर्दे के अन्याय से आजाद कराना चाहती थी। उसे मर्दों के बनाए ढकोसलों से सख्त दुश्मनी थी। यद्यपि वह मर्दों से नफरत नहीं करती थी उन्हें वह जीवन का

एक आवश्यक अंग समझती, जिस तरह गुलाब की खूशबू चाहिए उसी तरह औरत के नखरे सहने के लिए मर्द। दोनों उत्पत्ति एवं प्रजनन के लिए जरूरी हैं परन्तु दोनों की सामाजिक स्थिति में कोई भेद नहीं होना चाहिए। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।

बाहर से नलिनी शायद कुछ सख्त और कुछ बेरुख नजर आती हो परन्तु स्वभावतः प्रेम से परिपूर्ण थी। वह जानती थी कि असली रोमान्स' के लिए प्रेमी का होना ज़रूरी है वह अपने प्रेमी का रेखा चित्र अपने हृदय पटल पर बना चुकी थी। कुछ दिन हुए नलिनी की आंख एक फूल पर लग गई। वह तितली की तरह उस फूल पर मंडराने लगी। कभी कभी शोखी दिखाने के लिए दूसरों की तरफ भी अपनी तीखी चितवन और मधुर मुस्कान का झोंका मार देती। वह जानती थी कि जब तक बाजार में किसी चीज के बहुत से ग्राहक न हों तब तक उसकी कीमत नहीं बढ़ती, भीड़ को देख कर असली ग्राहक खिंच आवेगा और दूसरों के जोश को देख कर उसके दिल में ईर्ष्यापूर्ण भाव जाग्रत होंगे। प्रेम की नींव इन्हीं जज़बात पर रखी जाती है।

एक दिन नलिनी प्रोफेसर साहब के साथ खेल देखने गई और अपना छोटा सा दिल वहां छोड़ आई। प्रेम की चिनगारी ने कहीं से उड़ कर उसके दिल के खलिहान में प्रेम की आग लगा दी। जैसे ही उसकी नजर प्रेम बहाल से मिली कि उसके दिल ने एक जोर का थपेड़ा खाया और बेचारी नलिनी, बे

पतवार की नाव की तरह प्रेम सागर में डोलने लगी।

प्रेम की शक्ल नलिनी के मन में कल्पित प्रति रूप से कुछ मिलती थी। छः फुट ऊंचा कद, चौड़ी छाती, गंदुमी रंग, रानें और बदन पहलवानों की तरह गठा हुआ। रोबीले चेहरे पर कलार्क-गेबल की पतली कुतरी हुई मूंछें। वह एक ऐसा पारितोषिक था जिसे प्राप्त कर नलिनी गर्व कर सकती थी।

नलिनी प्रेम में फंस गई। वह भविष्य के स्वप्न देखने लगी। नई नई युक्तियां सोची जिनसे वह अपने प्रेमी को अपने इशारों पर कठपुतली का नाच नचावेगी। जब लड़की प्रेम में फंसती है वह अपना अस्तित्व उसमें खो बैठती है। प्रेम उसके रोम रोम में समा जाता है और वह प्रेमासक्त हो अपनी सब सुध बुध खो बैठती है उसकी तर्कना शक्ति कूच कर जाती है। और वह अपने प्रेमी पर तन, मन, धन, न्योछावर करने पर उतारू हो जाती है। नलिनी ने धीरे धीरे अपने उच्चादर्शों की आहुति प्रेम के प्रेम पर चढ़ाना शुरू कर दी, ज्वाला बढ़ती गई।

बहाल कालेज का एक सर्वतोमुखी प्रतिभाशाली छात्र था। कई मूर्ख लड़कियां उससे प्रेम कर अपना दिल तोड़ चुकी थीं। बहाल का एक अद्भुत व्यक्तित्व था जिसके लिए प्रेम एक शतरंज की चाल था। शारीरिक गठन, अद्भुत सौन्दर्य, दिमाग की चालाकी। उसकी अनोखी शतरंज के वज़ीर, घोड़े और हाथी थे जिनके चक्रव्यूह में फंस कर कोई लड़की बिना शह खाये नहीं निकल सकती थी। प्रेम एक शतरंज का खेल है, जिसमें कोई जीतता है कोई हारता है। प्रेम बहाल इस खेल

में निपुण था ।

पहली चालें होशियारी से चलना जरूरी है, क्योंकि अगर शुरू में चाल गलत हो गई तो बिगड़ी को सुधारना टेढ़ी खीर है। वह जानता था कि लड़कियां उस पर ज्यादा मरती हैं, जो ज्यादा बदनाम हो।

घमंड से पतंग चिराग की ओर जाता है। वह कहता है वे बेवकूफ थे जो जल गए देखो मैं चिराग की रोशनी को पकड़ कर लाता हूँ। एक दफा खिंचा, बस जला।

बेचारी नलिनी प्रेमाग्नि में जलती रही। वह अपने दिल का हाल दूसरी सहेलियों को सुना कर भी अपना दिल हल्का नहीं कर सकती थी, क्योंकि वह जानती थी कि सब लड़कियां प्रेम बहाल पर मरती हैं, अगर बता देगी तो शायद ..... आग की तरफ हाथ बढ़ाना मूर्खता है पर मूर्ख प्रेमी प्रेम को अग्नि कब समझता है।

नलिनी के दिल में सच्चा प्रेम था। वह प्रेम को तन, मन से चाहती थी। पर बहाल के लिए वह एक लड़की थी जिससे वह प्रेम नहीं कर सकता था, दिल अवश्य बहला सकता था। लड़कियों से और खास कर कालेज की लड़कियों से दिल लगाना सख्त गलती है। वे सब 'फ्लर्टस' (स्वेच्छाचारिणी) होती हैं। दिल्लगी मजाक करना काफी है। अगर मूर्ख बन स्वयं चली आयें तो वाह, भला.....मुफ्त की शराब काजी भी नहीं छोड़ता, यह उसका सिद्धांत था।

नलिनी ने थोड़े दिनों में बहाल पर यह स्पष्ट रूप मे प्रकट कर दिया कि वह उस पर लट्टू हो रही है। जब लड़के प्रेम में फंसते हैं तो वे कायर बन जाते हैं। जब लड़की फंसती है तो चींटी की तरह रातों रात उसे पंख लग जाते हैं।

नलिनी बहाल को 'स्पोर्ट् मैंन' समझती थी। उसे विश्वास था कि वहाल उसे कभी धोखा नहीं देगा। कई दिनों से वह भी नलिनी की तरफ खींच रहा था। उसकी सीट के साथ सीट पर लग कर बैठता और जब नजर उठती, प्रेम की लालसा भरी नजरों से टक्कर हो जाती। दोनों की आंखें लड़ जातीं। नलिनी की भोली आंखें उसके दिल का हाल साफ साफ बता देतीं। पर बहाल की आंखों से यह पता नहीं चलता था कि वह तितली फंसाने को मकड़ी का जाल फैला रहा है।

एक दिन प्रोफेसर ए० एस० कबाडी रोमियो और जूलियट' पर व्यख्यान दे रहे थे। उनकी नजर बहाल पर पड़ी। उन्होंने उसे अपने पास बुलाया और उसकी कापी का मुलाहिज़ा किया। हर एक पन्ने पर लड़कियों की –आधी, पूरी, सुन्दर, भद्दी, नंगी तस्वीरें बनी हुई थीं और हर जगह अंग्रेजी, उर्दू और हिन्दी में लिखा था—नलिनी, नलिनी, नलिनी।

जरा व्यंग से प्रोफेसर साहब ने पूछा 'यह पढ़ाई हो रही है।'

'नहीं, प्रोफेसर साहब, ड्रामे की तैयारी कर रहा हूं।' हाजिर जवाब बहाल ने बिना हिचकचाते हुए उत्तर दियां।

'हां जानता हूँ जो ड्रामा तुम कर रहे हो ।' नलिनी की तरफ इशारा करके 'मिस जूलियट, जरा आप भी अपनी कौपी लावें ।' क्लास के कुछ लड़के तो खिलखिला कर हंस पड़े और कुछ ताकते रह गये । नलिनी प्रोफेसर साहब के क्लास से बाहर चली गई ।

कबाडी साहब को सब अच्छी तरह जानते थे । बहुत तेज़, ज़हरीली और मीठी जबान थी । मौके पर तीर मारते, जो ऐन कलेजे में लगता । कवि, उर्दू और अंग्रेजी के मशहूर लेखक, सोसाइटी में घूमने फिरने वाले, चलता पुर्जा । गोरा रंग, बिल्लारी आंखें यहूदियों की सी लम्बी नाक, जो आगे से तोते की चोंच की तरह थोड़ी सी मुडी हुई, छोटा मुंह, लम्बे दांत, जिस समय मुस्कराते मक्कारी और मिठास साथ साथ टपकती । कई कहते थे, अव्वल दर्जे के लफंगे हैं । सब लड़कियों को अपने घर पर ट्युशन' देते हैं ।

थोड़ों का ख्याल था कि कबाडी साहब इतने कबाडी नहीं जितना उनको बताया जाता है । टरकी जरूर हैं । प्रोफेसर साहब ने खामखा प्रेम बहाल से दुश्मनी मोल ले ली । उसने खुल्लम खुल्लम प्रोफेसर साहब की पोल खोलनी शुरू कर दी ।

'मैंने खुद अपनी आंखों से देखा है । नसीम भी मेरे साथ था । प्रोफेसर साहब लारेंस गार्डन में अपनी छोटी साली के साथ हाथ में हाथ डाले घूम रहे थे । हम दोनों झाड़ी के पीछे छिप गए और उनकी सब बातें सुनीं ।'

'क्या कह रहे थे' कई लड़कों ने पूछा'

'कह रहे थे ! और क्या कहना था बेटा, उस पर डोरे डाल रहे थे । कह रहे थे 'सुरैया तू क्यों डरती है—हम ोनों एक दूसरे से ...'

'नहीं । मैं बहिन के साथ धोखा नहीं...' साली ने कहा

'इसमें धोखे की क्या बात है । किसी को पता भी नहीं लग सकता । मेरी सुरैया, मेरा दिल मत तोड़ो ।'

'यह बात है । साली पर हाथ फेर रहे हैं । . लड़कों ने कहा ।'

'एक पर नहीं, दो पर एक साथ ।'

'शाबाश ।'

प्रोफेसर साहब को दो छोटी सालियां थीं । दोनों खूबसूरत और नौजवान और दोनों कुंवारी थीं । बेगम साहब को आठवां बच्चा होने वाला था । साली आधी घर वाली ।

'जब बेगम साहब को पता लगा '

'कैसे पता लगा ।' किसी ने पूछा ।

'बेटा मैंने बेनाम चिट्ठी डाली, तो उन्होंने जहर खा लिया । प्रोफेसर साहब को अब लेने के देने पड़े, और डाक्टरों के यहां दौड़े ।'

'उनको घर से निकाला नहीं ।'

'निकालना कौन सी आसान बात थी । बीच को साली से तो उन्होंने पहले ही शादी कर ली थी और छोटी को फंसाने की युक्तियां सोची जा रही थीं ।

'घर का भेदी लंका ढ़ावे।'

'बेचारी का जीवन बर्बाद कर दिया। वह न यहां की रही न वहाँ की। आजकल तो भाई बहन का भरोसा नहीं। कलियुग है, कलियुग।'

'पर सोसाइटी उनको कुछ नहीं कहती।'

'सोसाइटी का काम उसके कर्ता धर्ताओं पर निर्भर है। और कबाडी साहब उसके अमूल्य रत्न हैं। उनको निकालने से सोसाइटी को हानि है। उनको नहीं।'

'ख़ूब, मान लिया क़बाडी साहब को।'

कबाडी साहब थोड़े बदमाश और ज्यादा बदनाम थे। सुन्दर नौजवान लड़कियों के बीच में बैठ कर दिल्लगी और शोर करने की थोड़ी सी सनक थी।

अब तो सब दुनियां को पता चल गया कि प्रेम बहाल और नलिनी एक दूसरे को प्रेम करते हैं। 'ब्लैक बोर्ड पर उनकी तस्वीरें बनने लगीं और कालेज मेगजीन में कविताएं छपने लगीं। नलिनी इस भेद के खुलने पर कुछ क्रोधित भी हुई और कुछ खुश भी। क्रोधित इसलिए कि सब लड़के उसका मजाक करेंगे और खुश इसलिए कि सब लड़कियां उससे रश्क करेंगी। उस दिन से नलिनी बहाल से कतराने लगी और किसी से ऊंचा सिर करके नजर नहीं मिलती।

दोनों प्रेमी अब आपस में छिप छिप कर मिलने लगे। प्रेम का रहस्य रोमांच ज्यादा बढ़ता गया। प्रेम में पागल नलिनी सच्चे और झूठे बनाबटी प्रेम में भेद नहीं देख सकती

थी। उसकी दृष्टि में प्रेम स्वर्ग की तरह अमूल्य वस्तु थी, जिसमें किसी प्रकार की मिलावट ही नहीं। बहाल के लिए नलिनी का चपल जीवन उसकी जवानी उसकी मिठास सोना थी। वह शारीरिक सम्पर्क चाहता था और नलिनी चाहती थी आत्मिक मिलन।

जब दोनों कहीं शून्य एकान्त में मिलते तो उस निर्जन नीरव स्थान में उनकी कामना शक्ति भड़क उठती। कामनाओं को दबाना हमारे आचरण का काम है। परन्तु आजकल की 'सोसाइटी, अंग्रेजी सभ्यता, रोमांचक उपन्यास, और रस भरे चित्रपट, हमारे आचरण को फिसलन पर ले जाते हैं। कालेज के लड़के और लड़कियां हफ्ते में कम से कम दो चार बार तो सिनेमा अवश्य ही देखते होंगे और जो कुछ देखते हैं उसे स्वयं अनुभव करने की अभिलाषा साथ लेकर घर लौटते हैं। कहानी के कल्पित नायक और नायिका की तरह किसी से प्रेम कर अपने जीवन को रोमांचक नाटक बनाना चाहते हैं।

जो कुछ वे सिनेमा के चित्रपट पर देखते हैं उसे सच समझते हैं। कहानी के 'हीरो' और 'हिरोइन' दोनों दुनिया की बहुत सी कठिनाइयाँ सह कर अंत में एक दूसरे से मिल जाते हैं और जीवन का सुख लूटते हैं। कितनी मृग मरीचिका हैं। वास्तविक जीवन में कभी ऐसा नहीं होता जैसा हम चित्रपट पर देखते हैं।

बहाल और नलिनी एक दिन अलग अलग सिनेमा देखने गये पर 'बौक्स' में दोनों मिल गए। नलिनी के साथ उसकी

सहेली रजनी थी, और बहाल के साथ रजनी का भाई । चारो बौक्स में बैठ गए । दाहिनी तरफ रजनी का भाई, वीच में नलिनी, बगल में प्रेम और बाईं आर रजनी । दो कांटों के बीच गुलाब । नलिनी का कांपता हुआ हाथ बहाल के हाथ में पड़ गया । और पिक्चर खत्म होने तक उसी शिकंजे में फंसा रहा । जीवन का रोमांच शुरू हो रहा था ।

'डिनर' के वाद रजनी ने भाई को नलिनी को घर छोड़ आने को कहा ।

'तुम क्यों तकलीफ करते हो किशन, मैं उधर ही जा रहा हूं । अगर मिस गुप्ता बुरा न माने तो मैं उनको......'

रजनी ने नलिनी की तरफ देखा ।

नलिनी खामोश थी

मानं स्वीकृति लक्षणम् ।



जान पहचान

एक दिन सरदार चंचलसिंह गांधी चौक के फाटक के बाहर ३३३ नं० के तांगे का इंतजार कर रहे थे। तांगे में एक ही नमकीन को देख कर उनका दिल खुशी से बांसों उछलने लगा, आज मौका हाथ लगा है।

तांगे की पिछली सीट पर वह पतली कमर वाली, तिरछे शोख नयनों वाली, लाल जार्जेट की कमीज, जिसकी 'V' कि शक्ल का गला लम्बी गर्दन को और भी लम्बी बना रहा था जिसकी नोक वहां खत्म होती जहां से छाती का उभार ऊपर उठ कर दो मनमोहक गोल गोल टीलों के रूप में परिवर्तित हो जाता है। कमीज बिल्कुल सीने से चिपकी हुई और बड़े घेरे की काली क्रेब की सलवार, सिर पर काली जाली की चुन्नी जिसका लाल किनारा खूबसूरती का चांद लगा रहा था। गजब थी गजब।

चंचल सिंह सौन्दर्य पारखी थे। कोई चीज उनकी निगाह से छूटने न पाई, पैरों में ऊंची एड़ीदार किड लेदर की बनी हुई 'सेंडलस' जिनमें से 'क्युटिक्स' में रंगी लाल लाल उंगलियां बाहर झांक रही थीं दिल चाहता था दौड़ कर चूम लें। वाह रे मेरे मजूनूं। कल तक सरदार साहब का दिल डगमगा रहा था, परन्तु आज यह रंग देख कर अकेला पाकर, उन्होंने जल्द ही फैसला कर लिया—यही है मेरी, अभी रिश्ते का फैसला कर ही रहे थे कि तांगा निस्बत रोड की तरफ मुड़ गया।

कोई दस साल से इस मशहूर सड़क की मरम्मत हो रही है पर ढीठ औरत की तरह, जितनी मरम्मत की जाय उतना ही विगड़ती जाती है। इसके ठीक होने की कोई आशा नहीं की जा सकती। लाहौर की सड़कें सब सड़कों से ज्यादा मशहूर हैं। जो उन पर से एक बार निकल जाता है वह क्या कभी उन्हें भूल सकता है। आजकल 'म्यूनिसिपैल्टी' ने खूब गहरी, ३,४ फुट चौडी नाली खुदवा रखी है। गत कई वर्ष से यहां गंदे नाले बनवाने का विचार हो रहा है। पहले जिस सड़क पर दो तांगे हिचकीले खाते आसानी से गुजर सकते थे, आज एक का निकलना भी कठिन हो रहा है।

'ओह, तनूं दिखदा नहीं...वाज मारी सी।'

'तेरी···तोरियां अक्खाँ अन्हियां हो गयिआं···चल मोड़ ·· परे भी कर।'

वापिस होना असम्भव था क्योंकि दोनों तरफ तांगों की लाइन लगी हुई थी और मौके पर पुलिस वाला कोई था नहीं, वरना जेब गर्म करने का लाजवाब मौका था। जब दोनों तांगों ने गुजरने की कोशिश की तो एक का बायां पहिया नाली की तरफ और दूसरे का दाहिना पहिया गली की तरफ खिसकाना पड़ा। ज्योंही पहिया ईटों के ढेर पर चढ़ कर टेढ़ा हुआ, 'गांधी चौक' वाली ने चीख मारते हुए छलांग भरने की कोशिश की। उसकी किताबें उछल कर 'म्यूनिसिपैल्टी' की नाली में जा गिरीं।

चंचल सिंह ने साइकिल से कूद कर नाली में गिरी किताबें जल्दी जल्दी इकट्ठी कीं और एक किताब नाली में छिपा, बाकी की मिट्टी झाड़ कर तांगे के पास पहुँचा। सवारी तांगे वाले पर गुस्सा निकाल रही थी।

'देख कर क्यों नहीं चलाते।'

'अगर चोट लग जाती' चंचल ने कहा।

'अपना रास्ता देखो सरदार जी।'

'दिन का वक्त है, दिखाई नहीं देता।' चंचल सिंह न माने।

'सरदार जी, बारह बजने में बहुत देर है।'

चंचल ने किताब बढ़ाते हुए कहा 'ये आपकी किताबें'

'थैंक्यू'। उसने किताबें लेकर सीट पर रख लीं और मुंह मोड़ दूसरी तरफ देखने लगी। तांगा रुक जाने से भीड़ इकट्ठी हो गई थी।

'क्यों ब्रेक लग गए।'

'ओ. निसबत रोड है हीरामंडी नहीं।'

जिसके मुंह में जो आ रहा था वही बक रहा था किसी को इतनी तमीज न थी कि तांगे में एक लड़की बैठी है। बल्कि यों कहें कि उसे देख कर तो और भी मस्ता रहे थे। किसी की बहू, बेटी या बहिन होगी, हमारा क्या रिश्ता, सबकी गृद्ध दृष्टि उस पर लगी हुई थी। उस बेचारी ने परेशानी से सिमटती हुई बार बार जालीदार चुनरी से अपने आप को उनकी दृष्टि से बचने का असफल प्रयत्न किया। गुस्से से

उसने तांगे वाले से कहा 'चलता क्यों नहीं, जल्दी चलाओ।'

'बीबी जी तांगा है, मोटर नहीं' यह कहते हुए उसने दो चार चाबुक बेचारे घोड़े पर चला ही दी और मरियल घोड़ा लड़खड़ाता हुआ आगे बढ़ा । जैसे ही राजा साहब तांगे की बुम से बंधे 'मैक्लोड रोड' और 'निसबत रोड' के चौराहे पर पहुँचे भल्ला साहब से टक्कर हो गई ।

'राजा साहब किधर'

चंचल ने भल्ले के मुंह पर उंगली रख कर चुप रहने का इशारा किया ।

'ठहरो' भल्ले ने कोट पकड़ते हुए कहा ।

'क्यों बना बनाया काम बिगाड़ते हो यार ।'

'एकदम छलांग नहीं मारनी चाहिए, डूबने का खतरा होता है ।'

तांगा बहुत दूर निकल गया था ।

'सब काम पर पानी फेर दिया' चंचल ने निराशापूर्ण स्वर में ठंढ़ी आह लेते हुए उत्तर दिया ।

'यह बगल में क्या दबाया है'

'अवतार की मनोकामना उपन्यास है ।'

'उनकी प्रेमपूर्ण भेंट होगी'

'और क्या ?'

भल्ला ने तिरछी नजर से देखा ।

चंचल सिंह ने होस्टल में पहुँच कर किताब तकिये के नीचे दबादो । अकेले में चुपचाप किताब को खोज कर पढ़ा ।

प्रथम पुरस्कार……हिन्दी।

विजेता……कुमारी सरला गोयल, कितना सुन्दर नाम है। सरला गोयल, गोयल, कोयल।

कोयल कूकी, बाहर आने का समय हो गया।

बहार आ गई। तब पेड़ों पर हरियाली छा गई। रंग बिरंगे सुन्दर सुन्दर फूल खिल कर अपनी मादक सुगंध से नवयौवन, सजी धजी मदमत्त सुकुमारी नारी की तरह सबको आकर्षित कर रहे थे।

खेतों में चारो ओर हरियाली छाई थी और रंग बिरंगे फूल, फूल फूल कर उस मनमोहक प्राकृतिक गलीचे की शोभा दूनी कर रहे थे।

डाली डाली पर पक्षीगण चह चहा रहे थे। कोयल कूक रही थी। सारिका गा रही थी। फलों के कारण झुके वृक्ष पृथ्वी का चुम्बन कर रहे थे।

ऋतुराज ने जड़ चेतन सब में नूतन प्रसन्ता, नवजीवन फूंक दिया था। प्रेमी अपनी प्रेयसी के ध्यान में मग्न थे।

जिस प्रकार वसन्त के आते ही, प्रकृति अपने जाड़े का भद्दा मोटा झोटा चीयर फेंक अत्यन्त सुन्दर सुकोमल आवरण धारण करती है, उसी प्रकार लाहौर निवासी भी ऋतुराज के मंगलमय आगमन होते ही अपने पेबन्द लगे—लड़ाई के कारण मोटे झोटे, कपड़ों का परित्याग कर वसंती रंग में रंगे, नूतन वस्त्र धारण करते हैं।

'आया वसन्त, पाला उड़ंत' की कहावत भी प्रसिद्ध है।

वसंत के दो दिन पहले ही से चंडाल चौकड़ी ने गांधी चौक में साहब जी के चाचाजाद भाई नरेन्द्र सहगल के चार मंजिला मकान से पतंग उड़ाना शुरू कर दिया। सर्दी के दिनों में लाहौर में वेशुलार उड़ती हैं परन्तु बसंत के दिन लाहौर के ऊपर का आसमान रंग बिरंगे तिकोने, पूंछदार गुड्डे, गुड्डियों से इतना भर जाता है कि सूर्य भी नजर नहीं आता। कई टोलियां जुआ लगा कर पतंग उड़ाती हैं और कभी कभी तो जोश इतना बढ़ जाता है कि उधर पतंग कटी और इधर किसी का सिर कट गया। सिर न सही पर जेब तो अवश्य कट जायगा।

सवेरा होते ही पतंग उड़ने लगती है। चंडाल चौकड़ी के अड्डे से सिर्फ़ एक पतंग उड़ रही थी। बसंती रंग की पतंग और बीच में नीले रंग का चांद तारा, कोई दो दर्जन पतंगे और कई गोले मांझे के जमा कर रखे थे। असलम खां पिराचा को पतंग उड़ाने का बहुत शौक था और पतंग उड़ाने की जालसाजियों में भी वह खूब माहिर था।

पतंग बाजी के दाव पेंच, प्रेम बाजी के दाव पेंच से दूसरे नम्बर पर हैं। पतंग को फंसाना, पेच डालना और काटना एक कला है। उसको वही समझ सकता है जिसने पतंग बाजी की हो। पिराचा साहब छोटी मोटी पतंग से पेच नहीं लगाते थे। भल्ला साहब चारो तरफ नजर दौड़ा कर इस बात का ख्याल रखते कि कौन सी पतंग बाजी मार रही हैं। फिर उस पतंग के दाव पेंचों का अध्ययन किया जाता वह कैसे

वार करता है—किस तरह दाव मारता है। जब छोटी मोटी पतंग को काट कर आसमान साफ हो जाता तब बड़े होशियार पतंग बाजों में मुकाबला होता।

पिराचा साहब की एक खास तरकीब थी। सब पतंग बाज अक्सर ऊपर से झपट कर पेच डालते हैं, पर पिराचा साहब नीचे से आते थे। जैसे ही पेच लड़ा उन्होंने ढील देकर प्रकट कर दिया कि पतंग कट गई। जैसे ही दुश्मन धोखे में फंसा कि उन्होंने ढील देना बन्द कर दो चार हाथ खींच मार दी। पतंग को वो काटा—वो काटा। इस तरकीब से आज उनकी जीत पर जीत हो रही थी।

पर राजा साहब और सहगल को बिल्कुल पता न था कि आसमान पर क्या हो रहा है। वे तो बड़े साहब की दूरबीन से बारी बारी मकानों पर चलती फिरती पतंगों की जांच कर रहे थे।

'सहगल, भाई वह लाल दुपट्टे वाली तो मुझे पसंद नहीं आई।' दूरबीन सहगल को देते हुए चंचल ने कहा।

सहगल ने दूरबीन लगा घरों के अन्धकार में रोशनी ढूंढना शुरू किया।

'उस हरे छज्जे वाले कमरे में देखो, क्या कर रही है।'

राजा साहब ने दूरबीन लगाई और बोले 'नंगी नहा रही है।' इस उछल कूद और शोरगुल में नहाने वाली की नजर उनकी तरफ पड़ गई। फिर क्या कहने, धोती लपेट छज्जे पर खड़ी हो उसने वह क्रोध पूर्ण शब्दों की वर्षा की कि

यदि चंडाल चौकड़ी के स्थान पर कोई और होता तो मुंह छिपा कर भाग जाता पर वे तो ढीठ ठहरे ।

उस दिन वे डोर लपेट चुपके से खिसक गए । कहीं ऐसा न हो कि बसन्त का मजा जाता रहे । घर वालों से कह कर ऊपर जाना बन्द करवा दे ।

आज बसन्त,..आज बसन्त,
बसन्त का दिन है ।
उड़ती पतंगें ।
प्रेम दीपक पर, मंडलाती पतंगें ॥

चंचल ने सवेरे ही बसंती पगड़ी बांध ली । चंडाल चौकड़ी के दूसरे मेम्बरों ने भी अपने आपको कोई न कोई बसंती चीज पहन कर सजा लिया । सजधज कर तैयार होते ही राजा साहब ने अपनी पूरी फौज के साथ गांधी चौक पर धावा बोला । दिन चढ़ते चढ़ते सारे घरों की छतों पर पीली बसंती पोशाकें नजर आने लगीं । जैसे हरियाली में सरसों के पीले फूल अपने यौवन के गर्व से मत्त हो झूम रहे हों । किसी ने पीला दुपट्टा लिया था, किसी ने हलकी पीली कमीज पहनी थी । कोई बसंती साड़ी में सजी हुई प्रसन्नता से फूली नहीं समाती थी और इधर राजा साहब व्यस्त थे उनको छांटने में । दूरबीन से देख, परख कर, अलग अलग श्रेणियों में विभक्त कर रहे थे ।

'और देख उधर...'

'कौन, पीली साड़ी वाली ।'

'हाय...हाय ।'

'सरला गोयल ।'

'जान कर तो नहीं आई।' फिर दूरबीन लेकर राजा साहब ने सरला गोयल को ढूंढ़ना शुरू किया। जगदीश भल्ला ने असलम को उस मकान की तरफ इशारा करते हुए कहा :

'डोबा दे ओ डोबा,'

असलम ने ऊंची उड़ती पतंग से लाल मकान पर लड़कियों के झुंड की तरफ 'डाइव' मारी और पतंग तेज़ी से 'डाइव—बाम्बर' की तरह सिर पर से गुजर गई। किसी ने दुपट्टा फेंका, किसीने लंगर मारा। पर असलम ने ऐसी खींच दी कि पतंग किसी के हाथ न लगी। चंडाल चौकड़ी जोर से खिल खिला कर हंस पड़ी।

'बदमाश— —सब बदमाश हैं।'

'खसमां नूं खाने।'

'सिवाय पतंग उड़ाने के और कोई काम ही नहीं।' तीसरी लड़की ने जिसकी शक्ल बदशक्ल थी, मुंह बनाते हुए कहा।

'सरकार आपके दर्शन करने आते हैं,' पिराचा ने उत्तर दिया।

लड़कियों ने पास में इकट्ठी गंडेरियों से 'रेपिड फाइर' शुरू कर दिया। और चंडाल चौकड़ी ने गंडेरियां उठा कर चूसनी शुरू कर दीं।

'और मारो सरकार, बसंत के फूल हैं फूल।'

'क्या बात है, ऊपर आकर एक आदमी ने पूछा।'

'देखो भराजी (भाई साहिब) ओ सामने मकान वाले साड़े नाल टिचकरां करदे ने।'

'सालो तुम्हारी मां बहिन नहीं है।'

'तुम्हारी तो है, बन्द करके रखो।'

'तुम्हें शर्म नहीं आती।'

'खूब, शर्म हमें कि उन्हें आनी चाहिए।'

'तुमने मजाक किया था?' जरा गुस्से से लड़कियों से पूछा।

'झूठ बोलता है।'

'जरा आप लोग यहां से चले जायं।'

'तुम्हारे बाप का घर है। उन्हें क्यों नहीं कहते कि सब दर्बे में चली जायें।'

'हां तुम नीचे चली जाओ। ये कालेज के लड़के हैं। इनसे मूंह लगाना ही गलती है।'

ये वे दिल नहीं, जो पिघल सकें,
ये वे सिर नहीं जो कभी झुक सकें।



चलो पिया की ओर

चंचल और सहगल साहब के प्रेम की बात चंडाल चौकड़ी के मेम्बरों से कैसे छुपी रह सकती थी। भल्ला ने उसी दिन सबको बतला दिया कि चंचल की प्रेमिका ने उसे एक भेंट दी है। किताब—बन्दर को बनात की टोपी।

सरदार साहब की प्रेमिका का नाम सरला गोयल है। इसका पता लगते ही सबके मुंह से उसी का नाम निकलने लगा। प्यार करते थे चंचल सिंह, पर बातों से स्पष्ट प्रकट होता था कि चंडाल चौकड़ी श्रीमती सरला गोयल को पांडवों की द्रौपदी बनाना चाहती हो।

'सरला को खत लिखा ?' भल्ला ने पूछा।

दूसरे कोने से असलम ने थोड़ी ठंढ़ी आहें लेते हुए कहा, 'हाय सरला।'

'खबरदार जो उसकी तरफ नजर उठाई। वह राजा साहब की आसामी है।' सहगल जी बोले।

'कल खाऊ, डड खाऊ,
रल खाऊ, खंड खाऊ।'

असलम ने जोड़ दिया।

'मुझे डड ही मुबारक है, पर तुम्हारी परछाया कोसों दूर।'

'मुझसे क्या नाराजगी है राजा साहब, भूल गये वे दिन...। आज चुबच्चे भर गये टोंटियां बहने लगीं।'

'तुम्हारे हुस्न से डर लगता है।'

सब साथी खिलखिला कर हंस पड़े।'

'मेरे सौन्दर्य से।'

'इन बीसवीं सदी की लड़कियों का कुछ विश्वास नहीं। कभी सुन्दरता और यौवन की ओर आकृष्ट होती हैं और कभी पैसे की ओर। पैसे मेरे पास हैं इसलिए यौवन और सौन्दर्य को दूर ही रखना चाहता हूँ।'

'छई रन्न गई बसरे नूं गई।'

ओ मोहनी बाबा डांग वालिया सरदार।

तेरियां, पोहावां गुड्डियां, छई,

छई रन्न गई बसरे नूं गई।'

'बस करो अपनी छई, सरदार साहब से दिल का हाल तो पूछ लेने दो।'

'उनको मुबारिक हों सरला की गालियां,

हमको मुबारिक, हमारी सखियां।'

'मान जाओ, भाई असलम राजा-साहब तो मजाक कर रहे थे। आंख मारते हुए भल्ला ने कहा।

'राजा साहब आप उन्हें चिट्ठी क्यों नहीं लिखते।'

'लिखने का विचार तो किया पर क्या लिखूं।'

'हाय। हाय। अगर मेरी कोई प्रेमिका होती तो पत्रों में हृदय चीर कर रख देता। सरदार जी, अंग्रेजों ने कलम के जोर से पहले हिन्दुस्तान को वश में किया फिर उसको नाच नचाया। कलम में जोर होना चाहिए। प्रेम पूर्ण पत्र हृदय

में प्रेमाग्नि भड़काता है। जो बात हम मुंह से नहीं कह सकते वह पत्र में लिख सकते हैं। प्रेमिका पर प्रेम प्रदर्शित करने का एकमात्र उपाय है···पत्र।'

'तुम लिख दो मेरी ओर से।'

नेकी और पूछ पूछ।

चंडाल चौकड़ी ने चारों दिमाग लगाकर सरला गोयल को सरदार साहब की ओर से पत्र लिखा। जब लिफाफे पर पता लिखा गया तो चंचल सिंह ने घबड़ा कर कहा, 'डालना मत। मैं तो मजाक कर रहा था।'

'यह खूब, प्रेम में मजाक कैसा।'

'अभी तो सिर्फ यों ही बातें हुई हैं, कहीं···'

'काम बिल्कुल पुख्ता हो जायगा। आप बिल्कुल न घबड़ाइए।'

प्रेम और मुहब्बत, झूठे दुःख और फरेब से भरा हुआ पत्र डाल दिया गया। चंचल तो प्रेम में पागल हो, अपनी बची खुची थोड़ी सी अक्ल दूसरों के सुपुर्द कर चुका था।

प्रेम में भूला पंछी,
प्रेम की बातें सोचे।
दूर देश में बैठा साजन,
मिलन के सपने देखे॥

चंचल हर समय प्रेम के स्वप्न ही देखा करता। अब उसका अधिकतर समय डाकिये के इंतजार में कटता था। सरदार साहब दो दिन तक बड़ी व्याकुलता से पत्र का इंतजार

करते रहे। तीसरे दिन उस शुभ दिन सरला का पत्र आया, जिसे पाते ही उनका दिल बाग बाग हो गया। एकबार पढ़ कर उसे छिपा कर रख लिया और किसी साथी को बताया नहीं। जब सब सो गये, उन्होंने टेबिल लैंम्प जला कर पढ़ना शुरू किया।

'राजा जी क्या हो रहा है'

'कुछ नहीं, मच्छर काट रहे हैं। मार रहा हूँ।'

'खयाल रखना कहीं प्रेम चन्द न मारा जावे।'

राजाजी ने बत्ती बुझा दी।

'खुदा ने सिखाया इश्क करना,
इश्क सिखाना हो तो सुलाना सिखा दो।'

'सो जा असलम, बकवास मत कर'। भल्ला ने डांटा।

कई दिनों तक दोनों प्रेमियों में चंडाल चौकड़ी के डाकखाने से प्रेम सन्देश जाते रहे। चंचल को रस भरे पत्रों का उत्तर सहगल साहब सोलह आने देते थे। कुछ दिनों के बाद चंचल को पूर्ण विश्वास हो गया कि सरला उसके प्रेम में उसी तरह तड़क रही है, जिस तरह वे उसके बिना।

प्रेम का स्वाद इसी में है कि दोनों तरफ मिलन की उत्कट अभिलाषा लगी हो। दोनों तरफ बराबर आग लग रही हो।

आग तो छोड़ो, सरदार साहब के हृदय में तो ज्वालामुखी फट रहा था।

बह प्रेम पत्र में अपना दिल खोल कर रख देते। दिल

की तो असली उमंग प्रेमी अपने पत्र में लिख सकता है उन्हें जबान पर लाने की शायद हिम्मत भी न हो। फिर जो हार्दिक आनंद प्रेमी को पढ़ कर प्राप्त होता है—

वे खत नहीं हैं, दिल के फसाने

एक दिन उनसे न रहा गया, अपने प्रेम विदग्ध दिल का हाल स्पष्ट शब्दों में लिख दिया :

मेरी हृदयेश्वरी सरला,

कितना मधुर नाम है तुम्हारा। देवोपम सौन्दर्य, अलौकिक छवि और इतना कर्णप्रिय नाम है सरला। मेरी सरला !! तुम्हारा नाम स्मरण करते ही मेरा मन मयूर वत हो नाच उठता है। हृदय तरंगित हो जाता है। शरीर में एक प्रकार की अद्भुत सिहरन सी उठती है जिससे मेरा अंग प्रत्यंग प्रफुल्लित हो जाता है। मैं मदमत्त हो जाता हूँ। जल, थल, दशों दिशाओं से—सरला सरला की ही प्रतिध्वनि सुनाई देती है। और उस समय जो आनन्द मुझे प्राप्त होता है वह किसी समाधिस्थ मुनि को भी दुर्लभ है। उसे व्यक्त करने के लिए लेखनी अशक्त है। वह हृदय की गूंज, सरला—सरला, प्रत्येक अक्षर से उत्पन्न होने वाली अद्भुत विद्युत तरंगें मेरे हृदय को तुम से मिलता है।

प्राणेश्वरी, हृदय में तुम्हारी ही मनमोहक छटा समाई हुई है। दिन रात एक तुम्हारा ही ध्यान करता हूँ मेरे हृदय पटल पर अंकित तुम्हारा मनमोहनी छवि ही मेरे जीवन का एक सहारा है। तुम्हारे मिलन की अभिलाषा ही मेरी

जीवन सांस है । जिस प्रकार अथाह महासागर में पथ भ्रमिक नाविक की आशाओं का एक मात्र केन्द्र ध्रुव है, वही उसका पथ प्रदर्शक है, वही जीवन है, उसी प्रकार तुम्हारे मुख मंडल की सान्ध्य दीप सी अलौकिक दीप शिखा मेरा एक मात्र जीवनाधार है ।

तुम्हारे चन्द्र मुख के दर्शन करने के लिए ही मैं समय कुसमय गलियों में ठोकरें खाता फिरता हूँ और जिस दिन तुम तांगे में मुझे देख थोड़ा मुस्करा देती हो मैं अपने उस दिन के जीवन को सार्थक समझता हूँ ।

प्राण वल्लभे ! तुम प्रत्येक पत्र में लिखती हो कि तुम मुझसे कितना प्रेम करती हो, जितना चकोरी चन्द्र से, कमलिनी अंशुमाली से और चातक स्वाती बूंद से ।परन्तु जब कभी मैं तुम्हारे मुखारबिन्द से दो चार मधुर शब्द सुनने का अवसर प्राप्त कर बात चीत करने का प्रयत्न करता हूँ, तुम मुख मुद्रा गंभीर बना कर दूसरी ओर मुख मोड़ लेती हो—प्रकट में इतनी अनिच्छा क्यों इस तरह मेरे विरह विदग्ध हृदय पर आघात न करो—सरला—प्यारी सरला—तुम मेरी बन जाओ ।

यदि तुम मेरी इस छोटी सी इच्छा को पूर्ण न करोगी तो मुझे अपने जीवन से हाथ धोना पड़ेगा । क्या तुम्हें यह पढ़ कर दुःख नहीं होगा कि तुम्हारा और केवल तुम्हारा चंचल, रावी में डूब मर गया । कल रात भर मैं रावी के पुल पर घूम कर चन्द्रमा की अलौकिक चांदनी में भविष्य को

सोचता रहा। मैं गया था वहां अपने प्राणों को नष्ट करने, विरह विदग्ध हृदय की प्यास रावी के शीतल जल से बुझाने, परन्तु सहसा ज्यों ही मैं कूदने को तैयार हुआ, तुमने पुकार कर कहा 'नहीं, नहीं। क्या तुम्हें मेरा विश्वास नहीं। जानते हो मुझे कितना दुख होगा।' तुम्हारी इस अवरोध के कारण ही मैं जीवित रह गया। तुम्हीं ने तो कहा था कि तुम अवश्य मिलोगी, पर हृदयेश्वरी कब ?

जीवन की एक मात्र साध सिर्फ तुमसे दो घड़ी बात करनी है। यह मेरी अंतिम अभिलाषा है। आशा है तुम मेरे जीवन से खिलवाड़ नहीं करोगी।

कल मैं दर्वाजे के पास तुम्हारी राह देखूंगा, मुझे एक इशारा दे देना।

तब तक के लिए विदा, विशेष मिलने पर···

तुम्हारा पागल प्रेमी

चंचल

जब सबेरे चंचल गुसलखाने गया, भल्ला ने सरदार जी के सिरहाने से पत्र निकाल कर पढ़ा और फिर यथास्थान रख दिया। जब राजा साहब बाहर आये असलम ने अपनी बेसुरी आवाज में गाना शुरू किया :

'चिट्ठिये दर्द फिराक वालिए,
ने ले जा ले जा सोनेहडा सोनेह यार दा।
नदियां ढोंगियां पुल वे पुराना,
मैं अनतारू तरन न जानां,

नज़र न आवे कंडा पर दा । चिट्ठिए दर्द फिराका...'

दूसरे दिन सहगल साहब के हाथ का लिखा जवाब आ पहुँचा :

हृदयेश,

जिस दिन से मैंने तुम्हें देखा है उसी दिन से मैं तुम्हारे प्रेम में पागल हो रही हूँ । मुझे एक घड़ी भी तुम्हारे बिना चैन नहीं पड़ती हर समय तुम्हारी ही याद सताया करती है हर समय तुम्हारी मधुर मूर्ति के ही गुन गाया करती हूं ।

मेरे बिछुड़े हुए साथी, तेरी याद सतावे,
बार बार तेरी सुधि आवे।

मेरे प्यारे आंखों के सितारे, मैं तुम से प्रेम करती हूँ, और तुम्हारे लिए सब कुछ कर सकती हूँ । तुम्हारी याद ही मेरे जीवन का सहारा है । वह कौन सा सौभाग्यशाली दिन होगा जिस दिन मैं अपने प्यारे से दो घड़ी बात कर सकूंगी।

क्या मजा होगा, जब मिल बैठेंगे दीवाने दो ।

मैं तुमसे मिलने के लिए तड़प रही थी परन्तु दुनिया का डर था । कोई ऐसी जगह नजर नहीं आती जहां हम दोनों एकांत में बैठ कर दो चार प्रेम की बातें कर सकें । 'लारेंस गार्डन' की 'लवर लेन' में आजकल बड़ी भीड़ रहती है, फिर सोचा आपको कालेज में बुला लूँ पर वहां लड़कियों से डर था । आज एक उपाय नजर आया है । कल माता जी दो चार रोज के लिए स्यालकोट जा रही हैं, घर में मैं अकेली ही रहूँगी । आप बारह बजे (दोपहर) मेरे यहां पधारने का कष्ट करें । मैं आप की राह देखूंगी ।

मिलने की आशा में बैठी तुम्हारी चकोरी
....

दूसरे दिन चंचल को चैन कहां । सूट, बूट डाट कर वह कालेज की घड़ी की तरफ देखकर मिनट गिनता रहा । इंतजार की घड़ियां बड़ी मुश्किल से कटती हैं । उसकी तैयारी और थोड़ी परेशानी को देख कर भल्ला ने पूछा,

'क्या बात है साहब ।'

'कुछ नहीं । सोच रहा था कि घंटा घर तो बनाया होगा, पर वह घड़ी उसमें कैसे लग गई ।'

'घंटा घर पहले जमीन पर लिटा कर बनाया गया था, फिर उसको खड़ा कर दिया गया ।'

चंचल ताड़ गया कि भल्ला बाजी मार गया । उसका पारा चढ़ गया और उन्होंने गुस्से से कहा, मैंने तुम से हजार बार कहा कि ऐसे समय मुझसे बहस मत किया करो ।

'बारह बजने में दो घंटे बाकी हैं ।'

राजा साहब ने 'मुहम्मद याकूब एंड सन्स' अनार कली का सिया हुआ और खुद प्रेस किया हुआ नया सूट, सजी हुई नेकटाई लगाई, रूमाल का समोसा बना कर ऊपर की जेब में रखा । थोड़ा सा 'ईविनिंग इन पेरिस' साहब जी की मेज से उठा कर लगाया ।

सज धज कर सीटी बजाते हुए........

'प्रेम नगर में बनाऊंगी घर मैं'—की तान गुनगुनाते पैदल अनार कली की तरफ चल दिये ।



एक पड़ाव

प्रेम और नलिनी में प्रेम बढ़ता गया। जो नदी ढाल पर बह रही हो उसकी धारा का तेज होना स्वाभाविक ही है। यदि उस तेजी में कोई अड़चन उपस्थित हो जाय, या कोई बहुत बड़ा प्रस्तर खंड धारा के बहाव को रोक ले तो नदी तत्क्षण अपना प्रवाह बदल देती है परन्तु वही द्रुतगामिनी, प्रवाहशालिनी नदी मैदान में पहुँचते ही बहुत धीमी पड़ जाती है। नदी अपने उद्गम स्थान से निकलने के पश्चात अनेक विघ्न बाधाओं का सामना करती मैदान तक पहुँचती है और यही कारण है कि उसका पथ टेढ़ा मेढ़ा हो जाता है। प्रत्येक पहाड़ी नदी को अड़चनों का सामना करना ही पड़ता है। चालाक प्रेम तो इन पत्थरों को अच्छी तरह जानता था पर लवलीन नलिनी प्रेमान्ध होने के कारण उस धारा की सुन्दर चपलता को ही देख सकती थी। वह नहीं जानती थी कि नदी का कलकल शब्द नदी के पत्थरों से टकराने से उत्पन्न हृदय का करुण क्रंदन है। यह कलकल नहीं, नदी की मूक आहें हैं। जिन्हें हृदय के कानों द्वारा ही सुना जा सकता है। यदि कोई उसे यह बताने का प्रयत्न भी करता तो वह न सुनती। क्योंकि वह स्वयं धारा में आकंठ निमग्न हो चुकी थी और बिना किसी जगह ठोकर खाये चेतना प्राप्त होना असम्भव नहीं तो दुःसाध्य अवश्य समझती थी।

जो अमूल्य समय अब तक पढ़ने में लगता था, उसका दुरूपयोग प्रेम के पत्र पढ़ने में होने लगा। वह अपना अस्तित्व खो चुकी थी। उसके प्रेम विह्वल दिल को तब ही चैन पड़ती जब वह प्रेम का मुस्कराता मुख कालेज में देख लेती। जिस दिन प्रेम रुखाई से बोलता उसका दिल टुकड़े टुकड़े हो जाता। उसने प्रेम के लिए अपना आत्माभिमान त्याग दिया और उसके हाथों की कठपुतली बन गई। उसके लिए सब कुछ अब प्रेम था और प्रेम के लिए नलिनी का शरीर एक प्राण और चेतना रहित पत्थर की सुन्दर मूर्ति थी। मूर्ति के सौन्दर्य का पारखी कलाकार ही होता है, और हो भी कौन सकता है ?

प्रेम नलिनी को रजनी के घर से उसके घर पहुँचाने का बहाना करके ले आया। आज जिन्दगी का पहला दिन था जब वे दोनों प्रेमी एकांत में काम मोहित हो प्रश्न सूचक नेत्रां से चुपचाप एक दूसरे की ओर देखते हुए, मोटर को अगली सीट पर बैठे थे। प्रेम ने मोटर बाग के एक कोने में खड़ी कर दी। बिजली की रोशनी पेड़ों के अनगिनत पत्तों और मोटर के पर्दों में से छन छन कर, बिल्ली के डर से दुबके हुए कबूतर की भांति बैठी, नलिनी पर पड़ रही थी। नलिनी आंखें बन्द किए बैठी थी। भयातुर हो, कहीं बाघ न दृष्टिगोचर हो जाय।

परन्तु उसके हृदय की गति बिल्कुल विरुद्ध थी। वहां प्रेम की हिलोरें आ रहीं थीं। उसका मन मयूर प्रेमोन्मत हो

नृत्य कर रहा थ । उसकी विचार धारा एक अद्भुत दिशा की ओर वह रही थी । वह सोच रही थी, अंग्रेज़ी की मशहूर कहावत 'आल इज फेयर इन लव एंड वार' अर्थात् प्रेम और लड़ाई में सब कुछ जायज़ है क्या ही सुन्दर उक्ति है। उसका दिल तड़प रहा था वह चाहती थी कि प्रेम उसे अपनी दृढ़ भुजाओं में जकड़ कर उस काम ज्वाला को शांत कर दे जो रह रह कर इतने दिनों से उसके हृदय में भड़क रही थी । वह ऐसा स्वर्ण अवसर रात्रि और बाग तथा एकांत स्थल हाथ से नहीं खोना चाहती थी ।

उस स्निग्ध प्रकाश में प्रेम की लोलुप दृष्टि नलिनी के यौवन पर लगी हुई थी । वह आज इस एकांत में उस यौवन को देख सकता था, दिल भर कर देख ही क्यों उपभोग भी कर सकता था, क्योंकि उसकी स्वभामिनी विलास की घोर निद्रा में अचेत हो सो रही थी । उसे यह पता न था कि चोर उसकी मात्र निधी यौवन और सतीत्व को लूटे ले जा रहा है। शीतल वायु के झोंके से दुपट्टा खिसक कर एक बगल को गिर गया । नलिनी इसकी ओर से बिलकुल बेखबर थी । उसके यौवन के उन्माद को प्रकट करती हुई उसकी उभरी हुई छतियां, प्रेमोन्मत्त हृदय की प्रत्येक धड़कन के साथ, प्रेम को अपनी ओर आकर्षित कर रही थीं । नंगी पतली बाहें, शांत और सुस्निग्ध प्रकाश में और भी आकर्षित दृष्टिगोचर हो रही थीं। उसका वह आकर्षण प्रेम को मूक निमन्त्रण दे रहा था ।

प्रेम ने नलिनी का एक हाथ अपने हाथ में लेकर थोड़ा

सा दबाया, मानो बिजली का 'स्विच आन' कर दिया गया हो। धीरे धीरे नलिनी का अंग प्रत्यंग शिथिल होने लगा। प्रेम विद्युत के प्रवाह के साथ साथ उसने मदमत्त, अधखुली आंखों को थोड़ा सा खोलते हुए धीमे स्वर में कहा :

'प्रेम मुझे घर पहुँचा दो।'

'प्रेम नगर।' प्रेम ने मक्कारी से कहा।

नलिनी चुप थी।

प्रेम ने हल्की सी सीटो और दबी जबान में गाना शुरू किया।

'प्रेम नगर में बिताएंगे जीवन,
तज के सब संसार।'

नलिनी स्वयं प्रेम नगर में घर बनाने को उतावली हो रही थी। परन्तु स्त्री सुलभ लज्जा वश कुछ कहने को बाध्य थी। प्रेम के इस गति ने उसे वह हिम्मत दे दी जो उसे अभी तक प्राप्त न थी! प्रेम के लिए वह सब कुछ तज देगी। जहां १० मिनट पहले उसकी आत्मा चीत्कार करके कह रही थी कि यह पाप है, सब बदल गया, अब वह प्रेम के लिए सब कुछ त्याग करने को तैयार हो गई। त्याग करने वाला अवश्य ही वीर होता है। वह प्रेम के लिए सब कुछ करेगी! जूलियट की तस्वीर उसकी आंखों के सामने आ गई। हां ठीक तो है। वह जूलियट बनेगी, लैला बनेगी और बनेगी शीरीं। उसका प्रेम उसका रोमियो, मजनूं और फरहाद होगा।

धीरे से नलिनी की बांह पकड़ते हुए प्रेम ने कहा 'प्रिये, जिस दिन की हम दोनों इतनी व्याकुलता से राह देख रहे थे वह आज आ पहुँचा और तुम······

'नहीं प्रेम······'

अब प्रेम ने उसे अपनी तरफ खींचा। नलिनी ने चतुर सौदागर की तरह रुक कर अपने आप को उसके अर्पण किया।

'नलिनी तुम मेरे मन मन्दिर की रानी हो। तुम मेरा जीवन हो। मैं तुम्हें प्रेम करता हूं। अपनी बना कर इस तरह तुम से हजार गुना ज्यादा प्रेम करता रहूंगा। हम दोनों सुख में जीवन बिताएंगे।'

नलिनी के दिल से छोटी सी आह निकली। प्रेम के ये शब्द उसके दिमाग में गूंज रहे थे। 'तुम्हें अपनी बना कर—' वह तो उसकी बन चुकी थी कभी की।

नलिनी की छाती अब प्रेम से छू रही थी। रोशनी की मादकता, चित्रपट पर देखे हुए रोमांच, यौवन, एकांत (एवं काम पिपासा) इन सब ने मिल कर प्रेम को अंधा बना दिया। उसने झपट नलिनी के सुन्दर कपोल पर प्रेम का प्रथम चिन्ह अंकित कर दिया।

अपने को प्रेम के करपाश से मुक्त करती हुई बनावटी गुस्से से नलिनी ने कहा 'मुझे घर ले चलो।'

'मैं इतने दिन राह देखता रहा। आज तुम मेरे दिल में रहोगी।'

नहीं प्रेम—पागल मत बनो। मां इंतजार कर रही होंगी।'

'तुम्हारे प्रेम ने मुझे पागल बना दिया है।' उसको दोनों भुजाओं में लेते हुए कहा 'मैंने इतने दिन तक इंतजार किया। आज मां को इंतजार कर लेने दो।'

'नहीं प्रेम, यह ठीक नहीं है वह बात...'

'मेरी जान। मैंने खबर भिजवा दी थी कि तुम आज रात रजनी के यहां ठहर रही हो।'

'रजनी के यहां'

'उसके यहां तुम पहले कई बार ठहर चुकी हो। मां को जरा भी शक न होगा। इससे पहले कि नलिनी कुछ और हीला हुज्जत करे, प्रेम ने उसे बाहों में दबा कर एक और प्रेम चिन्ह उसके मुख पर अंकित कर दिया।

प्रेम उसे अपने घर तो नहीं ले जा सकता था। पहले उसने सोचा, लखवीर के यहां ले चलो वह 'टेम्पल रोड' पर अकेला रहता है। पर फिर ख्याल आया कि इतनी रात को शोर सुन कर कहीं पड़ोसी न जाग पड़ें और नलिनी भी शायद लखवीर को देख कर शक करे। फिर बहाल के भी लखवीर पर पूर्ण विश्वास न था। उसकी शादी अवश्य जल्दी होने वाली थी पर लाहोरिलों का क्या भरोसा 'दो काजियों में मुर्गी हराम' इसलिए प्रेम उसे 'एम्प्रेस रोड' की तरफ ले गया। एम्प्रेस रोड का नाम बहुत मशहूर है। वहां एक बहुत मशहूर होटल भी है। मशहूर होने का दो ही तरीका है, या तो

बहुत अच्छा या बहुत बुरा। अच्छाई तो एम्प्रेस रोड के पास से भी होकर नहीं निकली होगी। 'इजर्टन होटल' में प्रेम नलिनी को ले गया।

पुलिस की आंखों में धूल झोंकने के लिए आगे के दो कमरे 'गेस्टस' के लिए बाकी सब कमरे घंटा दो घंटे ठहरने वालों के लिए 'रिज़र्व' रख छोड़े थे। बाहर का एक कमरा उन दोनों को मिल गया।

दूसरे दिन, बहुत सवेरे जब नलिनी की आंख खुली तो उसने एक नई ही दुनिया देखी। वह स्वर्णिम स्वप्न नाश हो चुके थे। नग्न सत्य मुंह बाये सामने खड़ा था। उसे अपनी परिस्थिति का थोड़ा थोड़ा आभास हुआ। उसके चारो ओर की दुनिया उलटी पुलटी पड़ी थी और वह खो चुकी थी अपना अमूल्य धन, स्त्री की सबसे अमूल्य सम्पति।

थोड़ी हो भूल एवं आचरण की दुर्बलता के कारण वह वासना का शिकार बनाई जा चुकी थी। उसके आचरण को भ्रष्ट करने वाला, उसके कौमार्य को नष्ट करने वाला प्रेम वहां न था। वह कभी का नौ दो ग्यारह हो चुका था। वह रोने लगी... .. पर व्यर्थ, रोना बिगड़ी को तो नहीं बना सकता। आज उसे अपने जीवन की पहली और संभवतः अन्तिम भूल पर खेद ही नहीं बल्कि महान दुःख हो रहा था।

आस पास वाले कमरों से अजीब तरह की आवाजें आ रहीं थीं, जिन्हें सुन कर नलिनी घबड़ा कर खड़ी हो गई

कोई नशे में चूर कुछ बक रहा था, कोई गाना गाने की कोशिश में था। किसी ने पास के कमरे की कुंड़ी खटखटा कर कहा :

'राय साहब आधा घंटा हो गया।'

अंदर से ऊंची आवाज में उत्तर मिला 'तुम्हारी घड़ी में होगा, मेरी में तो सिर्फ पांच मिनट हुए हैं।'

थोड़ी देर खामोशी रही। फिर किसी लड़की ने चीख कर कहा : 'खालिद, इसे उठाओ।' पास के कमरे में शोर पड़ गया। नलिनी ने सामने के दर्वाजे की धीरे से कुंड़ी खोली और अंधेरे में गायब हो गई। सड़क पर पहुँच उसकी हिम्मत टूट गई। उसके पैर लड़खड़ाने लगे और वह चल न सकी।

कोई मुझे यहां इस समय देख कर क्या कहेगा, उसने सोचा। शक्ति एकत्रित कर वह उठी और दो चार कदम चल कर रुक गई।

स्टेशन की तरफ से एक तांगा आ रहा था, उसे रोकना चाहा, पर रुका नहीं। कुछ दूर जाकर वह रुक गया और जब वह लड़खड़ाती हुई उस तक पहुँची तो पिछली सीट पर बैठी हुई सवारी ने पूछा 'कहां जाना है।'

मर्द की आवाज सुन कर नलिनी घबड़ा गई। मारे क्रोध के उसका खून तेजी से दौड़ने लगा। उसने घृणा पूर्वक उत्तर दिया, 'कहीं नहीं।'

सहगल ने नलिनी की शक्ल और आवाज को पहचान कर

कहा 'मिस गुप्ता, इधर इस समय कैसे ?'

'कौन' जरा घबड़ा कर नलिनी ने पूछा ।

'आपका मनमोहन सहगल ।'

'ओह्व ।'

'आ जाइये जहां हो, पहुँचा दूंगा ।'

नलिनी उस तांगे में सहगल के साथ जाना नहीं चाहती थी, पर तीसरे आदमी तांगे वाले को देख कर, उसे भरोसा हो गया कि सहगल उसके साथ धोखा नहीं कर सकता।

दोनों चुप थे। नलिनी एक तरफ देख रही थी और सहगल दूसरी तरफ। नलिनी ने वे चंद घड़ियां वर्षों के समान काटीं।

वह कांपते हुए दिल से घर पहुँची। कमरे में बत्ती जल रही थी। मां उसके पैर की आहट सुन कर दौड़ती हुई बाहर आई 'नलिनी'

नलिनी मां के पैरों पर गिर पड़ी और फफक फफ़क कर रोने लगी ।

'मैं पहले ही जानती थी कि तुम्हारी शिक्षा का यही फल होगा ।'

फिर भी मां—मां थी । उसने अपनी पश्चाताप की अग्नि में धधकती, रोती और सिसकती पुत्री को उठाकर गले से लगा लिया ।



आगे कदम

अनारकली में बड़ी भीड़ थी। जमीन पर चादर बिछाकर लगाई खिलौनों की दूकान से लेकर भगवान सिंह की दही लस्सी की दूकान तक हजारों मर्द, औरतें युवा, वृद्ध, लड़के लड़कियां, अमीर और गरीब, कंधे से कंधा रगड़ते इधर से उधर आ जा रहे थे। परन्तु सब दूकानदारों की, और नौजवान ग्राहकों की आखें लड़कियों की उन टोलियों पर लगी हुई थीं, जो एक दूकान से निकल कर दूसरी में घुस जातीं। अनारकली में सबसे ज्यादा रौनक दीवाली के दिन होती है। इतनी भीड़ होती है कि कालेज के लड़कों को अपनी इच्छा पूर्ति का पूरा मौका मिलता है और इससे पहले कि कोई उनको पकड़े वे भीड़ में गुम हो जाते हैं।

सबसे ज्यादा ग्राहक कपड़े की दूकानों को घेरे खड़े थे। सच पूछिये ता लाहौर की लड़कियों को कपड़े और फैशन ने बर्बाद कर दिया है। घर में सूखा रोटी खाने को न हो परन्तु पहनने को रेशमी 'क्रेब' चाहिए।

अनारकली में कपड़ों की बहुत सी दूकानें हैं। सब विदेशी कपड़े का व्यापार करती है। देशी कपड़े से लाहौरियों को सख्त नफरत है जो मुलायमियत और जो 'ग्रेस' विलायती कपड़े में होती है वह कभी देशी कपड़े में नहीं आ सकता !

'नहीं, मुझे असली विलायती माल चाहिए।' एक लड़की ने 'मैसूर-जार्जेट को एक तरफ फेंकते हुए कहा।

दूकानदार ने जल्दी जल्दी रंग विरंगे थान आल्मारियों में से उतारना शुरू किया। साथ में वह अपनी टिप्पणी भी देता जाता था। लाहौर के सब दूकानदार लड़कियों की 'साइकालोजी' —मति, अच्छी तरह समझते हैं। किसी चीज को ग्राहक के हाथ बेचना यही मतलब रखता है कि दूकानदार ग्राहकों की विचारशक्ति को पूरी तरह से अपने वश में कर ले। दूकानदार की बातें और कपड़े की रग-विरंगी भड़क ग्राहक को फंसा लेती है। इच्छा न होते हुई भी खरीदने को बाध्य कर देती है।

दो औरते बुर्के पहने हुए दूकान में आईं और दूकान में पैर रखते ही बुर्क का पर्दा पाछे फेंक आगे बढ़ीं। मुख का बुर्का उठाते ही दूकान में एक नई रोशनी सी हो गई। उनके मुखों की कान्ति से लड़की कोई १७, १८ वर्ष की होगी। दूसरी अधेड़ अवस्था में पहुँच कर भी सुन्दर थी। उसी दूकान के सामने से दो देहाती लड़कियां मैली कमीज और सल्वार पहने हसती निकलीं।

'नी जनको'

'हां। नी मनको,'

'देख बिलकुल नया छापा।'

लड़कियां उस मोटी छींट की छाप को देख कर बहुत प्रसन्न हो रही थीं और अन्दर राहत बेगम किसी रेशम के गाढ़े रंग पर गुस्सा निकाल रही थी।

'मुझे बहुत महीन रेशम चाहिए। निनान है ?'

'बेगम साहिबा इससे पतला रेशम तो आपको मिलेगा ही नहीं।'

'अगर मिल जाय तो १०० रु० गज में भी खरीद लूँ।' दूसरा थान सामने फैलाते हुए, 'देखिये सरकार, यह दस रुपये गज है।'

'कीमत की कोई फिक्र मत करो। अच्छी चीज चाहिए। सिर हिलाते हुए बड़ी बेगम ने कहा।

'बेगम साहिबा, आपको रुपये की क्या परवाह, हम भी दूकानदार हैं पर पुराने ग्राहक को अच्छी चीज देनी चाहिए। ओ नं० ३ वह ४२० नं० वाला थान लाओ जो फरेब कोटला वाली बेगम साहिबा ले गई हैं।'

नं० ३ दूसरा थान लेने गया और लालाजी ने मुंह बनाकर जरा हाथ हिलाते हुए पूछा, 'छोटी बेगम की शादी... ..'

'हां, उनका दहेज बना रही हूं। तब ही तो चाहता हूँ कि चीजें अच्छी होनी चाहिए। शादी जीवन में एक ही बार होती है। ऐसी चीजें जीवन में बार बार थोड़ी ही बनती हैं।'

'पर मुझे तो ऐसे कपड़े चाहिए जो मैं रोज पहन सकूं। बक्स में रखे रखे तो कीड़े ही खा जावेंगे।' राहत ने कहा।

'आज कल की लड़कियों का दिमाग बिगड़ गया है, जब मेरी शादी हुई थी तो सूट पर ५ पौंढ किनारी लगी थी। अब ये लड़कियां उसे पुराना फैशन बताती है।'

'जी हां, तब ता हम लाग भी बहुत कपड़ा बेचते थे। अब

तो कपड़े का दाम भी क्या रह गया। छोटी बेगम का 'टेस्ट' बहुत अच्छा है। आजकल तो सब ऐसी ही चीजें पसंद करती हैं पर शादी में तो चीजें भारी होनी चाहिए वर्ना बाराती क्या कहेंगे। बेगम तो बहुत खुशनसीब हैं। कहां, शुभ काम हो रहा है।

'खान बहादुर मुकर्रर खां के लड़के से।'

'ओहो, उनको तो मैं बड़ी अच्छी तरह जानता हूँ। वे कल ही तशरीफ लाए थे। बहुत सा कपड़ा हमारी ही दूकान से खरीद कर ले गये। मुझे क्या पता था।'

इतने में नं० ३, ४२० नम्बर का थान लेकर आ गया। दूकानदार ने बड़े शौक से उनपर हाथ फेरते हुए इस नजाकत और अन्दाज से खोला जैसे पेरिस की नग्न नर्तकी डान्स में आम जनता के सम्मुख अपने सुन्दर शरीर को नंगा करती है। दूकानदार फौरन ताड़ गया कि लड़की को रेशम का रंग पसंद नहीं।

'और कोई रंग। मुझे गाढ़ा गुलाबी अच्छा नहीं लगता।'

सरकार मैं तो आपको दिखा रहा हूं। यह टुकड़ा ही बचा और उसे नवाब साहब को बेच चुका हूं। उसका दूसरा निकाह हो रहा है। कितना अच्छा कपड़ा है। अभी कल ही पार्सल खोला था। देखते देखते बिक गया। बस एक सूट का कपड़ा बचा है। जरा लगा कर देखिये।'

छोटी बेगम ने किनारा लेकर अपने जिस्म से लगाया शीशे में प्रतिबिम्ब देखने लगी।

'क्या गजब का लगता है। अगर वादा न किया होता तो आपको जबर्दस्ती दे देता, चाहे आप लेते या न लेते।'

'नहीं भाई यह टुकड़ा तो हमारा हो गया। यह तो तुम्हें देना ही पड़ेगा। हम तुम्हारे पुराने खरीदार हैं।'

'पर सरकार वह बिक चुका है।'

'मैं तो नहीं दूंगी।' छोटी बेगम ने उस पर काबू करते हुए कहा।

सब खुश थे।

चंचल सिंह भी १२ बजे तक यह रंग तमाशा देख दिल बहलाते रहे। होस्टल से चले हुए उन्हें दो घंटे हो चुके थे। जब दूकान के पास से निकले तो उन्होंने सामने लगी घड़ी पर नजर डाली। बड़ी सुई बारह की तरफ बढ़ रही थी, छोटी सुई से मिलने। आज उनका प्रथम 'अपाइंटमेंट' संयुक्ति था। देर न हो जावे इस विचार से उन्होंने कदम बढ़ाया।

चंडाल चौकड़ी ने उन्हें पढ़ पुख्ता कर दिया, परन्तु सरदार जी अनारकली में से जाते हुए फिर सबक दुहरा रहे थे। पहले क्या कहना है उनका कोमल हाथ पकड़ कर—घुटने के बल बैठ कर मैं कहूँगा "मेरी जान, मेरी......'

पीछे से तांगे वाले ने जोर से पुकारा 'सरदार जी तांगा'। उन्होंने तांगा ले लिया। जैसे ही वह अनारकली से अस्पताल रोड की तरफ मुड़े तांगे का पहिया कोई ३ फुट गहरे गढ़े में गिरा और सरदार साहब की लहरियेदार पगड़ी सिर से उतर

कर नाली के अन्दर जा गिरी। आस पास वाले सरदार जी की यह हालत देख कर, हंस दिये। 'सरदारजी बारह बज गये' किसी ने दूर से कहा।

इसमें चंचल सिंह का क्या कुसूर, कसूर था तांगे वाले का या लाहौर की 'म्युनिसिपैल्टी' का जिनका उसूल है कि अगर गढ़े नहीं होंगे तो बरसात का पानी कहां इकट्ठा होगा।

चंचल जल्दी से तांगे से उतरा और सामने की दूकान से एक छपी हुई काली सफेद धारी वाली पगड़ी खरीदी, जल्दी जल्दी बांधी और फिर गांधी चौक की तरफ चल दिया। जैसे ही तांगा थोड़ा सा बढ़ा कि चार 'बागडनियां' उनके पीछे लग गईं। उन्होंने तांगे का पायदान पकड़ लिया और जोर जोर से गाना शुरू किया।

'मोहे माई, पैसा दे,
पैसा नहीं तां धेला दे।
मोहे माई........'

चंचल ने गुस्से से कहा, 'चल हट, कोई धेला वेला नहीं मिलेगा।'

लड़कियों ने तांगे के साथ दौड़ना जारी रखा।

अंबाले से सरदार आया,
बड़ा मामदार आया
मोहे माई ....'

'जाओ, कोई काम करो। मैं पैसा वैसा नहीं दूंगा।' जरा रोब से चंचल ने कहा। एक भिखारिन जिसकी उम्र १५-१६

साल होगी किसी और का बच्चा गोद में उठा बड़े नखरे से उनकी ओर बढ़ी। लाल रंग की गंदी चोली में से उसकी उभरी हुई छाती बाहर नजर आ रही थी, जिसे दो साल के बच्चे ने अपने हाथों में पकड़ रखा था। नीचे से फटे लंहगे में से उसकी गंदी पर यौवन के उभार से पुष्ट जांघ नजर आ रही थी। बाल गुंथे हुए, पैरों में कांसे की एक पैजन झनझनाती हुई टेढ़ी नजर से देखती, उनकी ओर बढ़ी। उसने मटक कर कहा, 'सरदार जी चार पैसे मुझे तो दो,' साथ ही उसने बच्चे के हाथ से अपनी ममीं छुड़ा ली।

चंचल सिंह को 'मूड' आ गया था, उसने चार आने निकाल लड़की की खुली हथेली में रख दिये। वह आंख मार कर एक तरफ चली गई।

तांगा थोड़ा तेज हो गया। पर उन छोटी लड़कियों ने पायदान न छोड़ा। तांगे के साथ भागती रहीं और गाती रहीं।

ओ तरी बहू जीवे,

ओ तेरा मुंडा जीवे,

मोहे माई दे आह मोहे माई दे।'

तांगे वाले ने घूम कर एक सांटा मारा वह एक दो को लगा। उन्होंने पायदान को छोड़ कर चंचल सिंह को दिल खोल कर गंदी गालियां दीं। चंचल को सरला से मिलने की जल्दी थी, वरना वह कभी मां बहिन की गालियां सुन कर चुप न रह सकते थे।

लड़कियां वापिस जाते हुए एक दूसरे तांगे के पीछे लग गईं।

तांगा सवा बारह के करीब गांधी चौक के फाटक पर पहुँच गया। तांगे वाले ने पूछा, 'अन्दर चलूं।

'नहीं चौराहे पर ही' सरदार साहब उतर गए और चार आने निकाल कर तांगे वाले को देने लगे। तांगे वाले ने बिगड़ कर जवाब दिया,

'वाह सरदारजी दिये भी तो क्या—चार आने।'

'चार आने नहीं तो मेरा सिर।'

'सरदारजी संभाल कर बोलो, अपना सिर अपने पास रखो और मुझे मेरा किराया दो।'

'अनारकली से चार आने नहीं तो क्या रुपया लेगा।

'धेली', (आठ आने)।

'वह किस हिसाब'।

'रेट है, तुमने कोई किराया ठहराया था? पहले घंटे के आठ आने।'

चचल सिंह का दिल तो था कि झगड़ा करे पर देर हो रही थी। समय चार आने से ज्यादा मूल्यवान् था।

उन्होने पतलून की जेब से पैसे निकालने को हाथ डाला। 'माडल टाउन' से आने वाली लारी अपने अड्डे को जा रही थी। हार्न बजा, इसके पहले कि सरदारजी एक तरफ हटें, गाड़ी का बांया पहिया और सैकड़ों गढ़ों को छोड़ कर तांगे के पास वाले गड्ढे में चक्की चलाता हुआ गुजरा। साथ ही सरदार साहब के नये सूट पर ठंडी सड़क का छिड़काव कर

गया। उन्होंने पहले अपने सूट और फिर लारी की ओर देखा। पर क्या करते, मजबूर थे।

पास के नल पर जा जल्दी जल्दी सूट पर पड़ी कीचड़ की छींटें साफ कीं और साढ़े बारह बजे फाटक के अन्दर कदम रखा।



शिकार

सरला के पिता को मरे कई साल हो चुके थे। किसी जमाने में वे किला गुजर खां के थाने में हेड क्लर्क थे। इसी कारण कुछ रुपया और दो मकान छोड़ गये। एक गांधी स्कवेयर में था, जिसमें सरला अपनी मां के साथ रहती थी। दूसरा किला गुजर खां में था जिसके किराये से घर का काम चलता था। सरला की मां सिलाई और बुनाई के काम में बहुत निपुण थी। यह जीवका का दूसरा सहारा था। बहरहाल काम अच्छी तरह चल रहा था।

सरला जब बड़ी हुई उसकी शिक्षा का प्रश्न उत्पन्न हुआ। शुरू शुरू में तो सरला की मां को कुछ खर्च करना पड़ा। परन्तु जैसे ही सरला सयानी हुई और उसे घर की आर्थिक अवस्था का हाल मालूम हुआ वह बड़ा दिल लगा कर काम करने लगी। हर क्लास में प्रथम स्थान प्राप्त करके छात्रवृत्ति से स्कूल की फीस पूरी कर देती। बी० ए० का अंतिम वर्ष था। सरला का विचार बी० ए० करके बी० टी० करने का था पर मां चाहती थी कि अब उसकी शादी कर दी जाय। लड़की का स्थान पति का घर है। पढ़ कर भी घर बसाना है। जीवन भर अध्यापिका तो नहीं रह सकती। लड़के की तलाश जारी थी। पर जाति में लड़के बड़ी कठिनता से मिलते हैं।

जैसे बाजार में हर वस्तु की कीमत बढ़ती जाती है, वैसे ही लड़के भी अपना दाम बढ़ाते जा रहे हैं। पहले पढ़े लिखे की मांग थी, जोकि 'सोसाइटी' में मदद दे सके। फिर खूबसूरत चाहिए, जो घर की अभिनेत्री बन सके, परन्तु अब जब समाज में लड़कियां पढ़ने लगीं और 'मेकअप' से अपना काला रंग गोरा बनाने लगीं तो तीसरी शर्त ज्यादा बढ़ा दी गई—दौलत।

सरला बी० ए० पास हो जायगी। काफी यगेय और सलीकेदार लड़की है। खूबसूरत भी, वरना राजा साहब कैसे लट्टू होते। पर एक कमी थी। रुपया उसकी मां के पास कुल २,००० था। इस बात को वह अच्छी तरह जानती थी।

पैसे से सब काम बेटा, पैसे से सब नाम,
पैसा खर्चो इस दुनिया में चाहो सो इनाम।

बिरादरी में दो चार अच्छे लड़के थे जिन पर उनकी नजर थी। सोहन लाल मास्टर का लड़का अभी बड़ी कचहरी में बाबू बना है। नौकरी कच्ची है, पक्की होने पर सुना है दस हजार लेंगे। नौकरी वालों की तो सोचना ही व्यर्थ है क्योंकि जितनी ही छोटी नौकरी होगी उतने ही अधिक दाम होंगे। रामदास की मां ने ५,००० रु० और ११ तोले सोना मुंह से मांगा है। सुना है लड़का तो नेक है। पर मां नहीं मानती। किसी अच्छे के पास नहीं लगने देती। चाहती है बहू को अंगूठे के नीचे दबा कर रखें।

दो और लड़के हैं जो कालेज में पढ़ रहे हैं। डिगरी मिलते ही उनके भी दिमाग आसमान पर चढ़ जायँगे। करें तो क्या—सरला के लिए लड़का भी अच्छा चाहिए जो उसे प्रसन्न रख सके। साथ ही लायक हो। धनवान हो। सरकारी नौकरी हो तो बहुत अच्छा। फिर अपनी जाति का हो और घर का भी अच्छा हो। लड़के को इतनी शर्तें पूरी करनी होंगी। अखबार में विज्ञापन निकलवा दिया जाय, लड़कियों के कस निकलते हैं, ज्यादातर .....

एम० ए० पास ब्राह्मण की आवश्यकता है एक कुंवारी पढ़ी लिखी, सुशील लड़की की। अवस्था १५, १६ वर्ष, गाना बजाना जानती हो गृह कार्य में कुशल हो। जाति का कोई बंधन नहीं। लड़के को १०० रु० माहवार की नौकरी मिलने की बहुत जल्द आशा है। घराना बहुत अच्छा, रिश्ते के लिए बातचीत पोस्ट बक्स नं० १०६ के द्वारा कीजिए। लड़की का हुलिया फोटो के साथ भेजना जरूरी है।'

सरला की मां आखिर पुलिस वाले की स्त्री थीं। बहुत होशियार, चालाक तलियों पर सरसो उगा जाय। लेकिन वह विधवा थी। दूसरे पैसा पास न था और सबसे बड़ी अड़चन थी सरला—लड़की की शादी करना आवश्यक था। वह कोई ऐसी तरकीब सोच रही थी जिससे ये तीनों अड़चने दूर हो जायं।

एक दिन वह केदार नाथ के साथ 'हीन' के यहां गई। वहां उनका काफी आना जाना था। वे कोई खास अमीर

तो थे नहीं और न उनकी लड़कियां ही सरला के समान होशियार तथा सुन्दर थीं। फिर भी उन्हें लड़के एक से एक मिले थे। दो जमाई फौज में कप्तान थे और तीसरा आई० सी० एस० में था, सरला की मां कई दिन सोचती रही की 'हीन' की लड़कियों की सफलता का क्या कारण है। थोड़े दिन ताड़ने के बाद ही जान गई कि उसकी सफलता की कुँजी मिसेज हीन है। और उसने वही तरीका अख्तियार करने का फैसला कर लिया।

सरला का चचेरा भाई विलायती राम जो दिवान साहब के नाम से मशहूर थे, काला रंग, मुंह पर चेचक का दाग, भारी भरकम शरीर, घुंघराले बाल, २ इंच लम्बे सफेद दाँत जो अंधेरे में भी साफ नजर आते थे। इन सब बातों के होते हुए भी दीवान साहब में एक खूबी थी, जो उनकी बदसूरती पर पर्दा डालती थी, उनका दिल भी उतना ही बड़ा था जितना बड़ा शरीर। वह बहुधा मौसी से मिलने गांधी चौक आया करते। सरला की मां भी उसकी बड़ी खातिर करती थी। वह बिना पैसे के कचहरी वगैरह भुगता आता और किला गुजरखां के मकान का किराया भी ले आता। परिवार उसका बहुत ही अनुगृहित था। सरला की मां अपना अनुग्रह दिखाने में जरा भी संकोच नहीं करती। इसलिए दीवान साहब हफ्ते में दो बार हर रविवार को जरूर वहां पहुँच जाते। सरला के गाने सुनने का उन्हें बहुत शौक था। इसलिए जब कभी वह आते, सरला को एक दो

गाने सुनाने ही पड़ते । सरला दिवान साहब की सूरत से घृणा करती थी परन्तु जानती थी कि परिवार की खुशी दीवान साहब के खुश रहने पर बहुत कुछ निर्भर है । इसलिए एक दो गाने सुना देती । उसका क्या घिसता था ।

दीवान साहब बिरादरी में घूमने फिरने वाले बन्दे थे और बिरादरी के सब लड़के को जानते थे । अपनी याददाश्त क लिस्ट से सब योग्य कंवारे लड़कों के नाम सुना जाते । उन्होंने बताया कि कालेज में दो लड़के बिरादरी के हैं । एक सरदारी लाल जो एम० ए० सी० पास करके कालेज में 'डिमांस्ट्रेटर' लग गया है और दूसरा गुरुशरण बलिया जो एम० ए० में प्रथम आया है और आई० सी० एस० की तैयारियां कर रहा है । दोनों ही कुंवारे हैं । पर सुना है कि सरदारी लाल का 'घोगा' उठा है और उसे अच्छे २ घरों के रिश्ते आ रहे हैं, पर गुरुशरण का अभी कोई इरादा नहीं । घर में सिवाय बड़े भाई और बाप के और कोई नहीं ।

अगले इतवार को सरला की मां ने दिवान साहब को दावत दी और दोनों लड़कों को बुलाया । दावत दीवान साहब की ओर से दी गई । सरला की मां ने अन्दर से ही दोनों लड़कों को तौला । गुरुशरण उम्र में छोटा, गोरा रंग और इकहरे बदन वाला था । बातों में वह बहुत भोला लगता । डिमांस्ट्रेटर साहब गैसें सूंघ सूंघ कर थोड़े से सठिया गये थे । उन्हें कपड़े पहनने की तमीज अभी नहीं थी और न बात करने का सलीका । वह तो हमेशा 'एस० ओ० टू' की सोचा

करते। मां को गुरुशरण ही पसन्द आया और उसने उस समय एक बार तो अवश्य सोचा होगा कि यदि वह मेरी सरला का पति बन जाय......

सरला को इस पार्टी का बिल्कुल पता नहीं था। मां रसोई में चाय बना रही थी वह सीधी कमरे में घुस आई और दो अजनबी लड़कों को देख कर ठिठक गई। गुरुशरण उठ खड़ा हुआ। दीवान साहब ने हाथ जोड़ कर नमस्ते की और 'डिमांस्ट्रेटर साहब' कुर्सी में लड़खड़ाते हाथ मलते रहे। सरला 'आई एम सौरी' (मुझे खेद है) कह कर जिस दर्वाजे से आई थी उसी से वापस चली गई।

'यह मेरी चाची की लड़की है। इतनी योग्या है कि क्या कहना। चाची को तुम जानते ही हो, उसने उसे अच्छे कालेज में पढ़ने भेजा है। सौ रुपया वहां का खर्च है। पर चाची कहती है कि जो कुछ है सरला का है। मैं थोड़े ही साथ बांध कर ले जाऊंगी। लाला जमनादास गोयल का नाम तो सुना ही होगा।

दोनों मेहमानों ने स्वीकृति सूचक सिर हिला दिबा।

'बहुत अमीर थे। सब जायदाद पत्नी के नाम छोड़ गये। एक ही संतान है।' एक दो हफ्ते के ब द दीवान साहब ने फिर बालिया को गांधी चौक में दावत दी। उस दिन सरला गलती से कमरे में नहीं आई पर बालिया 'मेंटल पिज' पर रखी सरला की फोटो को रह रह कर देखता रहा।

जब कभी दिबान साहब से मुलाकात हो जाती वालिया गोल मोल करके सरला के बारे में जानना चाहता। दीवान साहब कौन दूध पीते बच्चे थे। वे लच्छेदार बातें करके गुरुशरण की उत्सुकता और भी बढ़ा देते।

'मैं तुमसे कल मिलूंगा।'

'हां गांधी चौक में मिलना।' दीवान साहब ने हाथ मिलाते हुए कहा। पर दूसरे दिन जब वालिया वहां पहुँचा, दीवान साहब अपनी मटर गश्त से वापस नहीं आये थे इसलिए सरला की मां ने उनका स्वागत किया। वालिया जरा शर्मीला था इसलिए शिर झुकाए वह बहुत देर तक सरला की मां से बातें करता रहा। उसने बातों ही बातों में गुरुशरण के विषय में पूरी जानकारी प्राप्त कर ली।

'आज तो विलायती नहीं आया। फिर किसी दिन आना।'

'जरूर।'

एक दो हफ्ते के पश्चात फिर गुरुशरण आया और सरला की मां ने उससे बड़ी मीठी मीठी बातें कीं। रस मलाई के लड्डू और 'कोलर एंड सन्स' की 'पेस्ट्री' खिलाई। गुरुशरण के दिल में वह खुशी प्राप्त हुई जो मां हीन होने के कारण अभी तक प्राप्त न हो सकी थी। सरला की मां खामखा किसी न किसी बहाने सरला का नाम छेड़ देती और वालिया बड़े शौक से सुनता रहता।

दो चार महीने के पश्चात परिचय इतना घनिष्ट हो गया

कि वालिया 'लाल मकान' को अपना ही मकान समझने लगा। जब उसका दिल चाहता आ पहुँचता और वहां दिन प्रतिदिन उसका नया स्वागत होता। वह समझता था कि यदि औरतों में कोई होशियार औरत है तो, वह है सरला की मां। उसे घर और होस्टल में कभी ऐसा अच्छा और स्वादिष्ठ खाना प्राप्त नहीं हुआ था जैसा सरला की मां स्वयं अपने हाथ से पका कर पास बैठ कर अत्यन्त आग्रह के साथ खिलाती। उसका दिन प्रतिदिन बढ़ता गया। और वह वह स्वयं को भी 'लाल मकान' के कुटुम्ब का अंग समझने लगा।

कालेज में अब चित नहीं लगता था। सब लड़के उसे किताबों का कीड़ा समझते थे। कुछ चाहते थे कि वह अपना कुछ अमूल्य समय खर्च करके उन्हें भी सिखावे। पर सरला की मां कुछ नहीं चाहती थी, अपनी एक मात्र संतान सरला की उससे शादी करके उसे खुश देखना। शांति प्राप्त करने के लिए, वालिया लाल मकान पहुँच जाता।

एक दिन वह अकेला कमरे में बैठा कुछ सोच रहा था और सरला की मां उसके लिए रसोई घर में गाजरों का हलवा बना रही थी कि सरला अकस्मात कमरे में चली गई और वालियां को देख कर हल्की सी ओह करके रसोई घर की ओर गई। वालिया की ध्यान मग्नता भंग हो गई। और वह टकटकी लगा कर खुले दर्वाजे की ओर देखने लगा जहां से सरला की झलक देखने की आशा हो सकती थी।

धीरे धीरे सरला ने वालिया को अपना रूप दिखाना शुरू किया। परन्तु मां के सिखाए सबक के अनुसार दूर रहती।

वालिया के दिल में अनुग्रह के साथ साथ एक और भावना ने जड़ जमाना शुरू कर दिया। वह सरला की मां के फैलाए जाल में स्वयं फंसने लगा। जब कभी मौका मिलता सरला की मां, दोनों को अकेला छोड़ देती। वालिया बड़ी दिलचस्पी से सरला को फिलासफी और इंगलिश के लेक्चर देता। दोनों की मित्रता और प्रेम बढ़ता गया। वालिया सरला की तरफ खिंचने लगा पर सरला—उसे तो मां ने कूट कूट कर समझा दिया था, 'बेटा गैर मर्द को कभी हाथ मत लगाने देना।'

सरला भी जानती थी कि वालिया को वश में करने का एक ही तरीका है। वालिया उससे इतना प्रेम करने लगे कि पैसे वैसे की परवाह न कर वह उससे शादी कर ले। जब तक यह बात पक्की नहीं होती उसे वालिया को दूर से ही आकर्षित करना चाहिए।

कुछ दिन बाद वालिया 'लाल घर का इतना आश्रित हो गया कि वहां जाये बिना उसे चैन न मिलती। वह पढ़ने में ध्यान नहीं लगा सकता था। उसे प्रकट होने लगा कि आत्मिक और मानसिक सुख के लिए उसे सरला को अपनी अर्द्धांगिनी बनाना ही पड़ेगा। और शुभस्य शीघ्रं फलम् ....

जब सरला की मां ने देखा शुरूशरण चक्कर में फंस गया उसने सरला की डोर के और ढीलीं दे दी। दोनों का पेच लड़ गया। जानती थी कि अब मौका नाजुक है। उसे लड़कों के

वचन पर विश्वास नहीं था। उन्हें जबान बदलते क्या देर लगती है। शिकार को तब ही शिकार कहते हैं जब वह पूरी तरह से काबू में आ जाय। 'आई० सी० एस' के इंतहान के दिन नजदीक आ रहे थे। सरला की मां चाहती थी कि परीक्षा फल निकलने से पहले ही शादी हो जाये।

सरला ने गुरूशरण को यह झांसा दे रखा था कि उनके प्रेम का मां को पता नहीं। वे दोनों छिपछिप कर मिलते। प्रेम के पत्र लिखते। वह हमेशा गुरूशरण पर यह राब डालती कि अगर मां को इस बात का पता लग गया तो बहुत बुरा होगा। उसकी एक रईस लड़के के साथ सगाई हो चुकी है पर वह उससे घृणा करती है।

प्रेम का शिकार वालिया डर रहा था कि कहीं उसकी प्रेमिका उसके हाथ से निकल न जावे। परन्तु अपनी गरीबी की ओर दृष्टि डालने से उसकी हिम्मत पस्त हो जाती थी। एक दिन जब गुरूशरण आया तो सरला रो रही थी। गुरूशरण ने बड़ी व्याकुलता से पूछा, 'क्यों ? क्या बात है ?'

सरला ने सिसकियां लेते हुए कहा, 'माताजी ने शादी की...'

गुरूशरण के होशहवास जाते रहे। उसने बड़ी परेशानी से पूछा शादी...'

सरला रो रही थी।

'कौन सा दिन'

सरला ने रोते हुए कहा 'पंचमी'।

'पर यह कैसे हो सकता है सरला, हम एक दूसरे से प्रेम

करते हैं, तो ...'

'मैं तो तुम को इतने दिन से कह रही थी।'

'पर अब क्या हो सकता है।'

'मैं जान दे दूंगी, पर यह शादी......'

'एक उपाय है सरला'

सरला खामोश थी।

'हम दोनों भाग चलें और छिप कर शादी कर लें।'

सरला जोर जोर से रो रही थी।

'मैं कल इम्तिहान के लिए देहली जा रहा हूँ। हम दोनों चलेंगे और वहां पहुँच कर शादी कर लेंगे। जब शादी हो जायगी तब क्या हो सकता है।'

जब मियां बीवी राज़ी, तो क्या करेगा काज़ी।

दूसरी रात को दोनों 'फ्रंटियर मेल से देहली के लिए रवाना हो गये। दूसरी गाड़ी से सरला की मां भी देहली पहुँच गई।



वह काटा

सरदी के दिन थे। गलियों की सब लालियां धूप तापने के लिए दुपहर को या तो अपने घरों की छत पर बैठी थीं या आगे छज्जों पर। उनकी शक्ल देखकर चचल सिंह थोड़ा सा घबड़ा गये। चोर के पर नहीं होते। प्रेम आगे खींच रहा था और डर पीछे धकेल रहा था। हर एक आने जाने वाले को देखकर उनका डरपोक दिल घबरा जाता। हिम्मत करके वह चौक के बीच में पहुँच तो गये पर भीतर लाल मकान में जाने की हिम्मत नहीं हो। बाहर से ही ताकते रहे।

चौक में मर्द कम थे। एक तरफ कुछ लड़के गुल्लीं डंडा खेल रहे थे। कुछ छदाम को मार रहे थे। दो चार बनटों की टोलियां थीं। एक रील के तागे से छदाम की पतं॰ उड़ा रहा था और दो आपस में 'घिस्सा काट' कर रहे थे। चंचल ने सोचा—न मालूम यह बंदर सेना कहां से पैदा हो जाती है। एक मकान की सीढ़ियों में एक मोटी लाली गोद में तिनकों का बना छिक्का (छाज) लिए दाल चुन रही थी। सामने छज्जे पर दो औरतें बाल खोले एक दूसरे के सिर में जुएं देख रहीं थीं और पास के मकान में बैठे लालाजी उनको घूर घूर कर देखते भी जाते और साथ ही गन्ना चूस कर आने जाने वालों के सिर पर फूस थूकते जाते थे।

लाल मकान की सीढ़ियों का दवाजा खुला था पर सरला कहीं नजर नहीं आ रही थी। वह अवश्य अन्दर इंतजार कर रहीहोगी—चंचल सिंह ने सोचा।

चंचल इस इंतजार में था कि वे दो लालियां जो सामने मकान के छज्जे में बैठी बड़े गौर से उसकी तरफ देख रही हैं किसी तरफ नजर मोड़े और वह लाल मकान में घुसे। इतने में सिर पर टोकरी उठाये एक खोंचे वाला आया।

'पापड़ छोले, पापड़ छोले। छोले मसालेदार।
पापड़ कड़ाकेदार,
पापड़ छोले, पापड़……'

'ओ पापड़ वाले'

पापड़ वाले ने नहीं सुना।

'ओ छोलियां वाले', दूसरी लाली ने और जोर से पुकारा।

छोले-पापड़-वाला रुक गया। पास आकर टोकरी सिर से उतारी और नीचे रखदी। एक लाली ने रस्सी से बंधी टोकरी नीचे लटका दी। दूसरी ने कहा, 'धेले के चने, धेले पापड़, दो दोनों में बराबर बराबर, ऊपर दोहरी मिर्च।'

'और डालो', एक ने नीचे झांकते हुए कहा।

खोंचे वाले ने झूठ मूठ चम्मच बीच में डाल दो दाने और डाल दिये।

लाली ने छिक्का ऊपर खींच लिया। हरी मिर्चें बीच में न देख कर उन्होंने फिर छिका लटकाते हुए कहा 'भाई हरी मिर्चें।

'सेठनी जी हरी मिर्चें पैसे की दो आती हैं।'

उन्होंने नाराजगी से सिक्का ऊपर खींचते हुए कहा 'यह पापड़ वाला बहुत खराब है।'

पापड़ वाला पुकारता हुआ पास की गली में चला गया। इधर देवेन्द्र ने इकबाल का 'वो काटा' कर दिया।

मौका देख सरदारजी लाल मकान की सीढ़ियों पर चढ़ गए। किसी ने मीठे स्वर से कहा 'सिढ़ियों का दर्वाजा बन्द कर आइएगा।'

सरला का हुक्म सिर आंखों पर। उन्होंने जल्दी से दर्वाजा की जंजीर चढ़ादी और जल्दी जल्दी ऊपर चढ़ गये। पर सरला ऊपर के कमरे में ही रही। उसी स्वर ने फिर अन्दर से कहा, 'अन्दर आ जाइए।'

चंचल सिंह 'ड्राइंग रूम' में चले गये और अन्दर से हुक्म मिलने पर वह सोफा पर बैठ गए और घूर घूर कर अन्दर के कमरे की तरफ देखने लगे। अन्दर से सरला के नहाने और कपड़े बदलने की आवाज आ रही थी।

'मुआफ करियेगा, मैं जरा जल्दी आ गया।'

'मुझे कालेज से आने में देर हो गयी।'

थोड़ी देर खामोशी रही। चंचल सरला के अंदर आने की राह देखता रहा। एक दो दफा खांसा, फिर सोफा पर से उठ कर उसने कहा 'मैं-आपके लिए भेंट लाया हूँ।'

अन्दर से कोई उत्तर नहीं मिला।

'एक फूलों का गुलदस्ता। यही प्रथम भेंट है। प्रिये, इसे स्वीकार कर लो। फिर जो मेरा है वह आपका है।'

'आप शायर भी हैं।'

'नहीं, यों ही कभी कभी पंजाबी में कविता लिखता हूँ।'

'एक सुनावें'

'आप सामने आवें, तब सुनाऊंगा।'

'आप सुनावें तब मैं आऊंगी।'

'मुझसे शर्म किस लिए?'

'मुझे शर्म आती है फिर किसी दिन।'

'मुझे क्यों तड़पा रही हो।'

'आज मैं मजबूर हूँ फिर किसी दिन।'

'मेरा क्या हाल होगा?'

'जो मेरा हो रहा है।'

'मैं तो आपके दर्शन के लिए आया था और......'

'कविता सुनाइए तो शायद...'

'आप मज़ाक करेंगी, मैं तो यों ही लिखता हूं।'

'कोई कालेज मेगजीन में छपी है'

'दो चार छपी हैं। ज्ञानसिंह अपना दोस्त है और पंजाबी में लिखने वाले भी कितने हैं।'

'कोई अच्छी सी सुनाइए।'

'रावी का किनारा'

'गाकर।'

'मुझे गाना नहीं आता।'

'गाना प्रत्येक व्यक्ति को आता है। कोई ड्राईंग रूम सिंगर...'

'मैं तो बाथ रूम सिंगर भी नहीं हूँ।'

'अगर आप गाकर नहीं सुनाओगे तो मैं बाहर नहीं आऊंगी। आप व्यर्थ शर्माते हैं।'

'शर्म काहे की। पर आवाज से मजबूर हूं। वह तो फटे ढोल को मात करती है।'

'कोई बात नहीं।'

'आप जिद ही करतीं हैं तो सुनिये।

रावी का किनारा यारो,
रावी का किनारा।
अपना नूर छलकांदी जानदी,
अपना रंग दिखलांदी जानदी।
रावी का किनारा......
कैसा जल प्यारा प्यारा,
रावी दा...............
एक तरफ बारहदरी, दूजे पास फबवरा,
एक तरफ लाहौर वसदा, दूजे पास शाहदरा।
रावी दा किनारा......
दो पुल पक्के, आर पार बनाए,
इक ते मोटर तांगे चलदे, इक ते रेल गडी
चलदी......शालमार मिंटो पार्क लगाए
लोगो देखो अनारकली हिरामंड़ी।
रावी दा किनारा......

जिस तरह स्टीम खतम होने पर ऐंजन एक भभक लेकर

ठंडा हो जाता है उसी तरह एक दम चंचल सिंह का गाना खतम हो गया। अन्दर से सरला ने ताली बजाते हुए कहा 'बहुत अच्छा। मैं तो समझती थी कि लड़के नखरा नहीं करते।'

'आप तो पर्दे के पीछे बैठी बैठी मजाक कर रही है। सामने आइए।'

'फिर किसी दिन'

'अब आपको अपना वायदा अवश्य पूरा करना पड़ेगा।'

'मुझे शर्म आती है।'

'मुझसे शर्माने की क्या बात। हम एक दूसरे से प्रेम करते हैं। प्रेम में शर्म किसलिए।'

'आप मुझ से सच्चा प्रेम नहीं करते।'

आप मेरी भावनाओं की हंसी उड़ा रही हैं। मैं आप के लिए जान तक दे सकता हूं मनुष्य को सबसे प्यारी जान है, परन्तु मुझे जान से भी प्यारी सरला। मैं तुम्हारे प्रेम में पागल हो रहा हूं। हर समय तुम्हारी गलियों में भटकता फिरता हूं। जहां से तुम गुजर जाती हो उस जगह को सौ सौ बार चूमता हूँ।'

'आप को यह सबक किसने पढ़ाया।'

'सरला यह सबक नहीं, हृदय के उद्‌गार हैं। तुम मेरे प्रेम को नहीं जानती। तुम मेरी हृदयेश्वरी हो। अगर तुम मेरे सामने नहीं आओगी तो मैं......' चंचल उठ कर कमरे की तरफ बढ़ा। सरला ने चीख मारते हुए कहा 'अन्दर मत

आओ। पर अब चंचल को कौन रोक सकता था। हृदय के उद्‌गार जिन्हें, वह अब तक बड़ी कठिनता से दबाए हुए था उसकी शक्ति से बाहर हो चुके थे। वह अन्दर चला गया और सरला का हाथ पकड़ते हुए उसने कहा, 'सरला मैं तुम्हारे प्रेम में पागल हो रहा हूँ। मेरी रानी।'

'मेरा हाथ छोड़ दो।'

'नहीं' जोश से चंचल ने कहा और सरला को पर्दे से बाहर खींचने लगा।

सरला ने मुंह पर से साड़ी हटाई

चंचल सिंह उलटे पांव नीचे भागे। सिर सीढ़ियों के बन्द दर्वाजे से टकराया, दीवान ने ऊपर से कहा, 'हाय मेरी जान।'



विलायती टट्टू

प्रोफेसर कबाडी के एक और जोड़ीदार थे प्रोफेसर महमूद। आप अभी तक कुवांरे ही थे। कारण—किसी लड़की को आपका सुन्दर चेहरा पसन्द नहीं आता था। शक्ल हो या न हो, जरूर पर दिल मर्दों का था। किसी खूबसूरत लड़की को देखते ही फौरन उनकी राल टपकने लगती। इस वर्ष उनका भी भाग्य चेता। फिलासफी की क्लास में एक एंग्लो इंडियन लड़की दाखिल हुई। गजब की खूबसूरत, कद ५ फुट ७ इंच। रंग गोरा, नाक लम्बी और पतली, आंखें हिरणी जैसी मोटी मोटी। उठी हुई छाती, जिसके भार से कमर लचकी जा रही थी। होठों पर मन्द मुस्कराहट, यह कहिए कि उसके शरीर में दो देशों का तमाम सौन्दर्य इकट्ठा करके एक ही साथ कूट कूट कर भर दिया हो। जब से वह कालेज में आई, मिस नलिनी गुप्ता को दूसरा स्थान ग्रहण करना पड़ा।

मिस विलियम के खूबसूरत चेहरे को देख कर प्रोफेसर महमूद तो एकदम ही लट्टू हो गए। पढ़ाते क्लास को थे परन्तु नजर बराबर लगी रहती थी मिस विलियम पर। कभी कभी तो वे अपने आप को अपनी प्रेमिका में इतना खो देते कि सब कुछ भूल जाते यह भी भूल जाते कि कालेज के क्लास को पढ़ा रहे हैं। लड़के उनके दिल का थोड़ा हाल जान

खांस देते। उनका प्रेम का स्वप्न टूट जाता। वे फिर चैतन्य हो अपना काम शुरू कर देते। सब लड़के को छुट्टी देकर मिस विलियम के साथ फिलासफी की कोई मुश्किल पेंच सुलझाते।

लड़कों ने मजाक करना शुरू कर दिया। पहले तो मिस विलियम ने कोई ख्याल न किया। पर जब बोर्ड पर तस्वीरें बनने लगीं तो एक दिन उसने खूब गौर से प्रोफेसर साहब की ओर देखा।

पहली नजर रोगी, शायद तपेदिक।

दूसरी नजर छोटा कद, लकड़ी जिस्म, काला रंग, गंजी खोपड़ी।

तीसरी नजर उल्लू की दुम फाख्ता।

प्रोफेसर महमूद वास्तव में बिल्कुल मनहूस थे। न उनकी शक्ल पर रोशनी, न उनके चेहरे पर रौनक। अक्ल खुदा ने इतनी ही दी थी कि सामने किताब खोल कर पढ़ा सकें। अगर किसी शैतान लड़के ने अंट संट सवाल कर दिया तो बगलें झांकने लगते और हार कर कह देते 'कल बताऊंगा'

नौकरी पक्की थी। मुसलमान थे और 'माइनोरटी' (अल्पमत) को 'रिप्रेसेंट' करते थे। बहुत आदमी उनसे योग्य थे, परन्तु सरकारी नौकरी के लिए योग्यता की उतनी अधिक आवश्यकता नहीं जितनी जाति की। मुसलमान होना चाहिए एक अयोग्य मुसलमान योग्य हिन्दू से अच्छी शिक्षा देगा क्योंकि वह मुसलमान है। यह योग्यता का सबसे बड़ा 'पासपोर्ट' है।

प्रोफेसर साहब को लड़के खूब उल्लू बनाते । रोज कोई नये से नया तरीका सोच कर लाते । मजे की बात यह थी कि जब प्रोफेसर साहब को पता चलता कि उनका मजाक हो रहा है तो वे चिढ़ जाते और गुस्से में न मालूम क्या क्या बक जाते। उनका पारा चढ़ा तो लड़कों ने और ज्यादा ऊधम मचाना शुरू किया । मिस विलियम ही एक ऐसी छात्रा थी जिसने क्लास में कभी किसी शरारत में हिस्सा नहीं लिया । प्रो० साहब उसको और भी चाहने लगे ।

प्रोफेसर साहब मिस विलियम पर मरते थे पर समस्या बहुत कठिन थी । मिस विलियम उनकी छात्रा थी और उसको फंसाना नौकरी से हाथ धोना था । वह 'प्रिंसिपल ठोठी' को अच्छी तरह जानते थे । उनके कान में बात पड़ते ही प्रो० साहब को और किसी कालेज का रास्ता ढूंढना पड़ेगा । अध्यापक और छात्रा का एक दूसरे से प्रेम करना पाप नहीं और फिर जब वे कुंवारे और नौजवान हों ।

प्रत्येक सांसारिक व्यक्ति प्रेम की भावना से ओत प्रोत होता है । बहुत संभव है भावना मानसिक नियमों के बंधन में बंधी पड़ी रहे, परन्तु निरंकुश प्रेम का एक ही थपेड़ा उस मानसिक बंधन को तोड़ देता है और प्रेम की मृतप्राय सरिता रसपूर्ण हो हरहराती हुई दोनों हृदयों को आकंठ प्रेम निमग्न कर देती है । प्रेम में भेदभाव लुप्तप्राय हो जाते हैं। इसी कारण वश प्रोफेसर साहब जानते हुए भी भूल गए थे कि वे मुसलमान हैं और मिस विलियम इसाई । परन्तु उस समय प्रत्येक वस्तु के सम्मुख प्रेम का स्थान ऊंचा था।

उन्होंने एक दो बार भूलने का प्रयत्न भी किया परन्तु हृदय ने साथ न दिया और अब उन्होंने दिल की उमंग से लड़ना ही छोड़ दिया। अब क्लास में ऐनक के कोने से मिस विलियम को देखते और जब कभी वह दर्वाजे के पास होकर गुजरती और दाएं, बाएं देखनेवाला कोई न होता तो वे छोटा सा मुंह खोल, मोटे मोटे होठों को फाड़ थोड़ा सा मुसकरा देते।

लड़कों की एक टोली थी। जिसके सरदार थे असलम खां पिराचा। मिस विलियम अक्सर इसी टोली के साथ फिरा करती थी। जब प्रो० साहब को पता चला, उन्होंने प्रिंसिपल के सामने सबकी पेशी कर दी। खूब डांट पड़ी और पांच पांच रुपया जुर्माना हो गया। उस अपमान का बदला लेना आवश्यक था। उस दिन क्लास में किसी लड़के ने प्रश्न किया 'प्रो० साहब बन्दर और मनुष्य में क्या सम्बन्ध है।'

'यह फिलासफी का प्रश्न नहीं है।'

'मैं बताऊं, असलम ने हाथ खड़ा करते हुए कहा।

इससे पहले कि प्रो० साहब न कहें, लड़कों ने कहा, 'जरूर। जरूर'

'डार्विन के सिद्धांतानुसार मनुष्य बन्दर की संतान है और उन्होंने बंदर और मनुष्य का पारस्परिक सम्बन्ध जानने के लिए एक 'फारमूला' बताया है। अगर सिर से एक भारी पत्थर तागे से लटकाया जाय और वह तागा नाक से लगे बिना ठोडी से लग जाय तो वह इंसान पहली नस्ल का बंदर है।'

प्रोफेसर साहब की बिल्कुल चपटी नाक देख कर सब लोग खिलखिला कर हंस पड़े। असलम क्लास से निकाल दिया गया। जब उन्होंने पढ़ाना शुरू किया किसी और लड़के ने टोकते हुए कहा, 'प्रोफेसर साहब आपकी तरक्की हुई है, दावत होनी चाहिए।'

'तरक्की मेरी हुई है और मैं ही दावत दूं।'

'आपको दावत जरूर देनी पड़ेगी' बहुत से लड़कोंने एक साथ कहा।

लड़कों के आग्रह को देख कर प्रोफेसर साहब को मानना ही पड़ा और उन्होंने देवी दयाल को प्रबन्ध करने के लिए कहा।

जिस दिन पार्टी थी उस दिन प्रोफेसर साहब केबंगले पर सब लड़के आये। सिर्फ़ पिराचा के साथियों को निमंत्रण नहीं दिया गया मिस विलियम भी आई। उसके बिना पार्टी का मजा ही किरकिरा हो जाता। मिस विलियम के पास बैठे हुए एक लड़के ने कहा, 'सब आप की खातिर है।'

'मेरी' जरा भौं उठा कर उस हसीना ने पूछा।

'हां, वरना प्रोफेसर साहब इतने कंजूस हैं कि गांठ से फूटी काड़ी तक नहीं खोलते।'

इतने में प्रोफेसर साहब बंद गले की काली अचकन, बड़े घेरे और तंग मोहरी दार खूब 'स्टार्च' लगी हुई शलवार, जलेबी नुमा पंजाबी जूती पहने मुस्कराते हुए इधर ही आते हुए नजर पड़े। लड़का उठ कर दूसरी तरफ चला गया और प्रो॰ साहब के लिए मैदान खाली कर दिया।

लड़के तो धीरे धीरे चाय पी कर चले गये और प्रोफेसर साहब ने उन्हें रोकने का कोई प्रयत्न नहीं किया। पर जैसे ही मिस विलियम जाने लगी, उनसे नहीं रहा गया। हाथ में आया हुआ शिकार इतनी जल्दी हाथ से निकल जाय! उन्होंने बड़ी लालसा से कहा, 'मैं आपको अपनी पेंटिंग्स दिखाना चाहता हूँ।'

मिस विलियम फिर बैठ गई।

मिस विलियम के पिता रेलवे के गार्ड थे और उनके पिता अपने बाप का रुपया चुरा कर और बीबी का जेवर बेच कर विलायत गये और वहां से मिस विलियम की दादी को भगा लाए। सरदार किशनसिंह जी बाद में केनिथ समर विलियम बन गये। वह अमृतसर के एल खटीक के सुपुत्र थे। राम बाग में उनकी दूकान थी और उन्होंने निरीह बकरों की गर्दन पर चाकू चला कर काफी रुपया जमा कर लिया था। इसलिए उन्होंने किशन को कालेज में भेज दिया। दूकान के ऊपर लाला जगन्नाथ आनंद की बैठक थी। आप अमृतसर के मशहूर वकील थे। किशन की सबसे बड़ी अभिलाषा वकील बनने की थी।

किशन सिंह बी० ए०, एल० एल० बी० की वकालत दो कौड़ी की भी नहीं चली। चलती भी कैसे लाहौर से बी० ए०, एल० एल० बी० की डिग्री लेकर आये थे। राम बाग में बैठक थी। अगल बगल में रहती थी अमृतसर की दो गाने वाली रंडियां। रात को उनके चौबारों पर वकालत की जाती और दिन को मुवक्किलों की आशा।

गांव से जो कोई भी जाट अमृतसर आता है वह रामबाग अवश्य जाता है। वकीलों और रंडियों का ग्राहक वही है। वही सीधे साधे दो मकड़ों के जालों में फंस जाते हैं। जब कोई त्योहार होता है तो तंग गली खचाखच भरी रहती है और दोनों तरफ शिकार फंसने की आशा लगी रहती है।

'यह बड़ी पगड़ी वाला हमारे बोर्ड की ओर देख रहा है।' जरा खुशी से वकील साहब ने अपने सहकारी को दिखाते हुए कहा।

'नहीं सरदार जी, वह तो चमेली जान की तरफ देख रहा है।'

जाट ने एक खिड़की की तरफ इशारा करते हुए अपनी नई दुलहिन से कहा, 'जनको, पिछली मसया मैं उस चौबारे पर गया था।'

लड़की ने अपने सोकन को देखाकर और मुस्करा कर सिर नीचा कर लिया।

झटकायों में बहुत कम लड़के पढ़ते हैं और वकील तो मलवई जी पहले ही थे। इसलिए उनकी कीमत और भी बढ़ गयी। कई दिन से उनके सिर पर धुन सवार थी कि अगर अपने नाम के आगे 'बार एट ला' की लम्बी पूंछ लग जाय तो, बस फिर चांदी ही चांदी है। 'बार एट ला' के चुम्बक से मुवक्किल अपने आप खिंचे चले आवेंगे। घनश्याम दास रत्तरा को ही देखो, दो गुलाब जामुन पर पेशी भुगता आता था। जिस दिन से विलायत से 'बार एट ला' बनकर आया है १००

रुपया से कम में तो बात ही नहीं करता। दौलत का तो कहना ही क्या, दो महीने में दूसरी शादी भी हो गई

वह शादी नहीं करना चाहते थे परन्तु शादी किये बिना वह विलायत नहीं जा सकते थे। इसलिए उन्होंने जगत सिंह की लड़की करमों से शादी कर ही ली। भटकाइयों में वही सबसे ज्यादा अमीर था। दहेज में उन्होंने दस हजार रुपया और काफी जेवर दिया। एक रात जब करमों सो रही थी उन्होंने तिजोरी पर हाथ फेरा, बाप के सब पैसे, करमां का सब जेवर लेकर रातों रात ला पता हो गये। बेचारी करमों की शादी होते ही करम फूट गये।

विलायत पहुँच कर किशन सिंह की आंखें खुलीं। कहां बेचारी करमों और रामबाग के छज्जे वालों और कहां गोरी २, जोशीली पटाखेदार विलायती माशूका—वे भूल गये कि उनका जन्म हिन्दुस्तान की काली जमीन पर हुआ है और यह भूलकर विलायत की हवा में उड़ने लगे। डान्स, शराब पीना, पिलाना, उन्होंने थोड़े समय में ही सीख लिया।

जिस मकान में वह 'पेयिंग गेस्ट' होकर रहते थे वहां एक लड़की थी। कोई १६ वर्ष की। वह अपने घर का काम काज करके पास के दो चार घरों में सफाई किया करती थी। सरदार किशन सिंह ने सब घरवालों पर, खास कर मेरी गिबसन पर, बहुत रोब डाल रखा था। वह उनको किसी रियासत का राजा समझती थी। जब कभी वह उनके कमरे में सफाई करने आती वे उसे पलंग पर अपने साथ बैठा कर खूब गप्पें हांकते।

'हिन्दुस्तान में उनका एक बड़ा महल है। दो चार मोटरें हैं और न मालूम क्या क्या......'

मेरी को कभी स्वप्न में भी ध्यान नहीं आया था कि उसे इतना धन प्राप्त होगा और वह मोटर में चढ़ने की इच्छा पूर्ण कर सकेगी। वह युवती थी और सब समवयस्क युवतियों की तरह अच्छे अच्छे कपड़े पहनना चाहती थी। उच्च समाज में मिलना चाहती थी। वह चाहती थी जीवन के सर्वसुख जिनका प्रत्येक युवती स्वप्न देखा करती है।

थोड़े दिनों के पश्चात् मेरी और किशन में गाढ़ी मित्रता हो गई। वह उसे नाच में ले जाता। शराब पिलाकर खूब नाच नचाता। दोनों एक दूसरे को कस कर आलिंगन कर लेते। मेरी किशन के धन से प्रेम करती थी। वह चाहती थी रियासत की रानी बनना।

किशन सिंह उसको कुछ और ही बना देता। परन्तु उसके पैसे खतम हो रहे थे। वह मेरी गिबसन को अब और शराब नहीं पिला सकता था। मिस्टर गिब्रसन का ५० पौंड कर्ज हो चुका था। उसे डर था कि कहीं जेल की हवा न खानी पड़े। इसलिए उन्होंने हिन्दुस्तान भाग आने में ही अपनी खैर समझी। 'बार एट ला' की डिग्री तो नहीं मिली परन्तु उससे भी बड़ी डिग्री ले आए, मेरी गिबसन रामबाग की महारानी। पिता को बता सकते थे कि डिग्री को कोई नहीं पूछता। वह तो एक ऐसा तोहफा लाए हैं कि···बस···जब मेरी ने रियासत के महलों की जगह रामबाग की गंदी, बदबूदार गलियां देखीं तब होश

ठिकाने लगे। और आलीशान महल रोशनी से जगमगाता, सुन्दर बाग, रोल्स रायस कार, सब क्षणमात्र में विलीन हो गये। पर अब पछताए होत क्या, जब चिड़ियां चुग गयीं खेत। बिना पैसे विलायत जाना असम्भव था। अब तो मुबारिक हों तुमको हमारी गलियां—राम बाग की।

मेरी मजबूर थी। पर उसे एक घड़ी भी चैन न थी। वह इस कैदखाने से जल्दी से जल्दी निकल भागना चाहती थी। दो तीन दिन बाद करमों को पता लगा कि पतिदेव विलायत से वापिस आ गए। उसने अपने पिता को उनके प्यारे जमाई के आने की खुशखबरी और साथ एक मेम लाने की खबर दी। तो झटका करने वाले फौरन टकवा लेकर आ धमके।

साहब और मेम मौका नाजुक देख कर पिछले दर्वाजे से निकल कर लाहौर भाग गये। जलद मलवर्दू साहब को तो जगह नहीं मिली पर माल रोड पर एक नया होटल खुला था। उसके मैनेजर को एक खूबसूरत जवान यूरोपियन लड़की की जरूरत थी जो ग्राहकों को आकर्षित कर सके। मेरी गिबसन को फौरन जगह मिल गई।

होटल राय साहब सीताराम का था। दूसरे दिन उनकी नजर पड़ी और उन्होंने मेरी को होटल के काम से छुड़ा कर अपनी धर्मपत्नी की 'नर्स' नियुक्त कर दिया···दो काम। मिसेज राय साहब के रोग की नर्स और मिस्टर राय साहब के दिल की माशूक।

यह है गोरे रंग का फायदा।

राय साहब ने सिफारिश करके मिस्टर के० एस० विलियम को रेलवे में २०० रुपये की जगह दिलादी। उन्होंने मेरी को वापिस लेना चाहा। पर वह रायसाहब को कब छोड़ने की। उनके साथ काश्मीर गयी। मिसेज राय साहब बीमार थी, राय साहब उसके साथ 'डल लेक' की सैर करते। जिस दिन उन्हें बहाना न मिलता, मेरी को कोई और पैसे का यार ले जाता। काश्मीर की ठंढ़ी हवा, 'डल लेक' का मनोहर दृश्य और मुफ्त की शराब, लाहौर की गर्मी से कहीं उत्तम थी।

दश वर्ष बाद जीवन के सब सुख लूट कर और जवानी की सब मौज उड़ा कर मेरी इस दुनिया से चल बसी। बस छोड़ गई अपना एक मात्र निशान। पांच वर्ष का एक बच्चा जार्ज विलियम। बड़ा होने पर, एंग्लो इंडियन होने की वजह से उसे भी रेलवे में नौकरी मिल गई।

तीन वर्ष पहले मिस विलियम की दादी विलायत छोड़ कर हिन्दुस्तान आई अब मिस विलियम के दिल में अपने देश जाने की लालसा भड़क रही थी। वह इस गर्म मुल्क—हिन्दुस्तान को छोड़ कर अपने ठंडे देश—विलायत जाने को बेचैन थी—पर सवाल था पैसे का।

पिता ने कभी विलायत की शक्ल नहीं देखी थी, डोरोथी को कैसे दूर विदेश भेज देते। बस एक ही उपाय था, किसी अक्ल के अंधे, गांठ के पूरे, काले हिन्दुस्तानी को फंसाया जाय। जैसे को तैसा।

चाल काम कर गई और बेचारे प्रोफेसर साहब को मलवदे साहब का बदला देना पड़ा। मुबारिक हो।

तिफलो

प्रोफेसर गुप्ता ने यही उत्तम समझा कि बदनामी होने से पहले नलिनी को लाहौर से बाहर भेज दिया जाय। ऐसी बातें लाहौर में अक्सर होती हैं परन्तु वे रात के गहन अन्धकार में छिप जाती हैं। प्रेम तो शरारत पर उतारू था। वह बात पहले उन दोनों को मालूम थी, नलिनी की मां को बताना पड़ा। बहाल ने अपने यार दोस्तों को अपने कारनामों का खुलासा सुनाया। विजय प्राप्त कर हृदय प्रफुल्लित होता है और उसकी बड़ाई सुना दिल में जोश उठता है। बहाल जो हमेशा (पोपुलरिटी) अभिमान के लिए मरता, कैसे चुप रहता आनन्द कुमार जैसे फटे ढोल के कानों तक पहुँचते ही बात सारे कालेज में मशहूर हो गई।

कुछ लड़के तो बहाल की बातों को हवाई उड़ान समझ कर ध्यान नहीं देते पर अधिकतर युवक उसके कारनामों की दाद करते। जब नलिनी ने कालेज आना बन्द कर दिया तब तो शक भी निश्चितता में बदल गया।

'दाल में काला है', मनोहर ने कहा।

'लाल झंडी कहो', आनन्द ने जोड़ दिया।

सिर्फ सहगल मानने को तैयार न था। वह नलिनी को पवित्रता की देवी समझता था। जिस मूर्ति की वह हृदय से

पूजा करता, जो उसकी अराध्य देवी थी वह कैसे कलुषित हो सकती है। उसके लिए वह पवित्र थी। दूसरे चाहे उसे पंक युक्त पत्थर ही क्यों न समझें। यदि वह स्वयं भी नलिनी को वह नीच कार्य करते देख लेता तो भी उसे अपनी आंखों पर विश्वास न होता। वह आंखें बन्द कर कहता—जो देख रहा हूं वह असत्य है। उसकी प्रेमान्ध आंखें तब खुलीं, जब उसकी अराध्य देवी स्वर्णिम आभा युक्त नलिनी कालेज में, कई दिनों तक नहीं आई। उसकी प्यासी आंखें अपनी प्रेयसी को स्विमिंग कोराटयुग में अर्द्ध नग्नावस्था में देखने के लिए व्याकुल हो रही थीं। थक कर उसने टूटे दिल को दोनों हाथों से संभाला, प्रोफेसर साहब के बंगले के चक्कर लगाना शुरू किये, पर उसकी हृदयेश्वरी वहां हो तब तो नजर आवे। वह प्रति दिन निराश हो थक कर वापिस आ जाता और कल पर आशा लगा रात्रि व्यतीत करता। दूसरे दिन फिर निकोलसन रोड पहुँच जाता। विश्व आशा पर निर्धारित है।

एक दिन हिम्मत करके उसने बेरे (नौकर) से पूछा। उसने बड़े रोब और सूखे शब्दों में बताया कि मिसीबाबा लाहौर छोड़ कर लखनऊ तशरीफ ले गयी हैं। उसी दिन सहगल साहब ने भी होस्टल जाकर अपना बोरिया बिस्तर गोल किया।

'क्या आफत है,' असलम ने पूछा।

'क्या लुत्फ जिन्दगी का जब दिल ही बुझ गया हो।'

'माचिस ला दूं, फिर जला दूं ?'

'तुम तो मजाक करते हो असलम। तुम क्या जानो मेरे दिल का भेद।'

'हाय मेरे मजनूं।'

'जो चाहे कह लो, पर मैं नलिनी से सच्चा प्रेम करता हूँ।'

'और हमें छोड़ कर तुम्हें कोई दुःख न होगा', चंचल सिंह बोले।

'होगा, दोस्तों को छोड़ते, उनका साथ छोड़ते किसे दुःख न होगा। पर राजा साहब, हम जिन्दगी के चार यात्री थे जो भाग्यवश एक साथ हो गये। आगे चलकर हम को अपनी अपनी जिन्दगी का विभिन्न रास्ता पकड़ना पड़ेगा। पर नलिनी तो मेरी जीवन संगिनी बन सकती है।'

'उसे पाकर हमें भूल जाओगे।'

'यह कैसे हो सकता है। कभी कोई अपने विगत जीवन को भी भूल सका है। उसकी मधुर याद तो अंत समय तक हमारे साथ रहेगी। इन दिनों की याद मेरी आत्मा को शांति प्रदान करेगी और मेरे विचार उड़ कर तुम से मिल जावेंगे।'

'फिलासफर साहिब अब तुम कामना के गुलाम बनने जा रहे हो।'

'प्रत्येक 'फीलिंग' (अनुभूति) में कामना होती है। तुम मुझे चाहते हो, क्योंकि मैं तुम्हारा दोस्त हूँ। दिल की कामना है कि उसका कोई दोस्त हो और हम उसे मिलकर पूरी कर रहे हैं। प्रत्येक मनुष्य के दिल में कामना होती है। कोई कामना की शक्ति से अपने आप को ऊंचा उठा लेता है। और किसी के दिल में वह वासना बन कर उन्हें पतनोन्मुख बना देती है। इस अन्तर की जांच चरित्र की उच्चता पर निर्भर है।'

'तुम में नलिनी के सुन्दर शरीर पर एकाधिपत्य प्राप्त करने की कामना नहीं है ?'

'मैं नलिनी से सच्चा प्रेम करता हूँ। प्रेम से उसे जीतना चाहता हूं। पाशविक उपायों द्वारा छल करके या धोखा देकर नहीं।'

'किसी तरफ से पकड़ो, पकड़ी तो नाक ही।'

'मैंने अभी कहा कि प्रेम पूर्ण कामना एवं वासना दो विभिन्न वस्तु हैं। एक के मौजूद रहते दूसरी भावना उत्पन्न नहीं हो सकती।'

'बहुत स्वार्थी हो तुम सहगल। हमारा कोई खयाल ही नहीं।'

'दुनियां में कौन स्वार्थी नहीं। तुम मुझे रोकना चाहते हो क्योंकि तुम्हारे स्वार्थ को चोट लग रही है। आजकल की दुनियां में सबको अपनी अपनी पड़ी है। कई तो अपने दोस्तों को ही नहीं अपने निकटतम सम्बन्धियों को भी अपने स्वार्थ की वेदी पर बलिदान कर देते हैं। उन्हें क्या परवाह। दूसरा जीये या मरे। यदि किसीको हमारा ख्याल नहीं तो हम क्यों बिना मतलब अपना दिल और समय खराब करें। आज कल कोई किसीका नहीं :

आराम के साथी क्या क्या थे,
जब वक्त पड़ा, तब कोई नहीं।'

'मैं नहीं मानता,'

'मानो या न मानो, परन्तु मैं तो सच सच कह रहा हूं। आजकल हरएक दूसरे की जड़ काट अपना सूखा पौदा हरा

करना चाहता है। जो कुछ हो रहा है, उसे देखते हुए हम कैसे आंखें बन्द कर सकते हैं। लड़का अपने बाप का गला काटने को तैयार है। पतिदेव अपनी सुन्दर, सती, स्त्री को छोड़ कर एंग्लो इंडियन छोकरियों के पीछे ठोकरें खाते फिरते हैं। लड़कियां अपना सतीत्व दो चुल्लु शराब और दो कौड़ी की सिगरेट के भाव बेचती हैं। भल्ला साहब, चलते का नाम गाड़ी है।'

'जीवन में कोई सिद्धान्त नहीं होने चाहिए।'

'सिद्धान्त होने चाहिए पर हर रिवाज को सिद्धान्त का रूप देना हमारी भूल है। ये सब मन गढन्त बातें हैं। कोई झूठ बोलना पाप समझता है। वह उसका सिद्धान्त है। यह दूसरे का सिद्धान्त है कि वह झूठ बोलना अत्यावश्यक समझता है। सिद्धान्त वह है जिसका हम सच्चे दिल से प्रयोग करते हैं और अपने व्यवसाय को आवश्यकतानुसार बदलते' कम या अधिक करते हैं। हमें व्यक्तियों के प्रति अनुरक्त नहीं होना चाहिए जो कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं। हमारे देश के पूंजीवादी वर्ग को ही देखिये, हमें लूट कर स्वयं अपना घर बनाना चाहते हैं और ओट लेते हैं देश सेवा या समाज की।'

'तुम्हारा दिल तो आजकल नलिनी की बदनामी को छुपाने का हो रहा है।'

'ठीक है, तुम उसे छुपाना समझते हो और मैं सहायता। यह तुम्हारा अपराध नहीं दृष्टिकोण की विभिन्नता है। तुम उससे परिचित नहीं और मैं उससे प्रेम करता हूं।'

'तुमको मुबारक हो तुम्हारी लैला।'

'और तुम्हें,'

'मुझे तो ताजा दूध चाहिए।'

'यह तुम्हारा सिद्धान्त है। पर देखना किसी दिन फट न जाय।'

दूसरे दिन मनमोहन सहगल कालेज से 'ट्रांसफर सार्टिफिकेट' (तबदीली पत्र) लेकर नलिनी की खोज में लखनऊ चल दिये। गाड़ी में वह अकेले थे और एकांत में बैठे हुए उन्होंने बहुत सी बातों पर विचार किया। जीवन की कई ऐसी बातें याद आईं जिन्हें वह भूलने का निरंतर प्रयास करने पर भी नहीं भूल सके। आज उन्होंने अपने जीवन इतिहास का एक नया अध्याय शुरू किया।

नलिनी लखनऊ में अपने मामा के यहां रहती थी। गोमती के किनारे राजा 'काका कांकर' की कोठी से दो चार बंगले छोड़ कर उनकी एक छोटी सी कोठी थी। तीन प्राणियों के रहने के लिए यह यथेष्ट थी, क्योंकि मिस्टर चटर्जी को कोई संतान न थी। लाहौर से इतनी दूर पहुँच कर नलिनी को ऐसा मालूम होने लगा कि वह कभी लखनऊ से बाहर गई नहीं और वह अपने आप को लखनवी वातावरण में लाहौर को भूलने का प्रयत्न करने लगी।

१६२६ में लखनऊ में कुछ और ही हवा चल रही थी। देश में एक नई लहर फैल रही थी। विद्यार्थियों के 'इम्प्रेशनेबल (प्रभावशाली)' मस्तिष्क पर भी वह अपना प्रभाव जमा रही

थी । लाहौर की फैशन परस्ती न थी । लड़के सूट बूट छोड़ कर धोती कुर्ता या तंग पाजामा पहनते । लड़कियां खद्दर की धोतियां पहनतीं । नलिनी को परिवर्तन की आवश्यकता थी । उसने भी काया पलटी और लखनऊ में लखनवी बन गई । उसने रंग बिरंगी साड़ियां और जार्जेट, क्रेप पहनना छोड़ दिया । पर बनाव श्रृंगार वही रहा । बाहरी रूप तो और किया परन्तु अन्दर से आत्मिक परिवर्तन नहीं हुआ । फिर भी इस नई पोशाक में उसे शांति और सादगी का अनुभव हुआ ।

कुछ दिन पश्चात् जब नलिनी कालेज के जीवन में घुल मिल गई तो उसने कालेज के कार्यक्रम में भाग लेना प्रारम्भ किया । चंचल हृदय कैसे स्थिर रह सकता था । उसने वाद विवाद में भाग लेना शुरू किया, थोड़े ही दिनों में लखनऊ भर में मशहूर हो गई ।

जब सहगल साहब लखनऊ पधारे तब तक नलिनी की काया कल्प को पक्की नींव नहीं लगी थी । कुछ दिन तक तो मनमोहन जान बूझ कर नलिनी से किनाराकशी करता रहा । उसे डर था कि कहीं नलिनीं उसकी उपस्थिति बुरा न माने ।

नलिनी ने चोला अवश्य बदल लिया परन्तु युवावस्था की शोखी, हृदय की उठती हुई उमंगें उसी पुरानी अवस्था में विद्यमान थीं परन्तु एक बार सबक सीख कर उसने उन्हें नीचे बहुत नीचे दबा रखा था । और अपूर्ण और अतृप्त अभिलाषाएं एक नये ज्वालामुखी की तरह दिन प्रतिदिन विस्तृत एवं भयंकर

रूप धारण करती जा रही थीं । उस शक्ति को विभिन्न भाग में प्रवाहित करने के लिए नलिनी ने देश सेवा में भाग लेना प्रारम्भ किया । वह स्वार्थ पूर्ण विचारों को छोड़ कर दूसरों की भलाई करने का विचार करने लगी । नेक ख्याल था ..

कालेज यूनियन के लीडर थे भगवान दास फौजदार । ६ फुट ऊंचा कद, भरा हुआ शरीर । चेचक से भरा चेहरा बड़ी बड़ी मूंछें, डरावनी आंखें । राजा धर्मपाल के छोटे भाई, कड़क कर बोलने वाले, खद्दर का कुर्ता और धोती पहनते सोने के बटन, हीरे की अंगूठी और मुंह में अब्दुल्ला सिगरेट । उनकी पार्टी कहलाती थी 'रेस्टोरेंट पार्टी' क्योंकि वहां पर ही महफिल जमा करती थी ।

कालेज के फाटक के ठीक सामने दामोदर लाल का 'दी भारत नेशनल रेस्टोरेंट' था । 'नेशनल मूमेंट, (राष्ट्रीय आंदोलन) से पहले खुली शराब मिलती थी पर अब छिप कर । मैनेजर भी बहुत 'नेशनलिस्ट' था और रेस्टोरेंट का दारोमदार था फौजदार और उनकी पार्टी पर । यहां पर जातीय, सामाजिक और धार्मिक विषयों पर बहस की जाती और देश को सुधारने के लिए खयाली पुलाव पकाए जाते ।

नलिनी और फौजदार में अनबन हो गई । फौजदार जानता था कि वह प्रोफेसर चटर्जी की भानजी है । प्रोफेसर साहब ने दिल खोल कर नलिनी से फौजदार की तारीफ कर दी । जब दोनों में टक्कर हुई तो दोनों में और भी उत्पन्न होगया । नलिनी को फौजदार से कोई दुश्मनी न

थी, परन्तु वह नलिनी से बदला लेना चाहता था दो साल पहले प्रोफ़ेसर चटर्जी ने उसे दो साल के लिए कालेज से निकलवा दिया था ।

नलिनी का देश प्रेम स्वयं ओछा था । इसलिए वह दूसरों के दिखाऊ देश प्रेम से घृणा करती थी । और सबसे बहुरूपिये फौजदार से इसी कारण घृणा थी । 'डिबेट' में वह फौजदार को दायें, बायें से लताड़ती परन्तु उनकी गांधीवादी पार्टी बहुत मजबूत थी और लताड कुछ असर न करती ।

कालेज की 'साम्यवादी पार्टी के लीडर थे जगदीशचन्द्र बाजपेयी । उनके पिता किसी जमाने में स्कूल के हेडमास्टर थे । उन्होंने दूसरों को तो मार मार कर सिखा दिया था कि देश सेवा करना पाप है परन्तु यह सबक प्यारे पुत्र को न पढ़ा सके । जगदीश पढ़ने में विशेष होशियार न था परन्तु उसमें थी उच्चाकांक्षा (एम्बीशन) । वह अपने आप को बड़ा बनाना चाहता था और इसीलिए वह कालेज की राजनीति में भाग लेने लगा ।

लीडर बनने का एक ही तरीका है—खद्दर के कपड़े पहिनो, लम्बे फटे और बिखरे हुए बाल, दाढ़ी थोड़ी उगी हुई । जबान कसाई के छुरे की तरह तेज, जोशीले व्याखान और यदि और भी बड़ा बनने की अभिलाषा हो तो एक दफा जेलखाने की मुहर लगवालो—बस पक्की लीडरी ।

हमारे बहुत से लीडर—लीडर का दम भरने वाले रंगे सियारे अपने त्याग से लाभ उठाने के लिए त्याग करते हैं ।

वे अपने दो रंगेपन की ओट में अपनी चालों को छिपाये रखते हैं। जनता समझती है, महापुरुष जी हमारे भले के लिए स्वार्थ त्याग कर रहे हैं। वह यह नहीं जानती कि महापुरुष जी त्याग की ओट में अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं। ऐसे लीडर अपने विचारों को तब तक छिपा सकते हैं, जब तक उनके हाथ में शक्ति नहीं आती। एक दफा नाले की कुंजी उनके हाथ लगी कि वे जनता के विश्वास की तिजोरी दोनों हाथों लूटने लगते हैं। ऐसे रंगे सियार देश द्रोही से भी बदतर हैं क्योंकि देशद्रोही का अपना भिन्न रूप होता है। जनता उन्हें जानती है और उनसे सचेत रहती है परन्तु इन महापुरुषों पर तो कोई शक भी नहीं करता। पता चलता है तब जब फांसी गले में लग जाती है और जल्लाद फंदा खींचने को तयार होता है।

नलिनी का रूप देख कर सहगल साहब भी जगदीश बाजपेयी की साम्यवादी पार्टी के मेंबर बन गए। जगदीश को ऐसे 'लेफ्टिनेंट' की आवश्यकता भी थी, जो जबान के जोर से न मानने वाले को शारीरिक बल से मनाने की शक्ति रखता हो। मनमोहन पंजाब से आये थे और कई लखनऊओं के लिए यही डर काफी था। शरीर में भी मनमोहन रोबदार लगता था। वास्तिविक शक्ति की अभी कोई परीक्षा नहीं हुई थी। रेस्टोरेंट पार्टी ने उनका 'निक नेम' (उपनाम) तिफलो रख दिया। हर एक लीडर का निक नेम होता है पर तिफलो को तिफलो क्यों कहा जाता था, मैं नहीं जानता।

तिफलो से 'रेस्टोरेंट पार्टी' डरती थी, क्योंकि उसकी पहुँच बहुत दूर तक थी। नलिनी भी पंजाबिन थी जब दो पंजाबी मिल जाएं तो दुनिया की खैर नहीं ! दोनों की पुरानी जान पहचान थी। नलिनी डरती थी। उसे डर था कि मनमोहन कहीं बदनाम न कर दे। इसी डर से वह उसकी तरफ खिंचने लगी। धीरे धीरे दोनों में मेलजोल बढ़ता गया और पुरानी बातें पंजाबी में शुरू हो गईं।

नलिनी कालेज की 'मौक पार्लियामेंट' की 'वाइस प्रेसिडेंट' (उप मंत्री) थी और सभापति थे भगवान दास फौजदार, साम्यवादी पार्टी का यह प्रयत्न था कि तिफलो को पार्लियामेंट में एक पोर्टफोलियो (स्थान) दिया जाय। फौजदार चाल खेल गया। उसने बाजपेयी को मंजूर कर लिया। इस भेद का पता तिफ़लो को 'डिबेट' से पहले लगा। उसने नलिनी से कहा और नलिनी ने प्रोफ़ेसर साहब पर अपने त्याग पत्र देने का रोब डाला। तिफलो को 'केबिनेट' में ले लिया गया।

वहां हार खाकर फौजदार पार्टी ने एक और तरकीब सोची। लखनऊ मुशायरा कमेटी की ओर से नलिनी और तिफलो को निमंत्रण पत्र भेजा गया। गोलबाग में बड़ा जलसा लगा। 'रेस्टोरंट पार्टी' के एक सदस्य ने एक कविता पढ़ी।

स्नान वह करते हैं, गोमती का किनारा है,
जो चाहे उन्हें देखे, बहता हुआ पानी है,
क्या खूब बनाई है, बिजली किसी जालिम ने,
चुटकी में उजेला और चुटकी में अंधेरा है,
ज्यों ही घंटा बजता है, घबरा के वह भागता है,
तिफलो नहीं; शायद वह मजनूं का बछेरा है,

तिफलो का नाम सुन कर तमाम महफिल में शोर मच गया नलिनी और तिफलो मुंह छिपा, चुपके से वहां से खिसक गये। इसके बाद नलिनी ने सहगल को मना कर दिया और प्रिंसिपल ने भी 'आर्डर' निकाल दिया कि लड़कियों के कमरे में कोई लड़का नहीं जायगा।

फौजदार जानता था कि नलिनी को नीचा दिखाने के लिए तिफलो को राह से हटाना पड़ेगा। नलिनी तो उसकी चुटकी भर भी परवाह नहीं करती थी। इसलिए 'रेस्टोरेंट पार्टी' ने रोशन करना शुरू कर दिया।

एक रविवार को साम्यवादी पार्टी की बैठक थी। बैठक खतम होने पर सब लोग चले गये। परन्तु नलिनी की मोटर नहीं आई, दामोदर लाल ने तिफलो को 'रेस्टोरेंट' से कालेज में फिर वापिस जाते देखा और उसके कान खड़े हो गये।

बाहर वर्षा हो रही थी, भीतर कमरे में नलिनी अकेली बैठी कुछ सोच रही थी कि धीरे से दर्वाजा खुला और मनमोहन अन्दर आया। नलिनी कुछ घबड़ा सी गई। सहगल ने आगे बढ़ कर कहा 'मैं आप के लिये छतरी लाया हूं'

'बहुत मेहरबानी, मैं मोटर की राह देख रही हूं।'

'क्या मैं आप के पास बैठ सकता हूँ'

नलिनी ने कोई उत्तर नहीं दिया।

बाहर वर्षा हो रही थी: धरती हृदय खोल कर अमृत रसपान कर रही थी। कमरे में कोई देखने वाला नहीं था। तिफलो ने नलिनी के अधरों पर प्रेमपूर्ण चुम्बन अंकित कर दिया।

दीवारों के भी कान होते हैं।

बगला भगत

सरदार साहब को पता लगते ही उन्होंने चंचल को बुलाया, धमकाया और अमृतसर पढ़ने के लिए भेज दिया। उनका विचार था कि वातावरण के बदल देने से सुपुत्र साहब बदल जायेंगे परन्तु उनकी दशा तो कुत्ते की पूंछ की तरह हो चुकी थी, यदि चार साल तक भी शिकंजे में डाल रखी जाय तो भी निकालने पर टेढ़ी ही निकलती है। अमृतसर और लाहौर में कुल ३५ मील का अंतर है। दो घंटे का रास्ता और किराये के लगते हैं कुल आने चार। यदि सरला की शादी गुरूशरण से न हो जाती तो राजा साहब उसके लिए दुनिया के दूसरे कोने से भी वापस आ जाते। यह लाहौर और अमृतसर उनके लिए क्या बात थी।

सरला की मां के फैलाये जाल में बालिया साहब आंखें बन्द किये चले गये। उस समय तो सरला ही उनके लिए सब कुछ थी, क्योंकि किसी और जगह पंजा नहीं जमा था और न कहीं और जगह नजर ही पड़ी थी। डालने का विचार भी नहीं था, पुस्तकों में व्यस्त बालिया साहब को दुनियां की और किसी बात का ख्याल भी नहीं आया। 'अम्बीशन' (इच्छा) ने कामना की आखें बन्द कर रखी थीं। दो महीने पश्चात् परीक्षाफल प्रकाशित हुआ। बालिया साहब आई० सी० एस० में तीसरे नम्बर से पास हुए और सरला को रोती छोड़ कर विलायत पढ़ने के लिए चल दिये।

सरदार साहब सोचते थे कि चंचल सिंह अमृतसर में जाकर पढ़ाई करेगा और सिफारिश करवाकर कहीं न कहीं अटका देंगे। लेकिन राजा साहब को तो दिलचस्पी चाहिए। दिलचस्पियां ढूंढ़ना और यदि न हों तो पैदा करना मनुष्य के स्वभाव पर निर्भर है। चीज तलाश करने से प्रत्येक जगह मिल जाती है। यदि मनुष्य चाहे तो निर्जन एवं शून्य रेगिस्तान में भी रोमांच ढूंढ़ सकता है। और रोमांचपूर्ण वातावरण में रहते हुए भी वह योगी बन सकता है। बहुत से निराशावादी अकर्मण्य हिन्दुस्तानी तो शायद स्वर्ग में पहुँच कर भी सुखी न हो सके। दूसरी तरफ अंग्रेजों को देखिये जहां जाते हैं जीवन को स्वर्ग बनाने की कोशिश करते हैं। देश से दूर छोटा सा गांव हो या बड़ा शहर वे अपना एक क्लब बना लेते हैं। वहां सब एकत्र होते हैं। शराब पीते हैं, एक दूसरे से छाती से छाती लगा कर नाचते हैं, प्रेम करते हैं।

हम इसे कहेंगे 'इम्मोरल' (आचरणभ्रष्टता) क्योंकि हम उस खुशी को अनुभव नहीं कर सकते जो हमारा दिल चाहता है। काम के समय काम खेल के समय खेल और खुशी के समय दिल भर कर खुशी। हम साथ लग लग कर नाचने में, मुस्कराने में, आपस में मिल कर मीठी मीठी बातें करने में, शराब पीने में आचरण की कमजोरी समझते हैं, जिसे वे जीवन का एक प्रधान अंग समझते हैं। उनके लिए नृत्य एक दिल बहलाने की कसरत, मीठी बातें करना सभ्यता और शराब पीना जवांमर्दी है। उसे हम नीचता कहते हैं।

खुश. कौन हैं? वे जो डान्स नहीं करते। शराब नहीं पीते। मीठी मीठी बातें नहीं करते। हर समय एक ही रट लगाए रहते हैं। राम नाम जपना, पराया माल अपना, जिन्दगी का वे क्या स्वाद ले रहे हैं, स्वयं भी जीवन का कुछ मजा नहीं लेते और दूसरों को हंसता देख उनका कलेजा जलता है। जो दूसरों को खुश करने का प्रयत्न नहीं करता, उसे भी खुशी प्राप्त नहीं होती। जमीन गोल है।

अंग्रेज अपने समाज में बनावटी दिखावट से झूठी (ऊपरी कामनांऊ) मुस्कराहट में छोटे बड़े पैग पीकर गोरा नंगा शरीर दिखा कर दूसरों की 'विसीबल डिसाइर' को संतुष्ट करते हैं और वह पारस्परिक खुशी उनमें ऐक्यभाव उत्पन्न करती हैं। उधर हम अपने विचारों, झगड़ों, धंधों में पड़े निनानवे के फेर में उलझे रहते हैं। हमारी सभ्यता सिखाती है, एकान्त भाव —दुनियां की सब चीजो को त्याग देना और त्याग कर वह शक्ति प्राप्त करना, जिसके द्वारा हम दूसरों को आत्मिक सुख और शक्ति प्रदान कर सकें। परन्तु अब, समय के फेर में पड़ कर वह एकमात्र ढोंग रह गया है। अब तो

न खुदा ही मिला, न विसाले सनम,
न इधर के रहे, न उधर के रहे।

चंचल सिंह अमतसर की पवित्र भूमि में आत्मिक शांति प्राप्त करने नहीं गये थे उन्हें तो चाहिए थी सांसारिक भोग तुष्टि। वहां पहुँचते ही राजा साहब नये शिकार के चक्कर में घूमने लगे। पुराने शिकारी थे। छुपा हुआ शिकार भी नजर से

नहीं बच सकता। शरीफ को शरीफ, दोस्त को दोस्त और ४२० को दस नम्बरिया मिल ही जाता है।

लारेंस रोड पर एक सरदार साहब अपने तीन पुत्र और एक लड़की के साथ रहते थे। रेलवे में बड़े अफसर थे और आप का नाम था सरदार अमर सिंह। सबसे बड़े पुत्र को उत्तराधिकारी होने से वंचित करते हुए उन्होंने अखबार में निकलवा दिया था कि वह मेरा पुत्र होते हुए भी मेरा पुत्र नहीं है। मनोहर सिंह का क्या कहना। चारो तरफ हाथ मारता, पंजाब से सीधा बंबई पहुँचा। सिर के बाल कटा, असली रंगरूप बदल 'रेस कोर्स' के (घुड़ दौड़ के मैदान) के चक्कर लगाने शुरू कर दिये। अव्वल दर्जे का चलता पुर्जा था। बड़ा रोबदाब। किसी न किसी शिकार को फंसा ही लेता। दो तीन लाले अमृतसर से सैर के लिए बंबई आये थे। पैसे बहुत थे पर घुड़दौड़ की चालें मालूम न थीं। मनोहर सिंह फौरन ताड़ गया। आप एक टिकट खरीदा और उनको भी दो ले दीं। उनके घोड़े की जीत हुई और उनको विश्वास दिला दिया कि वे जीत सकते हैं। किसी को धोखा देना हो तो यह अत्यावश्यक है कि पहले विश्वास उत्पन्न किया जाय। मनोहर सिंह तो लालों की मनोवृत्ति से अच्छी तरह परिचित थे। अपने पिता का परिचय दिया। बदकिस्मती से लाला जी ने लाहौर के दो पैसे अखबार में सूचना नहीं पढ़ी थी, परन्तु सरदार अमर सिंह का शुभनाम अवश्य सुना था। आखीरी दौड़ थी, लाले खूब जीत रहे थे। मनोहर सिंह ने

५०० रुपये ले एक घोड़े पर लगाए। जीत हुई। चार हजार की रकम जेब में डाल मुस्कराते हुए 'रेस कोर्स' से रफूचक्कर हुए। लाले ढूंढते ही रहे। जब उन्होंने अमृतसर पहुँचकर सरदार साहब को शिकायत की तो उन्होंने शीशे में जड़ा हुआ 'नोटिस' निकाल कर दिखा दिया।

बीच के साहबजादे बहुत बिगड़े नहीं थे। थोड़ी थोड़ी चमक अवश्य थी। नाम था गुरूशरण सिंह। बाप सा दिमाग न था पर मां की थोड़ी थोड़ी मिठास बिरासत में जरूर मिली थी। यदि गुरू की इतनी भी दयालुता न होती तो शुरू से गुरूदयाल सिंह गुरू की नगरी को छोड़ अवश्य कलकत्ता के किराया बाजार के चक्कर लगाते।

सरदार अमर सिंह के कुटुम्ब की मनोवृत्ति और विचार धारा को समझने के लिए माता पिता का परिचय आवश्यक प्रतीत होता है। पिता जी सीधे साधे कुछ सीडी दिमाग थे। कभी खयाल नहीं रहता था कि पजामे का नाड़ा किधर लटक रहा है या पगड़ी का रुख किधर है। हर समय रेलवे के टिकटों में ही ध्यान लगा रहता। काम के बड़े पाबन्द ५० रु० के बाबू से शुरू होकर बड़े साहब के स्थान पर पहुँच गये थे। पर वे उन्नति का कारण बताते थे पराक्रम। पर सरदारनी साहबा मानने को तैयार न थीं। वह अपनी भक्ति का फल बताती थीं। शादी से पहले भी उनका ध्यान ईश्वर भक्ति की ओर था। जैसे जैसे उनके मन की इच्छाएं पूरी होती गईं, विश्वास बढ़ता गया। पहले शादी हुई फिर लड़के

हुए और उनके साथ साथ सरदार साहब की तनख्वाह बढ़ती गई। यदि भगवान मानसिक और सांसारिक इच्छाओं को पूर्ण कर सकते हैं तो अवश्यमेव आत्मिक शांति भी प्रदान कर सकते हैं। इस शांति को प्राप्त करने के लिए लड़के लड़कियों के पालन पोषण पर से हटा, सब समय ईश्वर भक्ति में लगाने लगीं।

माता की ईश्वर भक्ति और पिता के हिसाब ने दोनों बड़े लड़कों के जीवन का सफाया कर दिया।

संतान में एक मात्र संतान रत्न थी अमृत। सुन्दरता की अजीब मूर्ति, मां की तरह सरल, सीधी, ईश्वर भक्ति रोम रोम में भरी हुई। बाप का सरल और निष्कपट स्वभाव आंखों से निर्भयता, सच्चरित्रता, दृढ़ता एवं होठों से प्यार टपकता था। उसके मुखमंडल पर प्रसन्नता, हास्य और स्त्री सुलभ मधुर मुस्कान को देख दुखियों का दुःख भाग जाता था अमृत सचमुच अमृत थी।

कां ों में फूल और गंदे पानी में कमल उत्पन्न होते हैं। अमृत उस अद्भुत खानदान में ऐसी ही अद्भुत देन थी। अभी उसका सौन्दर्य एक बन्द कली की तरह था। अधखिली कली पर हमारे च रत्र नायक सरदार चंचल सिंह जी की आंख पड़ी और उन्होंने ठंढ़ी आह भरते हुए दबी जबान से कहा, 'हाय'।

सुबह शाम अमृत अपनी मां के साथ मंदिर में जाती और उससे कुछ पहले पहुँच जाते थे राजा जी। कोई ईश्वर भक्ति

करता था तो कोई उसके भक्तों की भक्ति। एक आत्मिक सुख के लिए और दूसरा सांसारिक सुख के लिए ईश्वर को लालच दे रहा था। मां, बेटी की आंखें ध्यान मग्न हो ईश्वर को देखतीं और चंचल अमृत को देख दिल शांत करते।

बगुला तालाब के किनारे ध्यान लगाता है मछली के लिए, या यों कहिए कि मछली की तालाब में उपस्थिति बगुले को आकर्षित कर तीर पर ध्यान मग्न होने को बाध्य करती है। दोनों बातें एक हैं। यदि बगुले को तालाब पर आने से रोकना है तो या तो बगुले को उड़ा दो या मछली को तालाब से निकाल दो। जब तक मिठाई रहेगी, मक्खी अवश्य आयेगी। एक और उपाय है। मिठाई को जाली में बन्द कर दो, जिससे मक्खियां वहां तक नहीं पहुँच सकें। इस तरह हैजे जैसी बीमारियां रोकी जा सकती हैं। परन्तु स्त्री और पुरुष को दूर रखना उत्पत्ति को रोकना ईश्वरीय नियम के विरुद्ध है। इसीलिए चंचल सिंह और अमृत को एक दूसरे की तरफ आकर्षित होने से नहीं रोका गया।

गुरू के दरबार में यदि प्रेम किया जाय तो अवश्य सफल होगा। सांसारिक और आत्मिक सुख में इतना ही भेद है कि एक इसी जीवन में थोड़े से प्रयत्न से प्राप्त हो जाता है। दूसरे के लिए अधिक परिश्रम और यथेष्ट समय की आवश्यता है। इसी कारण लाहौरियों ने मंदिरों और पवित्र स्थानों पर जहां अमृत रस पान करने के लिए रंग बिरंगी तितलियां एकत्रित होती हैं, बगुला भक्ति का अड्डा बना लिया है।

अमृत का हृदय अभी शैशव के प्रांगण में खेल रहा था। उसे विदित नहीं था कि तालाब में बड़ी मछली छोटी मछली को पकड़ कर हड़प जाती है। उसे जीवन का हर पहलू सुखमय प्रतीत होता था क्योंकि अभी तक उसे वास्तविकता के तेज विद्युत का थपेड़ा नहीं लगा था। उसे क्या पता था कि 'ओवरकोट' में मुंह छिपाए सरदार चंचल सिंह उसका पीछा किया करते हैं।

यदि हम मंदिर में शांति प्राप्त करने जाते हैं तो ठीक है, पुण्य है परन्तु यदि हम वहां जाते हैं, अपने सांसारिक झगड़ों को सुलझाने तो वह घोर पाप है, पर लाहौरिये तो :

'करमों चल मंदिर चलिए,'

'अज की गल हैं धनवंती।'

'आज वतों दी कुड़ी नु देखन आ रहे हैं,'

मंदिर तो अब रिश्ता जोड़ने, तोड़ने, मुंह दिखाई, दिल फंसाई और पापड़ छोले खाने की जगह रह गया है। पहले मंदिर में जाते थे मनः शान्ति के लिए। अब आते हैं रंग तमाशे देखकर उसकी अशांति की आग भड़काने। यदि वहां लोग सच्चे मन से जाते हैं, आत्म शांति के लिए तो बतलाईए लोग रंग बिरंगे कपड़े पहन, सुर्खी लगा, पाउडर पोत, बनठन कर क्यों जाते हैं? क्या अब भगवान भी पाउडर की लाली द्वारा भक्तों की श्रेणी निश्चित करने लगे हैं। यदि आप पंजाब का फैशन देखना चाहें तो किसी देवालय या गुरुद्वारे में पधारें। पर देखना, जाइयेगा संभल कर। कहीं एक बार समाज के कर्णधारों को

आप के विचार का पता लग गया और आप के आचरण के सम्बन्ध में शक उत्पन्न हो गया तो गर्दन की खैर नहीं। टट्टी की ओट शिकार खेलना सीख कर जाइए। बस फिर सब ठीक है। नहीं तो दिल भर 'चाठा' पिलाया जायगा।

चाठा पीना उन्हीं लोगों को प्राप्त होता है जो बे-मौके शिकार पकड़ने के लिए चोंच मार देते हैं और इस उतावली के फलस्वरूप मछली के स्थान पर बगुला भगत स्वयं ही पकड़े जाते हैं।

इस बगुला भक्ति की शिक्षा भी भावी भक्तों को लाहौरियों से लेनी चाहिए। मछली पकड़ने के लिए काफी संतोष, सब्र और अनुभव की आवश्यकता है। यदि मछली को जरा भी शक हो गया कि आप उसके फिराक में बैठे हैं तो वह कभी आपके निकट नहीं आवेगी। इसीलिए संतोष और अपनी इच्छा को छुपाये रखना मछली पकड़ने का पहला नियम है। स्वयं तुम्हारी बाहों में खिंची चली आवे।

सरदार चंचल सिंह एक अनुभवी शिकारी थे। 'ओवरकोट' में मुंह छिपा, मंदिर के एक कोने में बैठ जाते और वहां से :

'बगुला बैठा तीर पर, मछली की आशा लग रही'

इस खेल में जो जरा भी गलती की कि सब मामला चौपट। चंचल सिंह को हरनाम सिंह की दशा का पूरा ज्ञान था।

वह सज्जन कुछ दिन हुए गांव छोड़ कर कालेज में सभ्यता का पाठ पढ़ने आए थे। आते ही आ गये लाहौर की हवा के चक्कर में। नई नई खूबसूरत लड़कियों को देखने की इच्छा

उत्पन्न हुई। और उन्होंने भी खूबसूरती के मीना बाजार-मंदिर, का रास्ता लिया। मंदिर में फूल तोड़ना तो दूर रहा, घूर कर देखना भी बुरा समझा जाता है। पीछे आने वाले के सुन्दर मुख को, गर्दन मोड़ कर ही देखा जा सकता है और आगे चलने वाली माशूका की तो सिर्फ गर्दन ही नजर आती है। इस कमी को पूरा करने के लिए हरनाम सिंह ने एक नई ईजाद की। इससे उनका नाम तमाम शहर में मशहूर हो गया और दूसरे दिन उन्हें इस खोज का पुरस्कार दिया गया।

एक दिन जनाब सूट बूट डाट कर 'उल्टी परिक्रमा' कर रहे थे कि सामने से सलवार कमीज पहने एक खूबसूरत लड़की गुजरी। गर्दन घुमा कर उसी तरफ टकटकी बांध कर देखने लगे और फलतः सामने से आती हुई एक लाली से आमने सामने की टक्कर हो गई। उसने गुरू के मंदिर में दिल भर कर मां बहिन की गालियां निकालना शुरू कर दीं।

'अन्धा कहींका।'

'माई माफ करो'। हरनाम सिंह ने कहा।

'घर में मां बहिन नहीं जो दूसरों की मां बहिन पर नजर उठाते हो।'

वह अपनी गलती की मांफी मांग रहा था और दिल में अपने आप को हजारों गालियां दे रहा था। इतने दिन चक्कर लगाते हो गये। आज टक्कर भी लगी तो चार बच्चों की मां से। हाय रे भाग्य। काश मैं इस दिलरुबा की मोटर के नीचे आ जाता।

गालियों की बौछार और भीड़ के जमघट को देखकर जनता की 'कांशेंस' (आत्मा) के रक्षक वहां आ पहुँचे और बावजूद कान पकड़ने, नाक रगड़ने और कसमें खाने के हरनाम सिंह को 'चाठा' खाने के लिए ले गये।

चंचल सिंह वहां मौजूद थे जब हरनाम की पगड़ी उतार कर उसे, उसको पगड़ी से बेंच पर बांध दिया गया जिससे सब जनता उसे देख सके और गर्दन में एक तख्ती पर मोटे मोटे अक्षरों में लिख कर यह लटका दिया गया—'मंदीर में अवारा गर्दी करने वाला'। जब हरनाम खोलने की कोशिश करता, पास ही खड़ा चौकीदार एक करारा थप्पड़ जड़ देता।

यह दशा देखकर भी चंचल ने अमृत का पीछा करना नहीं छोड़ा। इस दौड़ में वह अकेला नहीं था। वकील कर्म सिंह अहुलुवालिया का लड़का प्रह्लाद सिंह भी कुछ दिन से उसमें शामिल हो चुका था। प्रह्लाद का काम था लड़कियों के स्कूल और कालेज का चक्कर लगाना। वह चंचल सिंह की तरह 'सीरियस' प्रेम नहीं जानता।

एक दिन प्रह्लाद ने अमृत को अकेला पाकर घेर लिया और लगा बकवास करने, घर के दर्वाजे से लेकर कालेज के गेट तक चिपका रहा। बेचारी चुपचाप सिर लटकाए सब सुनती रही। दो दिन बाद प्रह्लाद ने फिर वैसा ही मौका देख अपनी जहालत का नमूना देना शुरू किया। इस बार अमृत सहन न कर सकी। और उसने गुस्से से एक किताब उसकी तरफ फेंकी। प्रह्लाद ने उठा ली। अमृत कुछ कहने ही वाली थी कि चंचल

सिंह वहां आ धमका। आव देखा न ताव दो चार प्रह्लाद के जड़ दीं। एक बार दो शिकार।

चंचल ने अमृत के तीसरे भाई हरगोपाल सिंह से दोस्ती जोड़ी। उसे सिनेमा इत्यादि देखने का शौक था। राजा साहब मुफ्त दिखाते। खूब खिलाते पिलाते। इसी बहाने धीरे धीरे उन्होंने उसके घर जाना शुरू कर दिया। अक्सर अमृत के दर्शन हो जाते। वह उसे दूर से ही पहचान कर हाथ जोड़ देती।

बड़ा घर, बड़ा बाप। अपनी जाति। लड़का कालेज में पढ़ता है। सरदार अमर सिंह को और क्या चाहिए था।



मां का थानेदार

असलम ने मशहूर तो यह कर रखा था कि उसके पिता होती मरदान में सरदार हैं थे। पर असल में पिंड दादन खां के नंबरदार थे। पिराचा साहब के बी० ए० पास करने के पहले ही उन्होंने डिप्टी कमिश्नर, तहसीलदार और कलक्टर वगैरह के दफ्तरों के चक्कर लगाने शुरू कर दिये। उनको पूरा विश्वास था कि उनकी सिफारिश से असलम की कमजोरी पूरी हो जायगी। सरकारी नौकरी के लिये सिफारिश की बहुत आवश्यकता है। जितनी बड़ी नौकरी चाहिए उतनी ही बड़ी सिफारिश। बड़ी नौकरी में अक्ल की भी जरूरत होती है उस जगह असलम की दाल गलना मुश्किल थी परन्तु प्रांतीय नौकरियों के लिए योग्यता कम और सिफारिश अधिक। वे जगह तो अपने भाई, बन्धुओं या रिश्तेदारों के लिए खाली रखी जाती हैं।

लाहौर में अब सिफारिश की डिग्री बंध गई है। सरदार साहब सिर्फ तहसीलदारी के लिए सिफारिश कर सकते हैं। और बड़ी नौकरी के लिए शायद बाप दादा को लाट साहब होना चाहिए। कालेज के सब लड़कों को डिप्टी कमिश्नर बनने की इच्छा होती है। बी० ए० में थर्ड क्लास पास हुए तब ई० ए० सी० पर नजर जमती है और जब बी० ए० एल० एल०

बी० पास कर हाथ पर हाथ धरे घर बैठते हैं तब आंख खुलती है। चार बी० ए० एल० एल बी० पिछले साल पुलिस में कान्सटेबल भरती हुए हैं। शाबाश।

नूरखां की सबसे बड़ी राज्य सेवा यह थी कि उन्होंने अपनी नम्बरदारी के समय कई भक्तों के सिर फोड़े थे। सरकारी नौकरी के लिए पासपोर्ट—देश सेवा की संख्या घटाना, दिल भर चापलूसी करना, सरकार की झूठी अच्छाइयों का फटा ढोल बजाते फिरना, दूसरों को लूट, कुछ खुद खाना, कुछ साहब लोगों को खिलाना। यदि और अधिक काम कराना हो तो 'क्रिसमिस' के दिनों में दो चार शराब की बोतलें डाली में रख बड़े साहब के दर्वाजे पर रख आना।

जिस हुकूमत की नींव ही धोखे बाजी पर कायम हो उसके कर्ता धर्ताओं से और क्या आशा की जा सकती है। सब को अपनी अपनी पड़ी है, क्यों न हो—प्रथन कार्य है पेट भरना।

एक दिन पिराचा साहब दो चार दोस्तों के साथ कमरे में परेल खेल रहे थे और खूब गप्पें लग रही थीं। इतने में होती मर्दान के नवाब साहब खद्दर की मैली तहमत अटकाए, उससे भी मैला और मोटा कुर्ता पहने, सिर पर एक बड़ी पगड़ी बांधे, लंबे लंबे पट्टों में सरसों का तेल लगाए जो गर्दन तक बह रहा था, मेंहदी से रंगी हुई सुर्ख दाढ़ी, आंखें काजल से भरी, पैरों में लम्बी पंजाबी जूती पहने, हाथ में एक मोटा सोटा लिए न मालूम किधर से आ निकले।

दर्वाजा के पास जूती उतार दी और एक लड़के से पूछा 'सिब्बो कहां है ?'

'कौन सिब्बो' लड़के ने हिकारत की नजर से देखते हुए पूछा ।

'केबल पुर के जिले दादन खां के नंबोदार का लड़का ।'

'उसका यहां क्या काम है ?'

'मेरा लड़का है । बी० ए० पढ़ता है ।'

'जनाब आली उसका नाम बताएं । यहां बी० ए० में ३०० लड़के पढ़ते हैं ।'

बुड्ढ़े ने कुछ सोच कर धीरे से कहा 'उसका नाम है असलम ।'

'असलम खां पिराचा '

अपने नाम को सुन कर असलम ने दर्वाजे से बाहर झांका और मामला देख कर पूछा 'कौन है'

'तुम्हारा बाप' लड़के ने कहा ।

'किसका बाप, कौन' असलम ने मक्कारी से पूछा ।

लड़के ने मुस्कराते हुए बुड्ढे की ओर इशारा किया । उसने पहचानते हुए कहा, 'बेटा शिब्बो'

'तुम गलती पर हो बुड्ढे । यहां तुम्हारा शिब्बो इब्बो कोई नही है'

बुड्ढे ने डंडा संभाला और गुस्से से कहा 'हरामजादे, अपने बाप को नहीं पहचानता । इसीलिए पढ़ा लिखा कर बड़ा किया था, लानत है मुझ पर अगर तेरा मुंह भी देखूं ।'

असलम ने तो पहले ही दर्वाजा बन्द कर लिया था। बुड्ढा गालियां निकालता होस्टल से बाहर चला गया।

पिराचा साहब जूआ भी खेल रहे थे, और सोच रहे थे कि ऐसा न हो कि नंबरदार साहब माहवारी भी बन्द कर दें। तब तो मामला गड़बड़ हो जायगा। शाम को कपड़े बदल कर वह डिब्बी बाजार की सराय में पहुँचे। नवाब साहब जब कभी लाहौर आते, इसी सराय में ठहरते थे। दर्वाजा के दोनों तरफ बड़े छोटे पतीलों के दो ऊंची कतारें लगी हुई थीं। बांई तरफ नानबाई की दूकान थी। चारो तरफ मैले कुचैले पतीले पड़े हुए थे और एक तरफ तंदूर में नानबाई नान लगा रहा था। सामने चारपाई पर मैले कपड़े पहने दो चार मजदूर बैठे थे। वहां की महक को सूंघ कर, असलम ने एक हाथ से नाक को पकड़ते हुए पूछा, दादान खां के 'नंबरदार कहां ठहरे हैं।'

तवे पर रोटी डालते हुए नानबाई ने उत्तर दिया : 'वह नीम के सामने वाली कोठरी में।'

नंबरदार साहब मूंज की टूटी चारपाई पर लेटे दिल में गालियां निकाल रहे थे। पिराचा साहब सूट बूट सजाए भीतर आये और चुपचाप चारपाई के पैरों की तरफ खड़े हो गए। बाप ने मुड़ कर गुस्से से कहा 'हरामजादे अब मुझे मुंह दिखाने क्यों आया है।'

'अब्बाजान, आप तो खामखाह नाराज ही रहे हैं।'

'नाराज न हूं तो क्या मुझे अपनी बेइज्जती करने की साक्षी दूं।'

'बुजुर्गवार आप समझे नहीं।'

'क्यों समझता, अब मेरी अवस्था सठिया गई है न और तुम कालेज में अंग्रेजी पढ़ते हो। पर बेटा मैंने भी ४० साल नंबरदारी की है। और सब नंबरदारों से बढ़ कर मैंने बड़े बड़े डिप्टी कमिश्नरों से पंजा मिलाया है।'

'आप तो सुनते ही नहीं जनाब आली। मैंने अपने कमरे में कलक्टर साहब को दावत दी थी।'

बुढ्ढे के चेहरे से गुस्से के चिह्न कुछ उतर गये, 'कलक्टर साहब।'

'वह और उनकी मेम साहब आई हुई थीं। नायब तहसीलदारी के लिए उन्होंने मेरी सिफ़ारिश की है।'

'शाबास बेटा, तुमने पहले क्यों नहीं बताया।'

'आपने मौका ही नहीं दिया, उस वक्त तो मैं उन पर रोब कस रहा था कि मेरे पिता होती मर्दान के सरदार हैं। उधर से आप तशरीफ़ ले आये। अगर वह आपको उस हालत में देख लेते तो बने बनाए काम पर पानी फिर जाता। बड़ी मुश्किल से दावत मंजूर की थी और मुझे...'

'बहुत पैसे तो खर्च नहीं किए।'

'बड़े आदमी को घर बुला कर उनकी बेइज्जती तो नहीं करनी चाहिए। 'ट्रंक शाप' से सब चीजें उधार ले लीं। अपना उल्लू सीधा करना था। ऐसे मौके रोज रोज थोड़े ही आते हैं।'

'कितने रुपये लगे।'

'पांच, छः की मिठाई और दस रुपये की केक पेस्ट्री मंगवाई थी।' 'पकौड़े बनवा देने थे', बुड्ढे ने राय दी।

असलम हंस पड़ा। 'कभी अंग्रेज भी पकौड़े खाते हैं। वह तो पेस्ट्री से कम में बात नहीं करते।'

'मै तो उन्हें काला साहब समझे बैठा था। बेटा काले साहब बड़े खराब होते हैं। खा पीकर भी काम नहीं करते। पर अंग्रेज तो फरिश्ते हैं, फरिश्ते। कोई भी अंग्रेजी क्यों न हो तुम उसे झुक कर सलाम किया करो। वे हमारे मां, बाप हैं। मैं पहला नम्बरदार हूँ जिसे खां साहबी मिली है। जिस दिन तुम नायब तहसीलदार बन जाओगे उस दिन मै तुम्हारे कलक्टर साहब को बड़ी दावत दूंगा।'

'अच्छा जान वह ट्रक शाप…'

'कितने खर्चा हुए थे…'

'बीस के करीब लग गये होंगे।'

खुर्राट बाप ने जेब में ही गिन कर पांच पांच के चार नोट निकाल बेटे के हवाले किये।

एम० ए० पास करने के बाद भी पिराचा को नायब तहसीलदारी की उम्मीद न थी। डिग्रियां शीशे में जुड़ा कर, झूठे रिश्तेदारों के कारनामों की फेहरिस्त और बुड्ढे बाप को साथ लेकर सब दफ्तरों के चक्कर लगाने शुरू कर दिये।

किस्मत के बली थे। सूबों में हिन्दुस्तानी वजारतें खड़ी हो रही थीं, और लोगों का खयाल था कि वे स्वतन्त्रता की वायु में सांस लेंगे। परन्तु हुकूमत हाथ में आते ही नये जल्लादों ने उन्हीं पुराने तरीकों को अपना लिया और अधिक उत्साह के साथ उनका प्रयोग करने लगे। नया मुसलमान अल्लाह ही

अल्लाह पुकारता है। हुकूमत बुरा नशा है और उसके खुमार को कायम रखने के लिए पुलिस की सख्त जरूरत है। पुलिस के छोटे मोटे अफसर सिफारिशी होना चाहिए जो अपने स्वामी के इशारे पर चलें। कुत्तो की तरह। असलम पिराचा को सिर फोड़ने और झूठ बोलने की शिक्षा देकर झंग मघियाने का थानेदार बना दिया गया।

'सैयां भये कोतवाल तो अब डर काहे का...गांव में दो चार पक्के मकान थे। बाकी सब गारे की झोपड़ियां। सबसे बड़ी हवेली में आधे गांव के मालिक, पीर मुहम्मद खां कुरैशी रहते थे। उनके मुजविर उनकी बहुत कद्र करते थे। गां वमें बड़ी शांति और मेल था। पर थानेदार को शांति और मेल कब सुहाता है। वह तो ईंट से ईंट लड़ाना चाहता है।

'दो मूंजियों में खटपट, तीसरे की आ बने झटपट।'

एक दिन पीर साहब के मुनीम एक हिन्दु मुजारे से वसूली करने गये और किसी छोटी सी बात पर तो तो में में हो गई और लालाजी की धर्मपत्नी हाथ में डंडा लिए बीच में कूद पड़ीं। गाली गलौज हुआ, देखते देखते नोबत हाथा पाई तक की आ गई। लालाजी ने बीवी से डंडा छीन मुनीम पर वार किया पर चोट लगी श्रीमती जी के सिर पर। वह जोर जोर से चीखने लगी। शोर मच गया। सबने मुनीम को घेर लिया। पीर साहब का बड़ा लड़का अनवर भी वहां आ पहुँचा। लालाजी से लकड़ी छीन ली और मुनीम को खूब डांटा।

थानेदार साहब को खबर लगी कि खून हो गया। और वे हथकड़ियां ले, घोड़े पर सवार हो जल्दी मुकाम पर पहुँच गये। मामला साफ था। दोनों पक्ष वालों को हिरासत में ले लिया। थाने में पहुँच कर थानेदार ने लाली का बयान अपने हाथों लिखा।

'छोटे पीर साहब अनवर ने मेरा हाथ पकड़ा और मेरी लाज उतारनी चाही, बहुत रोई और चिल्लाई पर किसी ने मेरी नहीं सुनी। मैं घर में अकेली थी। मुनीम मुझे पकड़े हुए था और अनवर मेरे साथ हाथापाई कर रहा था, इतने में मुन्नी के लालाजी बाजार से वापिस आ गये। उन्हें देख मुनीम ने उन पर डंडे से वार किया। मैंने अपने को छुड़ा उन्हें बचाना चाहा तो डंडा मेरे सिर पर लगा'।

थानेदार की पांचों घी में।



सब तलाश में

जगदीश भल्ला को सरकारी नौकरी मिलने की तनिक भी उम्मीद न थी। इसलिए बी० ए० पास करने के बाद अपने मामा जे० पी० भल्ला के यहां पहुँचे और उनसे मदद मांगी। भल्लों में बहुत अधिक भाई बंधो है। वे जहां तक हो सकता है कभी किसी भल्ले को नीचे नहीं गिरने देते। एक दूसरे की सहायता करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं। वे और जातिओं की तरह एक दूसरे के धन को देख कर जलते नहीं और उसे नीचा गिराने का प्रयत्न नहीं करते।

बड़े भल्ले ने जगदीश को सलाह दी कि वह 'इन्शोरेन्स कम्पनी' का एजेंट बन जाय। अपनी कम्पनी थी। 'एजेंसी' देना बांऐं हाथ का खेल था। जितनी 'बिजनस' (व्यापार) होगी उतनी ही 'परसेंटेज' (प्रतिशत) मिलेगी। जगदीश काफी होशियार था जवान था, शिक्षित था और खूब लच्छेदार बातें करना जानता था।

सबसे पहला आसामी उसने राजा साहब को फंसाया। पिता को मरे कुछ महीने हो चुके थे। चार लाख की जायदाद हाथ लगी थी, उन्हें इन पैसों से क्या प्रेम जिसे कमाने में उन्हें कुछ भी परिश्रम नहीं करना पड़ा हो। माले मुफ्त दिले बे रहम। वे बड़ी लापरवाही से पैसे लुटाने लगे। राजा

साहब ने फौरन एक लाख का बीमा करा लिया। जगदीश को चाय पिलाते हुए पूछा 'जगदीश जिन्दगी कैसे कटती है'।

'वह चाल बे ढंगी जो पहले थी वह अब भी है।'

'शादीवादी की।'

'आपकी तरह थोड़े ही हूँ कि शादी करें और दोस्तों को खबर तक न दें।'

'कोई नजर में है'

'चक्कर तो बहुत घरों में लगाता हूँ पर अभी तक कोई कांटा अटका नहीं।'

'ऐसी जगह अटकाना जहां दो चार सालियां हो।'

'वह क्यों'

'एक से दिल भर जाय तो दूसरी पर......'

'आप में कुछ फर्क नहीं पड़ा। रानी साहब...'

'वह तो मैके गई हुई है। भल्ला, शादी करके मैं तो इस बात का कायल हो गया हूं कि ईश्वर ने आदमी को बहु स्त्री गामी बनाया है। एक स्त्री उसकी इच्छा पूर्ति नहीं कर सकती।'

'लालसा बुरी बला है। मैं तो दो औरतों में कोई अन्तर नहीं देखता।'

'मेरी जान, तुम झूठ बोल रहे हो। अपने दिल से पूछो, क्या वह हर एक लड़की से प्यार कर सकता है। हजारों में एक लड़की को देख कर तुम्हारी रूह जाग उठती है। उस लड़की का रहस्य तुम पर प्रेम का जादू डालता है। जब वह

रस खतम हो जाता है तब हम दूसरी लड़की की ओर नजर डालते हैं। हर एक में अलग अलग मिठास होती है।'

भल्ला जी कान लगा कर सुन रहे थे।

'चलो, कहीं सैर करने चलते हो।'

'नहीं राजा साहब, मुझे तो जरूरी काम है। अगर शौक हो तो दीवान साहब को भेज दूंगा। वह लाहौर के चप्पे चप्पे से जानकार हैं।'

'नेकी और पूछ पूछ। कब?'

'आज ही लीजिये'

जगदीश तो साइकिल पर चढ़ सीटी बजाता हुआ सीधा मामा के घर जा पहुँचा और अपनी सफलता की डींग सुना दी। उसने साथियों के फंसाने का तरीका ही सबसे आसान समझा। दोस्तों को 'ओब्लाइज' (प्रसन्न) करना ही पड़ता है। 'इन्शोरेन्स' के बहाने उसने बड़े बड़े घरों में आना जाना शुरू कर दिया।

एक दिन वह लाला नरेन्द्र काक के बंगले पर गये और बाहर पड़ी बेंच पर बैठ जज साहब के बाहर आने की राह देखने लगे। कालेज का समय हो रहा था, अन्दर से एक लड़की निकली। सावित्री का यौवन उसके वस्त्रों में से बलात् बाहर निकलने का प्रयत्न कर रहा था। १७, १८ वर्ष की अवस्था। कद कुछ छोटा पर ऊंची एडी की सहायता से बढ़ाया हुआ। शृंगार किसी भारतीय अभिनेत्री से कम नहीं। अरुण कमल के सामान सुकोमल मुख पर नील

कमल के समान सुन्दर नेत्र युग्म, कालिदास की 'कमले कमलोत्पत्ति भवेत्' वाली उपमा को साक्षात् चरितार्थ कर रहे थे। सुन्दर आभायुक्त पलकें उठती और गिरती ऐसी प्रतीत होती थीं मानो हलके हलके बादल पूर्णमासी के चांद को अपने अंक में छिपाने का विफल प्रयत्न कर रहे हों। सुराहीदार गर्दन के चारों ओर लिपटी सच्चे मोतियों की माला की छटा दूनी हो उठी थी। छाती से चिपका हुआ रेशमी ब्लाऊज़, कटि, यौवनपूर्ण छाती के भार से इस प्रकार झुकी जा रही थी जैसे बसंत ऋतु में सौरभ युक्त मन मोहक फूलों के भार से कोमल वेलि।

उस सौन्दर्य की देवी को देख, जगदीश की आंखे चौंध गईं। यौवन के सूर्य के सम्मुख कौन अपने नेत्र उठा सकता था। बस एक ही दृष्टि पड़ी और नीचे को देखने लगे।

प्रातः काल का समय था। सावित्री ने श्वेत सुचिक्कण वस्त्र धारण कर रखे थे। श्वेत सैंडिल्स में चमकती क्युटिक्स से रंगी गुलाबी उंगलियां एक उत्तम कोटी के कमल को भी लजा रही थीं।

'आप किस से मिलना चाहते हैं', उस मृगनयनी ने वीणा विनिन्दित स्वर में पूछा।

'मैं जज साहब से मिलने आया था।'

'वे तो बाहर गए हुए हैं।'

जगदीश ने अपना वेग उठाया और चलने को था कि सावित्री ने फिर पूछा 'क्या कार्य है।'

'जज साहब से काम था, फिर किसी दिन आऊंगा। नमस्ते।'

'नमस्ते।'

जगदीश सुध बुध भूल घबड़ाता हुआ बाहर चला गया और बाग की बेंच पर बैठ ठंढी हवा में अपना दिल स्वस्थ करने लगा। थोड़ी देर पश्चात् उसके होश ठिकाने हुए और उसे विश्वास हो गया कि सावित्री स्वप्न न थी वरन् सौन्दर्य की एक साक्षात प्रतिमूर्ति। शाम को जब दीवान साहब से भेंट हुई तो गलत नाम पता बताते हुए उसने अपने दिल की दशा का वर्णन किया।

'दीवान साहब क्या बताऊं, इतनी सुन्दर लड़की…'

'मुबारक हो'

'तुम्हें तो मेरे साथ खेद प्रकट करना चाहिए भला वहां तक मेरी पहुँच कहां।'

प्रेम और 'अम्बीशन' दो ऐसी वस्तुएं है जिनको वही पाता है जो हिम्मत नहीं हारता। हिम्मत मरदां मददे खुदा।'

'सामने देख कर सिर मारना चाहिए, पत्थर से मारोगे तो अवश्य चोट लगेगी।'

'कभी प्रेम की टक्कर जान बूझ कर भी होती है। वह तो पंजाब मेल की तरह कभी गलती से भले ही टकराए। पता तब लगता है जब सब उलट पुलट हो जाता है। जब टक्कर हो ही गई तो उसके फल ग्रहण करने से क्यों भागना? ओखली में सिर दिया तो चोटों से क्या डर। मेरी तरफ

देखो, जिस लड़की की तरफ इशारा करो दो हफ्तों में फंसा कर रख दूं।'

'तुम्हारी और बात है।'

'अल्ला साहब, प्रेम में चालबाजी, धोखेबाजी और न मालूम किन किन बाजियों से काम लेना पड़ता है। वरना, कौन सी ऐसी भोली भाली चिड़िया है जो स्वयं आकर पिंजरे में बैठ जाती है और फुदक फुदक कर कहती है मैं तुम से प्रेम करती हूं।'

'प्रेम कठिन समस्या है।'

'कठिन अवश्य है, पर असंभव नहीं। होशियारी से काम लेना। शराफत से आजकल की लड़कियां नहीं फंसती। उन्हें तो सब्ज बाग दिखाने वाले ही फंसा सकते हैं। देखो न चंचल सिंह को, दो कौड़ी का आदमी है और बीबी फंसाई है परी।'

'अच्छी याद दिलाई। राजा साहब आपको याद फरमा रहे थे। जरा एक दिन मिल आइएगा। रानी साहिबा मैके गई हुई हैं।'

जगदीश के लिए बदमाश बनना मुश्किल था। यद्यपि वह दो चार साल चंडाल चौकड़ी का सदस्य रह चुका था। चरित्र नाम की वस्तु के दो चार परमाणु उसमें अभी शेष थे। वह यह भी जानता था कि इस जगह शराफत से काम नहीं चलेगा। शरीफ आदमी शराफत को लिए बैठे रहते हैं, उन्हें आगे बढ़ झपटने की हिम्मत नहीं होती और चंचल सिंह उसी चालबाज चीलें सामने से कौर उठा कर ले जाती हैं।

यदि किसी खूबसूरत छोकरी को प्रेम जाल में फंसाना हो तो उसकी शिक्षा दीवान विलायती राम से ले लो। आपका जन्म काश्मीर में हुआ था, परन्तु जब से होश संभाला अपने को लाहौर के गली कूचों में ही पाया। बदशक्ल होते हुए भी लाहौर की कई व्याहता और कुंवारियों से आपका सम्बन्ध था।

विलायती राम के मुंह पर तो माता के दाग थे और उन लड़कियों की आंखों पर काम वासना का काला पर्दा पड़ा हुआ था। कुछ तो इतनी गरीब थीं कि यह उनके पेट भरने का साधन बन चुका था।

'एक अंधा एक कोढ़ी, खूब मिलाई जोड़ी'।

यदि हम ध्यान पूर्वक अपनी बदलती हुई सभ्यता की ओर दृष्टि डालें तो हमें ज्ञान होगा कि पहले सबको अपने नाम मान और आन का ख्याल था। वह थी हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति, परन्तु पाश्चात्य शिक्षा और आदर्शों ने उस नींव को हिला दिया और पैसा हमारा ध्येय बन गया। हम दौड़ने लगे पैसे के पीछे। सब कुछ खो कर पैसे के लिए हमने सब कुछ लुटा दिया। फल वही हुआ जो होना था।

जवान लड़के अंग्रेजी नाच, अंग्रेजी शराब और अंग्रेजी लड़कियों के पीछे लग पड़े जिसे वे नई सभ्यता समझे थे, वह एक मृगतृष्णा थी। उसकी कोई नींव न थी। उसमें कोई सत्य और कल्याणकारी बात न थी। उसका कोई इतिहास न था। पर उन अक्ल के अंधों को कौन समझाता।

डिग्रीधारियों की क़ीमत बढ़ गई। आन, बान और मान सब बाजार में टकों के भाव बिकने लगे। शादी से पहले शर्त की आने लगी कि पढ़ने के लिए विलायत भेजो। यदि यह शर्त मंजूर हो गई तो किसी भी अंधी कानी से शादी कर ली। विलायत से लौटते समय एक मेम साहिबा साथ ले आए। लड़की फिर घर की घर में। जब मां बाप ने देखा कि ऐसे काम नहीं चलेगा तो लड़कियों के नाम रुपया जमा कराना शुरू कर दिया। लड़कों को मुंह की खानी पड़ी। इतने ही से काम नहीं बना। बल्कि लड़कियों ने उल्टी गंगा बहा दी। बाढ़ पूर्ण पहाड़ी नदी का प्रवाह रोकने की शक्ति किसमें थी।

लड़कियों के लिए पाश्चात्य शिक्षा का अपनाना घातक सिद्ध हुआ। वे आजाद अंग्रेज औरतों को देख कर स्वतन्त्रता के स्वप्न देखने लगीं, अपनी गुलामी से छुटकारा पाने का एक ही उपाय था किसी तरह वे अपने आप को आर्थिक दृष्टि से स्वतन्त्र कर लें. फिर तो पुरुषों को बोझ नहीं उठाना पड़ेगा।

इस खोखली आजादी को पाने के लिए उन्होंने नौकरी ढूंढ़नी शुरू कर दीं। कई तो पुरुषों से ज्यादा कमाने लगीं। परन्तु औरतों का मन फिर भी घर में होता है। पुरुष घर और बाहर दोनों जगह राज करना चाहता है। जिस आजादी से वे सुखी बनना चाहती थीं वह आजादी, उनके पैरों की बेड़ी बन उन्हें दुखी करने लगी।

आवेश और क्रांति के समय में तो किसी को मालूम न था कि वह किस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्न कर रही हैं। परन्तु

वहां पहुँच कर आंखें खुलीं जहां वे नहीं पहुँचना चाहती थीं। अमृत के स्थान पर उन्हें विष प्राप्त हुआ। जो सच समझा था वह स्वप्न निकला। फिर वही पुराना समय याद आने लगा जब स्त्री गृह स्वामिनी थी। पति की सहकारिणी थी। मंत्र द्रष्टा थी, अन्नपूर्णा थी। शिशु पालन उसका सर्वोत्कृष्ट कर्त्तव्य था। वह राष्ट्र की जननी थी। वे दोनों जीवन का अनुभव कर चुकी थीं। परन्तु लाहौर के नव युवक और युवतियां उन श्रद्धेय वृद्धों की शिक्षा और पथ प्रदर्शन को पागल प्रलाप बताते। उनके पथ प्रदर्शक थे, दीवान विलायती राम जो 'नीत्शे' के कथानुसार कहते थे, 'जितना ही पेड़ ऊपर बढ़ता है, उसकी जड़ें उतनी ही अंधेरी जमीन में नीचे घुसती हैं। पाप करना पाप नहीं।'

पापपूर्ण कामवासना की तृप्ति के लिए सब सिद्धान्त तोड़े मरोड़े जा सकते हैं। जगदीश भल्ला ने भी अपनी आत्मा की पुकार को दबा कर दीवान साहब का नेतृत्व स्वीकार कर लिया।

मुबारिक हो।



बिछुड़े हुए मिलेंगे फिर, किस्मत ने गर मिला दिया

देशभक्त सहगल साहब गाज़ीपुर के इलाके में व्याख्यान और राजनैतिक जाग्रति करके वापिस आ रहे थे। मुगलसराय में उनकी भेंट नलिनी से हो गई। उसने सहगल को पहचान कर थोड़ा सा मुस्करा दिया।

नलिनी की शादी हुए कोई तीन चार साल हो चुके थे परन्तु रंग रूप में कोई फर्क नहीं आया था। वही लड़कपन, कुंवारे पन का नाजुक बदन, आजकल की लड़कियों ने अपनी सौन्दर्य रक्षा का पाठ पढ़ लिया है। जब तक लड़की का शरीर सुघड़ नहीं वह सुन्दर नहीं कहलाती और बिना सुघड़ता और सौन्दर्य के समाज स्वीकार नहीं करता। पहले, शादी हुई नहीं कि मुटापा शुरू हो गया। फिर दो चार बच्चों की मां बनने तक पूरी भैंस की भैंस। आजकल की लड़कियों को देख कर तो आप यह भी अन्दाजा नहीं लगा सकते कि वह विवाहित है या कुंवारी। मांग में सिंदूर लगाना तो पुराना फैशन हो गया है।

'आप इधर कैसे', सहगल ने हाथ जोड़ते हुए पूछा।

'क्या मैं भी यही प्रश्न पूछ सकती हूँ', नलिनी ने चपलता से कहा।

'सिर आंखों पर, देश सेवार्थ गाजीपुर गया था। आज कल उस इलाके में बहुत जोश बढ़ रहा है। चुनाव में अवश्य हमारी सफलता होगी। हम किसानों में जाग्रति पैदा कर रहे

हैं। उनको उनका हक बता रहे हैं। वे कई शताब्दियों से सरकारी कारकुनों और जमींदारों के बोझ के नीचे दबे हुए थे। उन्होंने जोंकों की तरह उनकी गाढ़ी कमाई का खून चूस लिया था परन्तु आज वे सब जाग उठे हैं। अब वे अपने को स्वतन्त्र करेंगे। प्रत्येक गांव में किसान सभा बन गई है। मैं साम्यवाद का पक्षपाती हूँ। इससे हमारे देश को कुछ लाभ हो सकता है। आज किसान जानते हैं कि एकता में शक्ति है। जब बिलकुल इकट्ठा हो जायेंगे, जमींदारों को लगान् देना बन्द कर देंगे। आखिर जमींदारों का उस जमीन पर क्या हक है जिस पर उन्होंने कभी कदम नहीं रखा और जिसे किसान कई शताब्दियों से जोतते आए हैं। वे तो बिना परिश्रम किए अपने खजाने भरते हैं, ऐश करते हैं और इधर गरीब किसानों को दिन रात परिश्रम करने पर भी दो वक्त रोटी नहीं मिलती। उनको मिटाना ही पड़ेगा। हमारे क्रांतिकारी किसान उन्हें नष्ट कर देंगे। फिर हम ....'

'फिर हम सब बर्बाद हो जायेंगे।'

सहगल साहिब की वक्तृता पर पूर्ण विराम लग गया। वह कुछ हक्का बक्का हो नलिनी की ओर देखने लगा।

'मैं तो आपको साम्यवादी ही समझे बैठा था। मुझे मालूम न था कि शादी के साथ साथ आदर्श बदल दिए हैं और पूंजीवादियों में नाम लिखा लिया है। हिन्दुस्तान में कोई भी शिक्षित व्यक्ति ऐसा नहीं है जिसके विचार साम्यवादी न हों। यदि वह साम्यवादी नहीं है तो वह देशद्रोही है। आपतो

कालेज में इतने जोशपूर्ण व्याख्यान देती थीं, और आप ही के कारण… .'

'सहगल, मैं अपने आदर्श को भूली नहीं और देश की खातिर में सब कुछ त्याग कर सकती हूं। परन्तु इन देश भक्तों का असली रूप देखकर मेरी आंखें खुल चुकी हैं। मैं देखती हूँ कि सब लोग देश के लिए नहीं, अपने स्वार्थ के लिए, नाम के लिए देशभक्ति का ढोंग रच रहे हैं। एकबार उनके हाथ में शासन की बागडोर आ जाने दो। फिर देखना कैसा पैतरा बदलते हैं। वही पुलिस होगी, वही अदालत और उसी तरह गरीब किसानों को फिर हांका जायगा। मैं एक की गुलामी से दूसरे की गुलामी में कोई अंतर नहीं देखती।'

'आप तो पथ प्रदर्शन कर रही हैं। सब नेता एक तरह के थोड़े ही होते हैं। मैं मानता हूं कि हम में से बहुत से स्वार्थी हैं, पर ऐसे भी हैं जो सर्वस्व अर्पण कर चुके हैं।'

'लेकिन सहगल एक मछली तालाब को गंदा कर देती है।'

'ऐसा कौनसा तालाब है जिसमें मछलियां न हों। हमारे देशभक्तों में अब सेवा और त्याग की भावना उत्पन्न हो रही है। आप आकर देखें।'

'मैं दूसरी बार फंसना नहीं चाहती।'

'दूसरी बार' अचंभे से सहगल ने पूछा नलिनी कुछ शर्मा गई और उसके चेहरे पर जर्दी सी छा गई। उसने सहगल के प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया। गाड़ी सीटी दे रही थी। सहगल ने चारों तरफ देखा और कुली को जल्दी सामान रखने को कहा।

'आप कहां जा रहे हैं।'

'लाहौर' !

'मेरे ही डिब्बे में आ जाइए। तीन हम पहले हैं, चौथे आप हो जायेंगे। किसी जनाने डिब्बे में जगह नहीं मिली। मजबूरन मारवाड़ियों के साथ रात काटनी पड़ी।'

'धन्यवाद'।

दोनों मारवाड़ी डिब्बे की खिड़कियों में से सिर निकाल कर इन दोनों की तरफ देख रहे थे, पहले कुछ हंसे, फिर दोनों का रिश्ता जोड़ना शुरू किया। नलिनी और सहगल अन्दर बैठ गये और गाड़ी लाहौर की तरफ चल दी। फिर भी उन्होंने मारवाड़ी भाषा में बकवास करना बन्द नहीं किया। आखिर तंग आकर नलिनी ने मारवाड़ी से कहा, 'मैं भी समझती हूँ'। उन दोनों की तो हवाइयां खिसक गईं। और बनारस के स्टेशन पर ही वे दोनों उतर कर दूसरे डब्बे में चले गए।

'थैंकस् गौड', नलिनी ने चैन की सांस लेते हुए कहा। अब दोनों अकेले थे और कलकत्ता मेल तेजी से लाहौर की तरफ बढ़ रही थी।

'आप ने बताया नहीं कलकत्ते क्यों जाना हुआ।'

नलिनी ने कुछ जवाब नहीं दिया। सिर्फ खिड़की से बाहर तेजी से गुजरती हुई प्राकृतिक छटा को देखने लगी। सहगल तो बातें करना चाहता था, उसने फिर दूसरा सवाल किया, 'प्रोफेसर साहब कहां हैं ?' पर नलिनी चुप थी। अब सहगल कुछ सनका।

'नलिनी खैर तो है'

'सब ठीक है। 'होता वही जो मंजूरे खुदा।'

'आप कुछ उदास हैं ।'

'नहीं तो। मैं कलकत्ते की बातें याद कर रही थी।'

'आपने बताया नहीं कि आप कलकत्ते क्यों गई थीं ।'

'समाज...'

'वह क्या...'

'बंगाल में एक मत है।'

'अच्छा तो आप ने अब धर्म यात्रा में कदम बढ़ाया है। खैर तो है।'

'खैर का क्या मतलब, मुझे उस मत के उसूल पसन्द थे। मैंने उसे अख्तियार कर लिया। वही एक धर्म है जो औरतों को स्वतन्त्रता दिला सकता है।' नलिनी कुछ सोच कर रुक गई।

'आप को किससे आजादी चाहिए।'

नलिती ने कुछ बनावटी गुस्से से सहगल की तरफ देखा।

'माफ करना नलिनी, मुंह से बात निकल गई। मुझे पुराने दिन याद आ गए और मैं भूल गया कि तुम्हारी शादी हो चुकी है, मुझे पुरानी बातें याद कराने का कोई हक नहीं।'

'पुरानी बातें किसे भूलती हैं। काश......'

सहगल की समझ में कुछ न आया। वे दोनों बहुत देर तक पुरानी बातें याद करते रहे। नलिनी जो कुछ हुआ मेरा ही अपराध था। अगर उस दिन...'

'सब फौजदार की बदमाशी थी।'

'उसे अब उसकी बदमाशियों का फल मिल रहा है। चार दिन हुए गांव वालों ने सिर फोड कर रख दिया'।

दो तीन दिन का रास्ता था। गाडी में दोनों अकेले थे। कुछ साल पहले दोनों प्रेम के शिकार हो चुके थे। छुपा हुआ घाव फिर खुल गया और दोनों के दिलों में प्रेम पीड़ा होने लगी। वे दोनों खिड़की से सिर निकाले प्राकृतिक दृश्यों को दृष्टि के सामने से निकाल रहे थे, उतनी ही शीघ्रता से उनके जीवन की 'सीनरी' भी रोमांच हो तेजी से बदल रही थी। कहीं पर हरी घास चारो ओर फैली हुई, जगह जगह पर रंग विरंगे फूल खिले हुए, गांव की खामोशी में शांति ही शांति नजर आ रही थी। धीरे धीरे मैदान कुछ ऊंचा होता जा रहा था। फिर छोटी छोटी पहाड़ियां आने लगीं। उन पर कहीं कहीं कांटेदार झाड़ियां, कहीं घाटियों के बीच में छोटी छोटी हरी हरी आवादियां, चारो तरफ से थकी हुई आंखें जब उन 'ओसिस' पर जमतीं तो ऐसा मालूम होता कि—

गर फिरदौस अज़ बरूए, जमीं अस्त,
हमीं अस्तों हमीं अस्तों हमीं अस्त।

वचपन गुजर कर जवानी आई और उसके साथ आई उसकी कठिनाइयां और सुख। कठिनाइयों के वावजूद भी जवानी के दिन प्रेम और रोमान्च से भरे होने के कारण सुखद प्रतीत होते थे। जवानी की मस्त हवा धीरे धीरे जोर पकड़ती गई। थोड़ा सा तूफान उठा :

दृश्य एकदम बदल गया । दोनों प्रेमी समझ बैठे थे कि इसके बाद वे एक सुन्दर बाग देखेंगे' जहां रंग बिरंगे फूल, सुन्दर कलियां होंगी, जहां खुशी और मस्ती के फौवारे आसमान तक लंबे उठ रहे होंगे, जिसके कोने कोने में सौन्दय ही सौन्दर्य होगा । पर जब आंखें खुलीं देखा कि चारो तरफ अंधेरा था । एक भयानक तूफान ने चारो तरफ से घेर लिया । उस तूफान के गुब्बारे में वे एक दूसरे से जुदा हो गये और अपने जीवन के अलग अलग दृश्य देखने लगे । एक को रास्ता दिखाने के लिये साथी और दूसरे को काम मिल गया । दोनों अपने अपने पथ पर इतने अधिक बढ़ चुके थे कि उस सुन्दर बाग को देखने की फिर आशा न थी ।

अंधे को लकड़ी का सहारा ही काफी है । परन्तु यौवन से मदमाती युवती को मिले प्रोफेसर मनोरंजन गोहा । न उनकी 'परसोनेल्टी' (व्यक्तित्व) थी और न अपनी पत्नी की बढ़ती हुई काम पिपासा को शांत करने की शक्ति, वह अपनी कमजोरी को जानते थे और जानते हुए भी एक सुन्दर युवती से विवाह करने की अभिलाषा उन्हें खाए जाती थी । जैसे ही नलिनी की लखनऊ में बदनामी हुई श्रीकती चटर्जी ने तार दिया और देखते देखते शादी हो गई । कटी नाक को छिपाने के लिए नलिनी के पास यही उपाय शेष रह गया था । गोहा साहब समझे बैठे थे कि नलिनी अपने पापों को याद कर उनकी कमजोरी को क्षमा कर देगी और दोनों चोर प्रेम

से जीवन व्यतीत कर सकेंगे । परन्तु कामना खिलौना न थी जो जरा जरा सी बातों में बहक जाय ।

हिन्दू धर्म के अनुसार नलिनी सदा के लिए प्रो० गोहा सालब की हो चुकी थी । परन्तु उस बन्धन में वह चुप रह सकता है जिसे अपनी अवस्था का ज्ञान न हो। उससे छुटकारा पाने के लिए नलिनी ने ब्रह्मोसमाज का आश्रय लिया । कदम उठा तो लिया, परन्तु आगे बढ़ने की हिम्मत न हुई। सामने के मरूस्थल से डर लग रहा था कि रेत एकदम खतम हो गई और वह अथाह नीले समुद्र में गोते खाने लगी । सहगल ने उसे बचाया और आलिंगन बद्ध करके उसके सूखे रस रहित ओठों के चुंबन ले डाले।

चार वर्ष पश्चात नलिनी अपने नामर्द पति को और सहगल अपने झूठे साम्यवाद को बहुत पीछे छोड़ कर लाहौर की प्रेम नगरी में सिधारे ।

स्वागतम्



किसी की हंसी किसी का रोना

भल्ला की छोटी बहिन सावित्री के साथ कालेज में पढ़ती थी—'क्यों गार्डन' के चार चक्कर लगाने से ही पता मिल गया। एक दिन जगदीश ने मौका देख कर बहिन को 'पिकनिक' करने की सलाह दी।

'बहुत अच्छा है। कौन कौन चलेगा',

'मेरा विचार दो चार दोस्तों को बुलाने का है। राजा साहब और अमृत तो होंगे ही। नलिनी और सहगल भी अवश्य आवेंगे। हां। गाने बजाने का ख्याल है। केदार, बलवंत और मिर्जा खुर्शीद को बुला लूंगा। पर तबला कौन बजावेगा।'

'मास्टर को ले चलो।'

'खूब याद दिलाई। उन्हें तो भूल ही गया था।'

मास्टर फत्तो राज भल्ला को नाच गाना सिखाते थे। पहले उनकी शागिर्दी में थीं, हीरा मंडी की रंडियां। परन्तु अब लाहौर के शरीफ घराने की लड़कियां भारतवर्ष की प्राचीन कला की पुजारिन बन रही हैं। इसलिए अब मास्टर फत्तो की पहुँच बड़े बड़े घरों तक हो गई है। सब उनकी कला की प्रशंसा करते हैं। संगत का फल होता है।

'तुम किसको बुलाओगी', जगदीश ने पूछा।

'मैं', जरा सोच में पड़ गई।

'किसी नक्‍ चढ़ी को मत बुलाना, वरना, सब रंग में भंग कर देगी।'

'सरला को बुलाऊं, वह तो आजकल रेडियो पर गा रही है।'

'जरूर, दो चार और...'

'मोहिनी।'

'कौनसी मोहिनी',

'वह मनमोहन वाली मोहिनी जो उस दिन केदार की 'ब्रिज पार्टनर' थी।'

'पर 'कार्डस्' खेलने का समय तो नहीं होगा।'

'न सही। पर वह तो हर एक बात के लिए 'गेम' है। बहुत खुश मिजाज है।'

'मिर्जा खुर्शीद के लिए भी पार्टनर चाहिए।'

'सुरैया, उसको तो भूल ही गई।'

'राजा, सहगल कह रहा था कि उसकी एक मित्र कालेज में तुम्हारे साथ...'

'कौन,'

जगदीश ने कुछ सोचते हुए कहा, 'उसका नाम...नाम...काग...सावित्री काग।'

'काग नहीं काक होगा। वह मेरी क्लास में है।'

'वह 'डे सकालर' है। पर आ जरूर जायगी। थोड़े दिन हुए उसे भारत नृत्य में प्रथम पुरस्कार मिला था। बंगलौर जा रही है।'

'बंगलौर,' जगदीश के मुंह से निकल गया।

'वहां हिन्दुस्तान के प्रसिद्ध 'डान्सर' राम गोपाल ने लड़कियों के नाचने का स्कूल खोला है।'

जगदीश ने निराशा पूर्ण ठंढ़ी आह ली।

'सहगल साहब क्यों नहीं......'

'नहीं नहीं तुम बुलाना, शायद उनके बुलाने से न आवे।'

अगले रविवार को पिकनिक थी। दो मोटरों में पार्टी सवेरे ही लाहौर से चल कर दोपहर से पहले व्यास नदी के किनारे पहुँच गई। सिर्फ राजा साहब और अमृत नहीं पहुँचे। नदी के किनारे एक बड़ा पेड़ था। उसकी छाया में दो बड़ी दरियां बिछायीं गईं। उन पर श्वेत चादरें। पार्टी के सब सदस्य एक एक करके गाने बजाने के सब साज सामान मोटर से ले आए और किनारे पर सजा कर रख दिये।

कुछ कुछ गर्मी हो रही थी। सबने नदी में नहाने के लिए 'स्विम्सिंग कौस्टमस' पहन लीं। और गर्म गर्म रेत पर से दौड़ कर नदी में कूदना शुरू कर दिया। सावित्री ने शरारत से राज की तरफ पानी में जोर से हाथ मार पानी की दीवार सी उठाई। उसके पीछे राज गायब हो गई।

'आपने मुझे पहचाना नहीं।'

'खूब अच्छी तरह, आप एक हाथ में बड़ा बेग......

'बहुत अच्छी याददाश्त है, आपकी।'

सावित्री ने कुछ नजाकत से मुस्कराया, 'उसके बाद आप फिर नहीं आये।'

'आता, पर...' किसी ने जोर से कहा : 'सब इधर इकट्ठे हो जाओ, एक खेल खेलेंगे।'

सब इकट्ठा हो गए।

'दो दो टोलियां बना लो। जगदीश तुम उनके साथ—सावित्री की तरफ इशारा करके। मिरजा और मिस सुरैया, सरला जी और मै एक तरफ—बाकी सब दूसरी तरफ।

सब दो टोलियों में बंट गये।

'करना क्या है,' सहगल ने पूछा।

'हर एक घोड़ा अपने कंधों पर सवारी को चढ़ाएगा।' कुछ लड़कियों ने चों चों में में की पर नलिनी के उदाहरण को देख उन्होंने भी नखरा छोड़ दिया। जगदीश ने सावित्री को अपने कंधों पर चढ़ा लिया। कितना कीमती बोझ था, जिसे वह हमेशा उठाए रखना चाहता था।

'सब थोड़े गहरे पानी में आ जाओ' मिरजा ने कहा।

'सवारियां एक दूसरे को गिराने की कोशिश करेंगी, परन्तु कोई घोड़ा मदद नहीं करेगा।'

खूब दंगल हुआ। किसी के हाथ में किसी के बाल आ गये। किसी के हाथ में चोटी। जिसके हाथ में जो आया वही पकड़ कर खींचा। कोई चिल्ला रही थी, कोई हंस रहा था, कोई पानी के छपाके के साथ गिर जाती और उसके ऊपर उसका सवार। खूब हुल्लड़ था। एक दफा सावित्री गिरने लगी तो जगदीश ने लपक कर पकड़ना चाहा। अकस्मात दोनों की छातियां एक दूसरे से मिल गईं और भल्ला

ने जान बूझ कर थोड़ा सा बाहो में दबा लिया । हाय री मुहब्बत !

दोपहर का भोजन करने के बाद सबने थोड़ा थोड़ा आराम किया । जिनको नींद नहीं आई वे एक दूसरे के कानों में मीठी मीठी बातें करते रहे । दुपहर के बाद पेड़ की आड़ों में, छुपा छुपव्वल खेला गया ।

शाम हो रही थी छिपते हुए सूर्य की सुनहरी किरणों का प्रतिविम्ब व्यास के शांत शीतल जल पर पड़ रहा था । बीयर की बोतलें खुल गई और उनमें से फेन इस तरह से बाहर निकलने लगी जिस तरह टोली का सुमार । लड़कियों के लिए 'काकटेल' और 'लिमलेट' बनाए गए । कई 'जोड़े नंगे पांव नदी तीर पर गीली रेत में घूम रहे थे । सबसे दूर सहगल और नलिनी ।

सूर्यास्त होते ही नाच गाने का सामान तैयार हो गया । मास्टर ने तबले को ठोक कर ताल मिलाई । केदार ने सारंगी की लय मिलाई । सुरैया ने कथा कली नृत्य और सरला ने 'मेरा सलाम ले जा' गाया । महफिल गर्म थी । टपकते टपकते गाने । नलिनी और सहगल का 'डौट' (जोड़) था ।

"क्यों गई सी नी तू क्यों गई सी,
चौकोदारां दे मुहल्ले नी तू क्यों गई सी ।"

नलिनी ने मीठी पंजाबी लय में हाथ छुडाते हुए कहा :

"मैं यों गई सी के मैं यों गई सी,
तेरे दुपट्टे दी रंगाई में देन गई सी ।"

खूब तालियां बजीं। दूर से मोटर का हार्न सुन कर भल्ला ने कहा 'राजा साहब आ गये।'

उन्होंने हाथ मलते हुए जगदीश से कहा मुआफ करना। मेरे दो मेहमान आ गए थे। मैं उनको साथ ले लाया हूँ। 'मट (मिलम) मिस्टर एंड मिसेस वालिया आ० सी० ई०।'

भल्ला ने सब 'गेस्टस्' (मेहमान) का इंट्रोडक्शन' (परिचय) कराया। सिर्फ वहां न थी सरला। शराब फिर चलने लगी। मिसेस वालिया ने चमकती हुई 'कोकटेल' का एक गिलास अपने लिए और दूसरा अमृत के लिए भरा। पर उसने सिर हिला दिया। यह देख राजा साहब ने जबर्दस्ती उसके हाथ में जामें शराब पकड़ा दिया।

पूर्णिमा की चांदनी रात थी। सब अपनी अपनी जोड़ी बना नदी के किनारे चहल कदमी करने लगे। सहगल और नलिनी फिर दूर एक तरफ को निकल गये। शराब का नशा था। बगल में साकी। चारो तरफ खामोशी और एकांत। दोनों ने एक दूसरे को छाती से लगा लिया। कस कर दबाया और दोनों के होंठ एक दूसरे से चिपक गए। इतने में वालिया और राजा जी उधर से निकले और उस रोमांक प्रेम मिलन को देख कर खांसते हुए पास से निकल गए।

मौका देख वालिया ने राजा साहब से नीली साड़ी की तरफ संकेत करते हुए पूछा 'वह कौन है'

'मिसेस नलिनी गोहा।'

'आप हैं।'

'आप जानते हैं' राजा जी ने मक्कारी से मुस्कराते हुए पूछा ।

'आप का नाम सुना है, पर गोहा साहब को अच्छी तरह जानता हूँ ।'

राजा जी ने फिर मुस्करा दिया ।

'और वह कौन है'

'सहगल, उनके पुराने यार'

'क्या जमाना है,' बड़े विचार से वालिया साहब ने कहा ।

इतने में नदी से छपाक की आवाज आई । सबने चारो ओर देखा । सरला नहीं दिखाई दी । सफेद तैरती हुई चीज को देख कर मिर्जा साहब ने पानी में छलांग लगाई और सरला को बाहर निकाल लाए । वालिया साहब के मुंह पर हवाईयां उड़ रही थीं ।

उनकी अंग्रेज बीवी ने पूछा 'इसे क्या हुआ',

उन्होंने मुंह मोड़ते हुए कहा 'मैं नहीं जानता'



फैसला

सारे देश में एक नवीनता सी आ रही थी। सब ऐसा अनुभव कर रहे थे मानो उनकी वर्षों से बंधी हुई जंजीर कट रही हों। प्रत्येक प्रान्त में हिन्दुस्तानी मंत्री मंडल बन रहा था और सबकी आंखें उनपर अपेक्षित दृष्टि से लगी हुई थीं। प्रत्येक व्यक्ति आशान्वित था। सब को यही आशा थी कि शक्ति हाथ में आते हमारी उन्नति का द्वार खुल जायगा। देश में कोई बेकार नहीं रहेगा। भूखा नहीं रहेगा। वे सीधे सादे ग्रामीण देहाती क्या जानते थे कि वचन देना एक बात है और उसे पूर्ण करना दूसरी।

शासन की बागडोर हाथ में आते ही वे अपने शत्रुओं के गले काटने में व्यस्त हो गये, कहीं पर मजदूरों को भड़काया गया और बहुतों के गले पर छुरी चली। लाहौर के 'मौंकी हाउस' ने व्यापार कानून पास कर बनियों को लताड़ना चाहा। इस कानून की आड़ में लायक और विश्वासी अफसरों ने बनियों को रगड़ा। धन निचोड़ कर अपनी जेब में रखा। गरीब किसान जहां थे वहीं अपनी बेवकूफी पर रोते हुए 'मारक टाईम' करते रहे।

बनिये इतनी जल्दी हार मानने वाले नहीं थे। वे पैसे का व्यापार करते थे। इसबार उन्होंने सिर दांव पर लगा दिया। 'सिर जाय तो जाय पर पैसा कभी न जाय'। पैसे की आंच से

उन्होंने कई अफसरों को तो पिघला लिया पर 'झंग मघिया' के थानेदार साहब के सामने उनकी एक न चली। अब सालों को कांजी हाउस में बन्द कर दिया। छोटे से गांव की शांति खुशी और भाईचारा धूल में मिल गया। जो कल तक एक दूसरे के साथ मिलकर खाते थे, आज एक दूसरे का सिर फोड़ने को तैयार हो गये। एक दिन गजब हो गया। गांव में एक बड़ी मसजिद थी जुमे के दिन वहां सूअर का सिर पाया गया। हिन्दुओं के सिवाय यह किसकी शरारत हो सकती थी। इसी बात पर हिन्दू मुस्लिम फसाद शुरू हो गया। थानेदार ने बड़े बड़े आसामियों को पहले हिरासत में लिया। उनको डराया, धमकाया और खूब मोटी मोटी रकमें वसूल कर उन्हें छोड़ दिया पहले दिन पांच हजार नकद हाथ लगे। उसी दिन खुफिया के हाथ घर भिजवा दिये।

रात को पिराचा साहब सोने जा रहे थे कि सामने से काबुल खां ने आकर पुकारा, 'थानेदार साहब हैं।'

'कौन है',

अन्दर आकर काबुल खां ने सलाम किया, थानेदार ने गुस्से से देखकर कहा, 'क्या चाहिए।'

'मेरा हिस्सा।'

'किस बात का हिस्सा। खून के मुकद्दमे से बरी कर दिया काफी नहीं ?'

'मुकद्दमे को चला कर तो आप खुद फंस जाते। सब दुनियां जानती थी कि लाभ सिंह पुलिस की मार से मरा था। उसमें मेरा और मेघे का कोई हाथ नहीं था।'

'अब क्या चाहते हो।'

'आधो आध।'

दो हजार निकाल कर पिराचा ने देते हुए कहा, 'कल मंदिर में गाय का सिर होना चाहिए, और ग्यारह बजे तुम मुझे पीपल के पेड़ के सामने मिलना।'

काबुल खां सलाम करके बाहर चला गया। रात के अंधेरे में अंधे, मज़हब की खातिर, एक दूसरे के पेट में छुरियां भोंकते रहे।

दूसरे दिन थानेदार साहब पुलिस की टोली के साथ गश्त कर रहे थे। किसी ने उन पर पत्थर मारा। सामने से एक आदमी किसी की पीठ में छुरा घोंप कर भागा उन्होंने सिपाहियों को गोली चलाने का हुक्म दिया। अपना पिस्तौल निकाल उन्होंने सिपाहियों को गोली चलाने का हुक्म दिया। अपना पिस्तौल निकाल उन्होंने एक फायर किया। पीपल के पेड़ के पास खड़ा काबुल खां गिर पड़ा। थानेदार साहब ने उसकी जेब से दो हजार के नोट निकाल अपनी जेब के हवाले किए।

दो तीन दिन में २० कतल हो गए। बाहर से एक और पुलिस का दस्ता आ गया। बड़े अफसर ने आकर घटना की जांच की। गांव वाले लोगों ने थानेदार की रिपोर्ट की, पर कुछ साबित न कर सके। बड़े साहब ने यही अच्छा समझा कि पिराचो साहब को मुल्तवी कर दिया जाय। उन्होंने बीस हजार जेब में रखे, इस्तीफा दे दिया।

दो चार महीने ही उन्हें बेकार रहना पड़ा। १९३९ में

जर्मनी से लड़ाई का एलान हो गया। और अंग्रेजी सरकार ने हिन्दुस्तानियों को फौज में अफसर भरती करना शुरू कर दिया। पिराचा साहब 'सार्टीफिकटों' का पुलिंदा लेकर जा धमके। जब चुनाव कमेटी ने पुलिस से इस्तीफा देने का कारण पूछा तो उन्होंने फौरन जवाब दिया, 'मैं सिपाही हूं। जब बादशाह सलामत की हकूमत खतरे में हो तो मैं कैसे चैन से बैठ सकता हूं। लड़ाई में भाग लेने के लिए मैंने इस्तिफा िया है।'

सैन्य शिक्षा लेकर कैपटन असलम खां धारवार में 'सप्लाई आफिसर' नियुक्त हो गये। यहां उनका काम था गांव वालों से चीजें खरीद कर फौज को 'सप्लाई' करें। उन्हें और क्या चाहिए।

पंजावी जहां भी हों दूसरे पंजाबी को जरूर खोज निकालते हैं। धारवार में छोटा सा क्लब था। वहां जिले के सब अफसर शाम को इकट्ठा होते थे। वहां पर उनकी मुलाकात रीटा से हुई और दिन प्रतिदिन बढ़ती गई।

गुरुशरण दास वालिया धारवार के कलक्टर थे। दस से लेकर शाम के सात बजे तक दफ्तर में कागज पीटते और इधर मेम साहब पिराचा साहब के साथ गपशप लगा कभी काफी और कभी चाय पीती। असलम के दफ्तर में सिर्फ दो घंटे का काम था। चाहे करे चाहे न करे। रीटा को डान्स का बहुत शौक था। इसीलिये असलम ने जल्दी जल्दी बाल रूम डान्स सीखा और रीटा को क्लब में नचाने ले जाने लगा। क्लब में हफ्ते में दो बार डान्स होता था। पर थके

मांदे वालिया साहब में इतनी हिम्मत न थी कि फर्श पर घूम घूम कर कमर हिलावें और टांगे मारें। रीटा को पिराचा साहब के ही सुपुर्द कर देते।

दो चार दिन से प्रोफेसर गोहा उनके यहां ठहरे हुए थे। वालिया के पुराने शिक्षक थे और कालेज में किसी विषय पर व्याख्यान देने आए थे। आते ही वालिया ने पूछा, 'मिसेस गुहा नहीं आई'

'नहीं, कल उनका तार आया था कि गर्मी के कारण वह पहाड़ी जा रही हैं।'

'लाहौर के पहाड़।'

'समझा नहीं आप का मतलब।'

'यही, कुछ दिन हुए लाहौर में उनसे मुलाकात हुई थी।'

प्रोफेसर साहब को काटो तो जिस्म में खून नहीं। वालिया ने नमक मसाला मिलाते हुए गोहा साहब को परोक्ष रूप से बताया कि उन्हें नलिमी की सब चालों का पता है। ठंढी सांस भरते हुए कहा 'क्या जमाना है' गुरूशरण ने सहानुभूति प्रकट करते हुए कहा 'आजकल की लड़कियों को लम्बी ढील नहीं देनी चाहिए, खुद भी फंसती है और दूसरे का भी गला काट देती हैं। उन्हें नाम की तो जरा भी परवाह नहीं।

प्रोफेसर साहब खामोश थे।

'आज क्लब में डान्स है, चलिएगा।'

'खास शौक तो नहीं, पर जब आप कहते हैं तो अवश्य चलूंगा।

डान्स हाल में चार की टेबिल रिजर्व करा दी गई । रीटा के अगल बगल में प्रोफेसर और पिराचा साहब और दूर बालिया साहब। रीटा ने 'लिम्बलेट' का गिलास पीते हुए प्रोफेसर साहब को अपनी और वालिया के रोमांस की कथा सुना दी । खाने के बाद रीटा ने वालिया से 'डान्स' के लिए पूछा । उन्होंने सिर हिला दिया । इस पर रीटा को गुस्सा चढ़ गया । काला आदमी उसकी इतनी 'इनसल्ट (हतक) करे । उसने गुस्से से कहा 'यू आर ए वेट' । सबज सुना और वह कंधे मारती हुई पिराचा के आगे आगे 'डान्स फ्लोर' पर चली गई । बेचारे बालिया साहब दो सेकिंड तक मुंह खोले ताकते रहे ।

रीटा और पिरोचा खूब घुल घुल कर एक दूसरे से बातें करते और लगलग कर डान्स करते । इस प्रकार वे आनन्द पूर्वक डान्स कर रहे थे और वालिया साहिब दिल में जल भुन रहे थे ।

पिराचा ने रीटा से पूछा 'आप गर्मियों में कहां जा रही हैं'

'मुझे तो इस जगह से नफरत है।' रीटा ने गुस्से से कहा।

'बहुत गर्मी है'

'न मालूम मैंने उस खूसट से शादी क्यों की।'

'चलिए मसूरी चलें ।'

'तुम चलोगे'

'आप बुलाएं और मैं न आऊं'

रीटा तो अगले ही महीने मसूरी चली गई। पर असलम

को मसूरी जाने से पहले घर जाना पड़ा। वालिद सख्त बीमार थे और जायदाद का सवाल था। बाप ने बेटे की पीठ पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा, 'बेटा अब तो तुम लपटेन बन गये। अब तो शादी कर लो।'

'नहीं वालिद साहब, मै कप्तान हूं।'

'कुल, कप्तान, हमारे बाले नाउओं का मुँडा भी कप्तान है'

असलम ने शर्म से सिर झुका लिया।

'बेटा मेरी आंखों के सामने शादी कर लो। इस घड़ी के लिए ही मैं जी रहा था। गोहर इतने दिन से तुम्हारा इंतजार कर रही है।'

'मैं उसके साथ शादी नहीं कर सकता।'

बुड्ढा बिस्तरे से थोड़ा सा उठा, उसकी आंख में पुराना जोश कांप रहा था 'वह क्यों, मैं पूछ सकता हूं।'

'वह जाहिल है, और मैं कप्तान हूँ।'

'कप्तान बन गया। अपने आपको खुदा समझने लगा। तुम्हारे जैसे हजारों कप्तान लड़ाई के बाद ठोकरें खाते फिरेंगे। कोई बात भी नहीं पूछेगा। तुम्हें तो अब मेम साहब चाहिए।'

'बड़े लोगों से मिलना पड़ता है। बे पढ़ी औरत तो नाक कटा देगी।'

'तुम्हारी नाक पर धब्बा न लगे। मेरी नाक चाहे कट जाय। मुझे तुम्हारी मेम की जरूरत नहीं। मुझे तो शरीफ लड़की चाहिए जो घर गृहस्थी का काम अच्छी तरह कर सके

और सबको सुखी रख सके। गोहरी मेरी लड़की है और उसके साथ तुम्हें शादी करनी पड़ेगी।'

'अब्बाजान, शादी मैं कर रहा हूं कि आप'।

'शाबस, बेटा, तुझसे यही उम्मीद न थी। खूब चार चांद लगाए हैं मेरे नाम को। हरामजादे हट जा दूर हो मेरी आंखों के सामने से। तेरी नापाक सूरत मैं नहीं देखना चाहता। तुझे तेरी मेम साहब की जूतियां मुबारक हों। मुझे मेरी बच्ची ही अच्छी है। जा हट, पाजी। मेरी आंखों के सामने से दूर हो जा। तू मेरी औलाद ही नहीं। मेरी मौत के बाद मेरी जायदाद से तुझे एक फूटी कौड़ी भी नहीं मिलेगी जा। दूर......'

असलम सिर लटकाए हुए बाहर चला गया।



भेड़ियों के भेद

मसूरी का सीजन मार्च से ही शुरू हो जाता है और बहुत से लाहौरिए जिनके पास पैसा अधिक और काम कम है, होस्टलों के खुलते ही वहां पहुँच जाते हैं। इस वर्ष तो वहां मकान मिलने की उम्मीद न थी और होटल भी सब रुके हुए थे। लड़ाई का जमाना था। हजारों ठेकेदार मौके की नाजुक हालत को देख कर खूब रुपया बना रहे थे—सैकड़ों लाखों। उधर हजारों वीर सिपाही इस धन की रक्षा के लिए अपनी गर्दन कटवा रहे थे। वे जान दे रहे थे और ठेकेदार धौंस दिखा रहे थे—हम लड़ाई में सरकार की मदद कर अपनी जेब भर रहे हैं। कई टुटपूंजिए तो इतने अमीर हो चुके थे कि रंडी और शराब में रुपया उड़ाने के बाद भी उन्हें यह पता नहीं था कि बेइमानी से जोड़े हुए धन को किस तरह खर्च करें।

मेरठ वाले खां साहब बशीर खां को ही देखो, लड़ाई के पहले एक कोठी थी, उसे रहन रख कर सरकारी ठेका लिया। आज यह हाल है कि शहर में चार कोठियां, बैंक में दस बीस लाख रुपया और बम्बई में घोड़े दौड़ते हैं। यह सब चार साल में। या तो सरकार अंधी है या हम हैं जो देखते हुए नहीं देखते।

जिसे कभी जगह और छुट्टी मिली, मसूरी पहुँच गया। वहाँ ऐयाशी के सब समान सुलभ थे। कई नजर बन्द जर्मनों की, अंग्रेज बीबियां मसूरी में गुलछर्रे उड़ा रही थीं। सब होटलों के डान्स हाल खचाखच भरे रहते।

पिराचा साहब रीटा के साथ डान्स कर रहे थे कि उनकी नजर नलिनी और सहगल पर पड़ी। 'डिनर सूट' में उन्होंने सहगल को तो पहचान लिया। पर सहगल को क्या पता था कि खाकी वर्दी वाला गवर्नमेंट का साला उनका लंगोटिया यार असलम है। पता तब लगा, जब डान्स खतम होते ही एक हाथ से रीटा को खींचते हुए उस 'टेबिल' के पास पहुँचे, और दूसरे हाथ से जोर से पीठ पर थपेड़ा मारते हुए कहा 'कहो, बेटा सहगल।'

सहगल साहब उठ कर खड़े हो गये और दोनों 'पार्टियों का एक दूसरे से परिचय कराया। चारो एक टेबिल पर बैठ गए। दोनों स्त्रियां एक दूसरे से बातें करने लगीं और सहगल और पिराचा जोर जोर से हंसते और बार बार हाथ मिलाने लगे। कई वर्ष पश्चात् पुराने मित्र मिले थे। बहुत सी बातें करनी थीं। वे बातों में तल्लीन रहे। रीटा और नलिनी को कोई और नचाने के लिए ले गए।

'भाई राजा साहब कभी मिले,'

'यहीं पर होंगे।'

दोनों ने चारो तरफ नजर दौड़ाई। टेबिलों के बीच से होकर एक खूबसूरत युवती निकल रही थी। सफेद साड़ी पर

सुनहरा काम और कंधों पर काला मखमल का कोट उसके छरहरे पारदर्शी गौर वर्ण की आभा को दूनी कर रहा था। उसे देख सहगल ने कहा : 'थिन्क औफ दि डेविल एंड देयर शी इस।'

'वह कौन है।'

'मिसेस चंचल सिंह।' पिराचा साहब वहीं बैठे रहे। खूब हाथ मारा है। 'वह साथ में कौन है।'

'कैप्टिन सोमवार। महाराजा 'दो बुर्जी' के छोटे भाई।'

सोमवार ने सोने का सिगरेट केस खोल कर अमृत के सामने पेश किया। उसने अब्दुल्लाह की 'कोर्क सिगरेट' निकाल होठों से लगाई। सोमबार ने 'लाइटर' से सिगरेट जला केस जेब में डाला और अपनी सिगरेट को जला अमृत की ओर किया। दोनों की सिगरेटें मिल गईं, और आपस की लगी आग में जलने लगी।

'राजा साहब कहां हैं'।'

'यहीं कहीं, दीवान साहब के साथ...'

सोमवार बेरे को बुलाने गया। अमृत को अकेली देख पिराचा साहब उसकी तरफ झपटे और एक ही सांस में बता गये कि वह राजा साहब के पुराने दोस्त हैं और उनका नाम है असलम खां पिराचा।

'क्या पीजियेगा' अमृत ने पूछा।

'कुछ भी हो, आप क्या लेंगी।'

बेयरा आ गया। दो तीन ह्विस्की के ग्लास ले आया

दो में सोडा भर दिया गया और तीसरा सोमवार की राह देखता रहा। उस डान्स के बाद सब अमृत के टेविल के पास एकत्र हो गये। वहां पर पहले ही बड़ी पार्टी का इंतजाम था। सबसे परिचय करा दिया गया। थोड़ी देर में सब घुल मिल गये जैसे बहुत पुरानी जान पहचान हो।

अमृत के साथ डान्स करते हुए असलम ने कहा, 'आप तो बहुत अच्छा डान्स करती हैं।'

'मुझे तो डान्स से घृणा है' अमृत ने कुंठित सी होकर कहा।

'नफरत'

'मुझे सख्त नफरत है।'

'तो आप……'

'यही तो मैं जानना चाहती हूँ।' यह कह बिना डान्स खतम किये अमृत अपनी टेबिल पर बैठ गई और किसी गहरे सोच में पड़ गई। सिगरेट बुझा कर 'एस्ट्रे' में डाल दिया और 'व्हिस्की का भरा गिलास उसी तरह मेज पर पड़ा रहा। असलम रीटा की तरफ देखने लगा। वह खूब मटक मटक कर सोमवार के साथ नाच रही थी। और दोनों मुस्करा रहे थे।

प्रिंस तुम बहुत अच्छे डान्सर हो।'

'थैंक यू' सोमवार ने कहा।

'कल मेरे यहां काफी के लिए आइये।'

'थक यू बैरी मच। कहां किस समय।'

'मेरा सूट नं ३० है, कोई ग्यारह बजे के बाद आना । तब मुश्किल से उठूंगी।'

बैंड रुक गया, और सब अपनी अपनी टेबिलों की तरफ गये। इतने में राजा साहब भी बन्द गले का कोट, सफेद जोधपुरी ब्रिचेस पहने, एक बगल में, खिल खिलाती, फुदकती हुई एक मामूली एंग्लो इंडियन छोकरी और दूसरी में मोटे दीवान साहब को दबाए हुए आए। सब पुराने दोस्त गले मिले। राजा साहब उस एंग्लो इंडियन छोकरी के साथ गाल से गाल मिला कर नाचने लगे। अमृत ने व्हिस्की का गिलास उठा कर एक ही घूंट में पी लिया। असलम ने डान्स करते हुए नलिनी से कहा 'मेरी समझ में कुछ नहीं आता। अमृत इतनी खूबसूरत है और राजा साहब उन आवारा लड़कियों के पीछे...'

'संगत का फल है, बेचारी अमृत ने तो उसके लिये सब कुछ किया। सिगरेट पी, शराब पीना सीखा, पर एक न चला। अब वह अपनी ही लगाई आग में जल रही है।'

'क्या जिन्दगी है' बड़ी (सेम्पथी) से असलम ने कहा।

मैनेजर ने आकर नलिनी के हाथ में एक तार दिया। वह डान्स हाल में से बाहर चली गई और तार खोल कर पढ़ी। उसके चेहरे पर सफेदी छा गई और आंखों में आंसू छलकने लगे। असलम के बार बार पूछने पर भी उसने कुछ नहीं बताया। पार्टी छोड़ कर चली गई।

सुबह २ बजे पार्टी खतम हुई। अभी असलम कपड़े

बदल कर पलंग पर लेटा ही था कि पास के कमरे से रोने की आवाज आई और फिर किसी ने उसका दर्वाजा खड़खड़ाया।

'कौन है' उसने पलंग से उठते हुए कहा।

'मैं……'

आवाज पहचान कर पिराचा साहब दर्वाजे की तरफ गए और दर्वाजा खोला। सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति अमृत दर्वाजे में खड़ी थी। बाल बिखरे हुए थे और आंखों से आंसू की धारा बह रही थी। उसने धीरे से कहा।

'क्या आप मेरी थोड़ी सी मदद कर सकते हैं।'

'क्या।' घबड़ाते हुए असलम ने पूछा।

'मैं लाहौर जाना चाहती हूँ, मुझे किराया……'

असलम सिरहाने के नीचे से कुछ रुपये उठा लाया और अमृत के हाथ में देते हुए कहा 'इस वक्त तो मेरे पास पचास रुपया है।

अमृत धन्यवाद देती हुई बरामदे के अंधेरे में गायब हो गई और पिराचा साहब पलंग पर लेट कर बहुत देर तक इस रहस्य को सुलझाने की कोशिश करते रहे। सोचते सोचते नींद आ गई।

दूसरे दिन माल पर सहगल से मुलाकात हुई तो उसने सब कहानी सुनाते हुए कहा, 'मेरे ख्याल में तो वह तंग आकर घर……'

'तुम्हें मालूम नहीं।' सहगल ने पूछा,

'क्या।'

'राजा साहब का दिवाला निकल चुका है।'

'अब समझा।'

'खूब फांसा।'

'और तुम कौन कम हो। सहगल, यह नलिनी फिर कहां से फांस ली।'

'अभी पूरी फंसी नहीं, कल तक तो सब मामला ठीक था। पर रात को गुरूशरण का तार आ गया कि प्रोफेसर गुहा ने आत्मघात कर लिया। तब से ही रो रही है।'

'ये औरतें भी अजब बला हैं। पहले जीते को मारती हैं। जब मर जाता है तब रोती हैं। अब तो तलाक की आवश्यकता नहीं होगी।'

'तुम अपनी बताओ।'

'जिस मुश्किल में कल तक तुम थे, उसीमें मैं भी फंसा हूँ। पर इतना बेवकूफ नहीं।'

'कौन सा शिकार फांसा है।'

'मिस रीटा।'

'वाह भाई, खूब मुलायम रोटी है, दोनों तरफ चुपड़ी हुई।'

'देख लो।'

'लाहौरियों की शान है।' दोनों बड़े जोर से खिलाखिला कर हंसने लगे। पास से अमृत, राजा साहब के साथ रिक्शे में बैठी हुई निकल गई। और पिराचा साहब को पहचाना भी नहीं।



'परिवर्तन।'

'औरत पति के लिए सब कुछ कर सकती है।'

'बने को बिगाड़ सकती है। बिगड़े को बना नहीं सकती।'

'वह बिगाड़ने वाले भी आ रहे हैं।' सामने से दीवान साहब आ रहे थे।

'मेरे ५० पर पानी फिर गया। जरा फिक्र से असलम ने कहा :

'इब्तिदाए इश्क है, रोता है क्या,
आगे आगे देखिये होता है क्या।'

'क्या होगा, रुपये तो मिलने से रहे।'

'वह दिन भूल गए जब राजा साहब के सैकड़ों हड़प किया करते थे।'

इतने में दीवान साहब भी आ पहुँचे। उनका रास्ता रोकते हुए सहगल ने कहा 'यह तूफान मेल किधर जा रहा है।'

'लाहौर, क्यों, इतनी जल्दी क्या है, जरा हमें भी बताते जाओ, क्या काम है।'

'जगदीश भल्ला की शादी...याने···बर्बादी है, उसमें आग लगाने जा रहा हूं।'

'शाबाश, उन्हें आपकी जरूरत क्यों पड़ी।'

'सिविल मैरेज में 'विटनस' (गवाही) कौन देगा।'

'मुसीबत में सब को दीवान साहब याद आते हैं। चार तार भेजे हैं। तब जा रहा हूं।'

'पर बात क्या हुई, हमें भी तो बताओ।'

'बात जरा सी थी, जज साहब को तो शराब चाहिए पर, श्रीमती काक तो बहुत सख्त हैं। वह सावित्री की शादी कश्मीरी पंडित से करना चाहती थी।'

'काश्मीरी तो जाति से बाहर शादी नहीं करते।'

'पर श्रीमती जी को क्या पता था कि कालेज की दीवारों के पीछे छिप कर छोटी रानी साहबा क्या रंग उड़ा रही हैं।

'भल्ले ने भी खूब रास्ता ढूंढा। अपनी सगी बहिन को ही बिचोला बनाया। इसी के द्वारा, पहले एक एक सफे की फिर दस सफेकी चिट्ठियां रोज जाने लगीं।'

'दस सफे में वह लिखता क्या था।'

'यही तो मैं जानना चाहता हूं। नमस्ते, मुआफ करना देर हो रही है।'

हाथ पकड़ते हुए असलम ने कहा, 'पूरी कहानी सुना कर जाओ।'

'भाई, क्या होना था। वही जो तुम सब कर रहे हो। वे छिप कर एक दूसरे से मिलने लगे, प्रेम की ज्वाला बढ़ती गई। और सावित्री रोज कालेज की क्लास से खिसकने लगी, जिसे किसी चीज का चस्का पड़ जाय वह भला कभी उसे छोड़ सकता है। एक दिन प्रिंसिपल साहब को पता लग गया......'

'अब।'

'जब मियां बीबी राजी तो क्या करेगा काजी।'

'काजी साहब सलाम, विश यू गुड लक', (तुम्हारी भलाई की इच्छा रखता हूं)। दोनों दोस्तों ने जोर से ऊपर हाथ हिलाते हुए कहा।

दीवान साहब खाई की गहराई में उतर गए।

चार दिन की जिन्दगानी फिर अन्धेरी रात है।

सरला को अस्पताल गए कई महीने व्यतीत हो चुके थे। उसके दिमाग में जो चोट लगी थी उसमें कोई लाभ नहीं हुआ। वह हमेशा चुप चाप रहती। किसी को न पहचानती। किसी से बात न करती। क्या उमर थी बेचारी की, जब मुसीबत ने आ घेरा।

कुछ समय पूर्व वह एक सुन्दर, नाजुक कली थी, शोख़, अलबेली, अपने यौवन के उभार की राह देख रही थी। अचानक उनकी आशाएं निराशा में परिणत हो गई, यौवन पुष्प विकसित होने से पूर्व ही तुषारपात से मुर्झा गया।

बालिया ने अपने विलायत से लौट आने का समाचार सरला को नहीं दिया, परन्तु प्रोफेसर गोहा से उसे दूसरे ही दिन सब हाल मालूम हो गया। पिकनिक के दिन उन दोनों को देख कर वह प्रतिहिंसा और विश्वासघात से जल भुन गई। उस विदेशी ने अपना गोरा गोरा रूप दिखा कर उसके यौवन को नष्ट प्राय कर दिया। वह उस बिल्ली कीं गर्दन मरोड़ कर अपनी प्रतिहिंसा की आग बुझाना चाहती थी परन्तु खेद कि उसकी कोमल उंगलियों में दूसरे की जान लेने की शक्ति नहीं थी।

वह सोच रही थी कि इधर मैं थी, जो इतने दिनों तक इनके वापिस आने की आशा में प्राण धारण कर रही थी और उधर यह रीटा, रीटा को भारत से कोई सम्बन्ध नहीं, कोई प्यार नहीं, कोई लगाव नहीं। उसे इस देश की गुलामी की जंजीर का अनुभव नहीं। उन्हें तोड़ने में भाग लेना तो कहां, वरना उन्हें और भी मजबूत बनाने के पक्ष में थीं। उसके ही देश वालों ने हमें बन्धन में बांध रखा है। उधर सरला ने वियोग के इतने दिन सहन करने के पश्चात् कुछ सुख की आशा की थी। वह भी इस विदेशी छोकरी ने छीन लिया, सिर्फ इसलिए की उसका रंग गोरा है। इसी रंग के जादू से उसने वालिया के कमजोर हृदय पर अधिकार पा लिया। वह प्रेम नहीं करती। उसके देश की औरतें प्रेम का अर्थ ही नहीं जानतीं। उनके प्रेम की परिभाषा है, धन, पदवी और इन्द्रिय सुख। जब यह उन्हें अपने देश में नहीं प्राप्त होता, वह विदेशियों से छीन लेती हैं। जहां उन्हें इन तीनों वस्तुतों की प्राप्ति में बाधा पहुँची फौरन उन्होंने दूसरी जगह अपना रूप जाल फैलाना शुरू किया। पाश्चात्य औरतें नहीं जानती की भारतीय नारी के प्रेम का अर्थ है सेवा और आत्मोसर्ग। वह अपने प्रेमी में एकाकार होकर रहती है। अपना स्तित्व अपने प्रेमी के स्तित्व में लीन कर देती है। उसके लिए पति परमेश्वर है, न कि पैसा लूटने की कठपुतली। यह है पाश्चात्य नारी और भारतीय नारी के आदर्शों का अन्तर। रीटा का भी उद्देय वही था जो उसके देश वासी

अन्य स्त्रियों का होना चाहिए। सरला यही सोच सोच कर क्रोध में जल रही थी। उसकी आत्मा रीटा की छलना पर विद्रोह पूर्ण हंसी हंस रही थी। कह रही थी, बदमाश, कपटी, इन्द्रिय लोलुप ....

सरला का मस्तिष्क विचार सागर में गोते खा रहा था। वह उस आकस्मिक मिलन की लहर को नहीं संभाल सकी और उसकी विचार शक्ति और चेतना सदा के लिए उस अथाह सागर में विलीन हो गई जहां से निकलने की कोई आशा न थी।

अब न उसे दुनिया का पता था और न यह कि वह किस अवस्था में है। वह सब कुछ भूल चुकी थी और उसी भूल में वह भूल चुकी थी अपने आप को भी। अब उसके लिए दुख और सुख दोनों अपना स्तित्व खो बैठे। यदि दुख था तो उसकी मां को जिसने अपनी इकलौती संतान को पाल पोस कर बड़ा किया। पढ़ा लिखा कर योग्य बनाया। वालिया से शादी को वह घर की आबादी समझे बैठी थी। वही घर की बर्बादी का कारण निकली। वह सोचा करती, यदि किसी छोटे घर में किसी शरीफ लड़के से शादी कर देती, तो शायद ये दिन देखने को न मिलते। शायद···

वह अपनी बच्ची की बेबसी की हालत देख कर रोती। अपनी क़िस्मत को कोसती और दिल में गुरुशरण को हजारों गालियां निकालती। उसका दिल उसे शाप दे रहा था। अपनी एक मात्र संतान के दुख को देख कर उसका हृदय कह

रहा था कि 'इसे दुखी करने वाला कभी सुखी नहीं हो सकता।'

गुरुशरण सैकड़ों कोस दूर धारवार में बैठा कुछ सोच रहा था। उसकी आत्मा उसे चैन न लेने देती। कई बार उसने अपने आप को दोषी ठहराया। परन्तु उसमें अभी अपनी गलती को मान लेने की शक्ति नहीं आई थी। अभी रीटा के प्यार का खुमार शेष था और वह रीटा से डरता भी था।

बरामदे में बैठे 'लाइमजूस' के गिलास और बिजली के पंखे की हवा से बालिया साहब गर्मी को जीतने का प्रयत्न कर रहे थे। मानसिक या सामयिक सुख चाहे हो परन्तु दिल बहुत बेचैन था। कभी आंखें बन्द कर सोचने लगते कभी आराम कुर्सी पर टांगे पसार ठंडी आहें भरते।

एक दिन वह था, जब प्रोफेसर गोहा को व्याख्यान किया करते थे। आज वह समय आ पहुँचा जब वे स्वयं अपने पर हंस रहे थे। उन्हें किसी पर विश्वास नहीं, रीटा के आचरण पर यकीन नहीं और अपनी आत्मा पर काबू नहीं।

रीटा खुल्लम खुल्ला मसूरी में ऐयाशी कर रही थी, मसूरी के विवाहित कुंवार शराब पिलाने वाले, डान्स कराने वाले, अमीर, बदमाश, उसके गिर्द इस तरह घूम रहे थे जिस तरह लाश के गिर्द गीदड़। आपने अपना नाम मिसेस बालिया से बदल कर मिस रीटा देवी आब तत्ता पानी रख लया था, ताकि उसकी बदमाशी और चरित्र भ्रष्टाता का पता पतिदेव

को न लगे और वे विवेकहीन हो प्रतिमास होटल के बिल का भुगतान किए जायं, पर

सच्चाई छुप नहीं सकती, बनावट के असूलों से ।
खूशबू आ नहीं सकती, कभी कागज के फूलों से ॥

गुरूशरण को रीटा के जीवनक्रम का खुफिया तौर पर सब पता लगता रहा । पर वह क्या कर सकता था । अपने पैर पर खुद कुल्हाड़ा मार चुका था । एक दिन एक रिश्तेदार की लाहौर से चिट्ठी आई, जिसमें सरला की बीमारी का जिक्र था । गुरूशरण ने विचार किया कि अगर रीटा दूसरे पुरुषों के साथ बदमाशी कर सकती है तो मुझे भी सरला से मिलने का पूरा हक है । आखिर वह तो मेरी···

दो चार दिन के बाद वह एक महीने की छुट्टी लेकर लाहौर चल दिए । गाड़ी में बड़ी भीड़ थी । दीवान साहब भी सहारनपुर के स्टेशन पर उनके ही डिब्बे में चढ़ गए । सोने की जगह न थी । दोनों में लाहौर तक बातें होती रहीं । दीवान साहब ने दिल खोल कर मसूरी की बातें सुनाई । वालिया ने रीटा का जिक्र कर दिया और दीवान साहब ने सब पोल खोल कर रख दी । उसे क्या पता था कि श्रीमती रीटा देवी आब तत्तो पानी आप ही की धर्मपत्नी हैं । अगर पता भी चलता, तो उनकी मूर्खता पर थोड़ा सा हंस देते ।

'आप मसूरी के जश्न छोड़ कर लाहौर क्यों जा रहे हैं ।'

'मुसीबत, वरना सीजन में होटल कौन छोड़ सकता है ।'

'आपका होटल है'

'इसी साल खोला है, चांदी की खान है। छोटे से कमरे का भी लोग २५ रुपया रोज देने को तैयार हैं। पर क्या करू''

'ऐसी कौन सी मुसीबत आ पड़ी'

'दोस्त की शादी है।'

'खुशी नहीं'

'जनाब बड़ा झगड़ा है'

'क्या'

'लड़की का बाप राजी है। मां नहीं मानती। लड़का छुटकारा चाहता है, पर लड़की फंस चुकी है।'

'और आप'

'मैं उनकी सिविल मैरेज कराने जा रहा हूं।'

'यह कब से शुरू हुआ'

'आजकल सब लड़कियां सिविल मैरेज कराती हैं; क्योंकि तलाक देने में आसानी होती है। वैसे कौन सा मर्द आसानी से पीछा छोड़ता है।'

'कुछ समझ में नहीं आता।'

'लाहौरियों की बातें, वे ही समझें आप इस झंझट में फंस कर क्या करेंगे।

'बदकिस्मती तो यह है कि मैं भी लाहोरिया हूं।'

'पंजा फेको, यह कह दीवान साहब ने गुरूशरण का हाथ पकड़ कर थोड़ा सा दबाया।'

'खूब मुलाकात हुई। लाहौर जैसा शहर दुनिया में कोई

नहीं। पंजाब हिन्दुस्तान की जान है और लाहौर उसका ताज। आपने हाफिज की नज़म नहीं सुनी। लाहौर :

'यह वह मैखाना है, जिसमें साकियां मए फरोश,
फिर रहे हर तरफ सागर बकफ मीना बदोश।
पीने वाले पे वाये आते हुए जाते हुए,
गुनगुनाते लड़खड़ाते, ठोकरें खाते हुए।

'ठोकरें खाते हुए।' वालिया ने टोका

दीवान ने इस विच्छेद की कोई परवाह नहीं की।

वलवले उठते हैं, बढ़ते हुए चढ़ते हुए,
रद्दे आफातो कला की सेफयां पढ़ते हुए,
आवो गुलमें जिन्दगी, हंगामा आरा है यहां,
मौत भी चाहे, तो जीने का सहारा है यहां।

'काश अगर यह सच होता।' वालिया ने कहा

'सच है। लाहौर में आप जैसा जीवन पसन्द करें, पा सकते हैं।

'दीवान साहब जीवन का सुख किसी स्थान विशेष से सम्बन्धित नहीं है। उसका सम्बन्ध तो सिर्फ उस स्थान के रहने वालों से है। या यों कह लीजिये कि उस शहर के वातावरण से है। हमारे विचार ओछे हो चुके हैं। हम जिसे जीवन सुख समझ बैठे हैं वही बनावटी सुख हमारे घर में घुस हमारी सभ्यता को नष्ट कर रही है। हमारी गुलामी ने हमें यथार्थवादी से नकलची बन्दर बना दिया है। अपनी अच्छी चीज छोड़ कर दूसरों की बुरी चीज अपनाते हैं। कितना उत्तम होता यदि हम अंधे होते।'

'आप समाज सुधारक हैं।'

'जी नहीं मैं किसी को शिक्षा देना नहीं चाहता । फिर लाहौरियों को कौन सिखा सकता है। राम राम।'

'शिक्षा वाको दीजिए, जाको सीख सुहाय,
सीख न दीजे बान्दरा, जो बिजडे का घर ढाय ॥'

'तो आप लाहौर ··'

'मैं अपना घर बसाने जा रहा हूँ।'

'मुबारिक हो ।'

जब लाहौर स्टेशन पर पहुँचे तो बहुत से पुलिस वाले चारों तरफ घूम रहे थे। एक ने उनके डिब्बे की खिड़की में से सिर डालते हुए पूछा, आपके साथ कोई सिख तो नहीं आया ।

'दो आदमी हैं', दोवान साहब ने उत्तर दिया। पुलिस वाला चला गया और दूसरे डिब्बे से चंचल सिंह को उतरते ही पकड़ लिया। 'सरदारजी मेरे साथ चलिए।'

'क्या बात है, जानते हो मैं कौन हूं ।'

'बोस्टल जेल के नाती, राजा साहब।'

गुरुशरण और दीवान साहब दोनों पास आ गये। चंचल ने बड़े गुरूर से कहा :

'देखो यह मुझे मुफ्त में तंग कर रहा है।'

'क्या बात है', गुरुशरण ने जरा रोब से पूछा।

'चलो अपना रास्ता देखो, तुम कौन हो!'

'मैं डिप्टी कमिश्नर हूं,' अब पुलिस के सिपाही की फूंक सरकी। वालिया साहब उसका नम्बर नोट करने लगे थे कि थानेदार साहब आ गए। 'क्या बात है हुजूर।'

'इनको क्यों गिरफ्तार किया जा रहा है।'

'आप का दिवाला निकल चुका है और कल आप मसूरी के होटल में ५०० रु० की जाली चेक देकर आए हैं। २० का जुर्म है।'

'मैं जमानत दूंगा'

'फौजदारी मुकदमे में कोई जमानत नहीं दे सकता।' गुरुशरण अपना सा मुंह लिए राजा साहब की तरफ देखने लगे। 'आप कोई फिक्र न करें, मैं घर पहुँच कर जमानत का बन्दोबस्त कर दूंगा।

सरला ने उन्हें पहचाना नहीं। मां को वालिया के आने की बिलकुल खबर न थी। वह घर गई थीं। 'नर्स' से बातें कर रहे थे कि अमृत बीमारों के सफेद कपड़े पहने कमरे में आई। दोनों ने एक दूसरे को पहचान लिया। वालिया साहब ने सुबह की सब घटना अमृत को बताई और उसके हाथ में ५०० के नोट देते हुए कहा। 'बेहतर होगा कि आप तार के जरिए होटल को यह रुपया भेज दें, वह चेक वापस आ जायगा।'

अमृत रोती हुई अपने कमरे में चली गई। डाक्टर आ गया और उसने गुरुशरण को बताया कि सरला की 'मैमोरि' (स्मरण शक्ति) उस सदमे से बिलकुल नष्ट हो चुकी है। अब उसे वापस लाने के लिए कोई ऐसी घट- -होनी चाहिए जिससे इनकी याददाश्त फिर जाग उठे। कौन जानता है कौनसी घटना होगी।